राम चमक रहे भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

# श्रमणोपासक

धार्मिक (पाक्षिक)

वर्ष : 58 ● अंक : 11-13 ● 10-11 अक्टूबर, 2020

ISSN 2456-611X

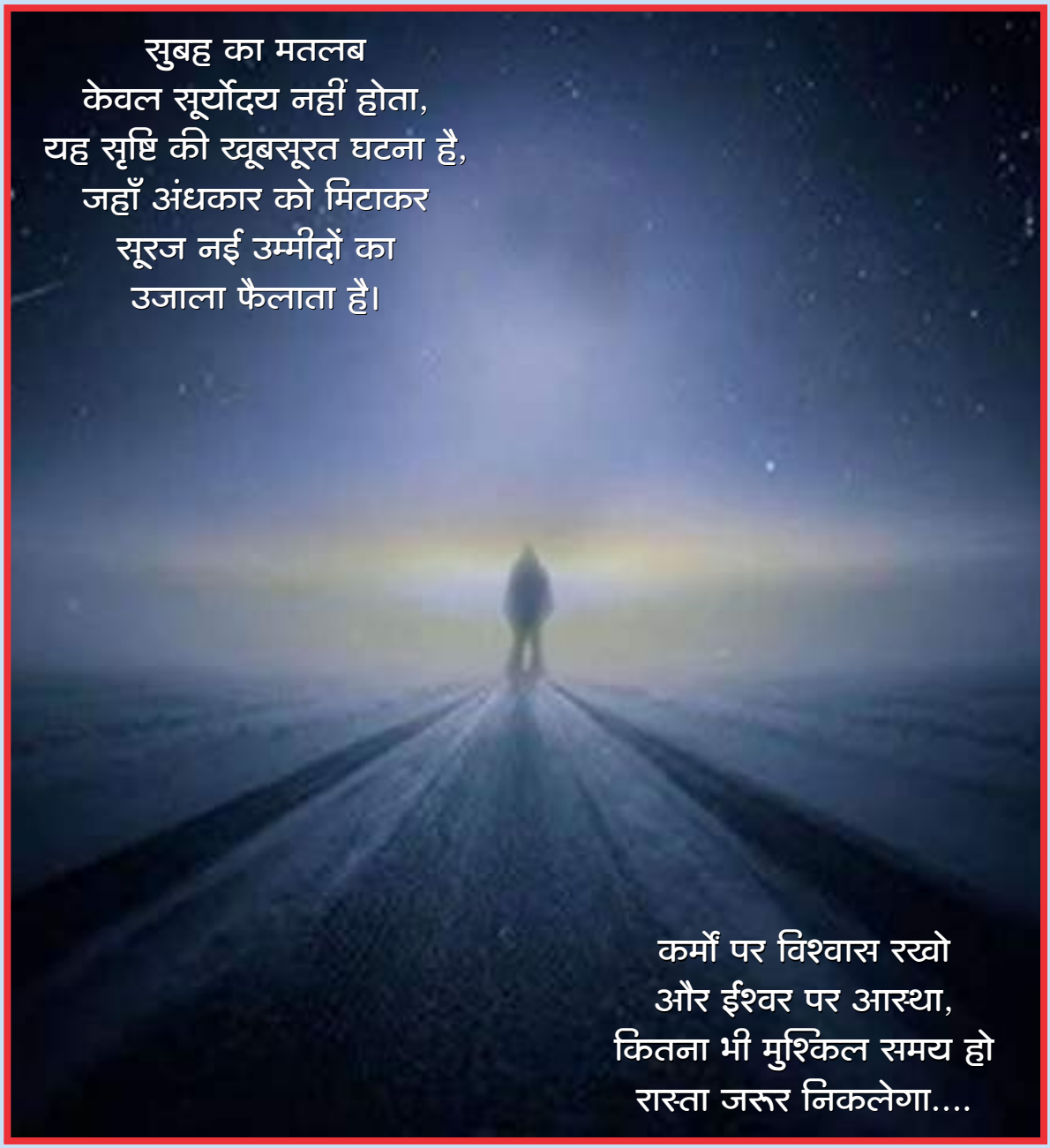

# नमो आयरियाणं

**प्रश्न 1. आचार्य में 36 गुण से अतिरिक्त और क्या विशेषताएँ हो सकती हैं ?**

उत्तर आचार्य में 36 गुणों से अतिरिक्त 'सम्पदाएँ' उनकी विशेषताएँ हैं।

**प्रश्न 2. सम्पदा किसे कहते हैं और वह गणि सम्पदा कितने प्रकार की होती है ?**

उत्तर सम्पदा अर्थात् 'समृद्धि'। गणि सम्पदा आठ प्रकार की होती हैं-

1. आचार सम्पदा 2. श्रुत सम्पदा 3. शरीर सम्पदा 4. वचन सम्पदा
5. वाचना सम्पदा 6. मति सम्पदा 7. प्रयोगमति सम्पदा 8. संग्रह परिज्ञा सम्पदा।

**प्रश्न 3. आचार सम्पदा किसे कहते हैं और इसके कितने भेद हैं ?**

उत्तर चारित्र की विशेष दृढ़ता को आचार सम्पदा कहते हैं। इसके चार भेद हैं-

1. संयमध्रुवयोगयुक्तता- चारित्र में सदा समाधियुक्त होना।
2. असंप्रग्रह- जाति, श्रुत आदि मदों का परिहार।
3. अप्रतिबद्ध विहार- अनियत विहार।
4. वृद्धशीलता- अचंचलता, शरीर और मन की निर्विकारता।

**प्रश्न 4. श्रुत सम्पदा किसे कहते हैं और इसके कितने प्रकार हैं ?**

उत्तर परमार्थ का ज्ञाता होना, शास्त्रों का विशाल ज्ञान होना आचार्य की श्रुत-सम्पदा है। इसके चार प्रकार हैं-

1. बहुश्रुतता- अंग और उपांग में निष्णातता, युगप्रधान पुरुष।
2. परिचितश्रुतता- आगमों में चिरपरिचित होना।
3. विविधश्रुतता- उत्सर्ग, अपवाद, स्वदर्शन और परदर्शन के ज्ञाता।
4. घोषविशुद्धिश्रुतता- उदात्त, अनुदात्तादि स्वरों की विशुद्धि से युक्त सूत्रोच्चारण करने वाले।

**प्रश्न 5. शरीर सम्पदा किस प्रकार की होनी चाहिये ?**

उत्तर शरीर का सुसंगठित और प्रभावशाली होना आचार्य की शरीर सम्पदा है। इसका वर्णन चार प्रकार से किया जा सकता है-

1. आरोहपरिणाहयुक्तता- शरीर की लंबाई-चौड़ाई का प्रमाणयुक्त होना।
2. अनपत्रपना- अलज्जनीय अंग वाला होना अर्थात् सर्वांग होना।
3. परिपूर्ण इन्द्रियता- पाँचों इन्द्रियों की परिपूर्णता।
4. स्थिर संहननता- वज्रऋषभनाराच संहनन से युक्त।

**प्रश्न 6. वचन सम्पदा क्या है और इसके कितने भेद हैं ?**

उत्तर वाक्-कौशलता आचार्य की चौथी वचन सम्पदा है। इसके चार भेद हैं-

1. आदेय वचनता- जिसके वचनों को सभी स्वीकार करते हों।
2. मधुर वचनता- अर्थयुक्त, क्षीराश्रव आदि लब्धियुक्त वचन।
3. अनिश्रित वचन- राग-द्वेष से रहित अर्थात् मध्यस्थ वचन।
4. असंदिग्ध वचन- आसानी से समझ में आने वाला वचन।

# ।।आगमवाणी।।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एगं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सुग्गइं।।1।।

**भावार्थ–** सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप – ये चारों मोक्षमार्ग यानी मोक्ष के उपाय हैं। मोक्ष के इस मार्ग की आराधना कर जीव सुगति प्राप्त करते हैं।

नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चारित्तेण निगिण्हाई, तवेण परिसुज्झइ।।2।।

**भावार्थ–** सम्यग्ज्ञान द्वारा आत्मा जीवादि पदार्थों को जानता है और सम्यग्दर्शन द्वारा उन पर श्रद्धा करता है। चारित्र द्वारा आत्मा नवीन कर्म आने से रोकता है एवं तप द्वारा पुराने कर्मों का नाश कर शुद्ध होता है। (उत्तराध्ययन अ. 28 गाथा 3, 35)

जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ।। 3।।

**भावार्थ–** जब आत्मा जीव और अजीव दोनों को भली भांति जान लेता है तब वह सब जीवों की नानाविध नरक तिर्यंच आदि गतियों को जान लेता है।

जया गइं बहुविहं, सव्व जीवाण जाणइ
तया पुणं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ।।4।।

**भावार्थ–** जब वह सब जीवों की नानाविध गतियों को जान लेता है तब पुण्य, पाप, बन्ध और मोक्ष को भी जान लेता है।

जया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ।
तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुस्से।।5।।

**भावार्थ–** जब वह पुण्य, पाप, बन्ध और मोक्ष को जान लेता है तब देवता और मनुष्य सम्बन्धी समस्त कामभोगों को असार जान कर उनसे विरक्त हो जाता है।

कविता

# भगवान् महावीर स्वामी

स्नेहलता सेठिया

**हस्तिपाल के आठ स्वप्नों का**
**प्रभु ने बतलाया सार सकल**
**प्रथम स्वप्न था मदमस्त हाथी**
**था स्वप्न दूसरा बंदर चंचल**

**रहकर उपवन में करता कपीश**
**फूल फल शाखा को नष्ट**
**उसी तरह गच्छनायक करेंगे**
**रहकर संघ में कर्म भ्रष्ट**

तोड़-फोड़ कर के वानर
करता उद्यान की शोभा विकृत
उच्छृंखल स्वामी वैसे ही
करते शासन की गरिमा खंडित

विचार और व्यवहार का भेद
है इस स्वप्न का अर्थ
पंचम आरे में पदलिप्सा से
होंगे अप्रत्याशित अनर्थ

व्रतधारी के व्रतों पर
होगा अव्रतियों का वार
धर्म समृद्धि होगी किंतु
नहीं धारेंगे जीवन अनगार

पद होगा प्रिय सभी को
आत्मकल्याण को भूलेंगे सब
ज्ञानीजन ऐसे आडंबरियों को
देखकर फिर हंसेंगे तब

प्रदर्शन से दूर रहकर
करें धर्म को आत्मसात्
इस स्वप्न के द्वारा प्रभु ने
जग को समझाई यही बात

करते हैं वंदन प्रभु के चिंतन को
थी दूरदर्शिता उनकी अद्भुत
अपनी अमृतमय वाणी से
किया जगत् को सत्य से अवगत

-बुरहानपुर

परमपूज्य आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
की स्वात्मानुभूति को आकार देते अक्षर

आत्म निर्झर

# दुविधा के बीज बोयें ना

परमपूज्य आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

सुविधाभोगी मानसिकता दुविधा के बीज बोती है। जो भी गुलछर्रे उड़ाने में लगे हुए हैं वे अपने लिए कठिनाइयाँ पैदा कर रहे हैं। सुविधाभोगी व्यक्ति एन्द्रिक सुख-साता के मनोभावों से स्वयं को लिप्त रखता है। यानि वह उसमें रचा-पचा रहता है। शरीर को श्रम नहीं करना पड़े, ऐसी उसकी मन:स्थिति बन जाती है। इससे वह एशो-आराम की जिंदगी जीने का आदी बनता जाता है। वह भूल जाता है कि वह ऐशो-आराम के लिए जिन संसाधनों का उपयोग कर रहा है उनमें कितनी-कितनी जीव हिंसा हो रही है। स्वयं के सुख-साधन के लिए की जाने वाली अनर्थकारी हिंसा, उसे कैसे शुकून दे सकती है। भगवान अरिष्टनेमि ने उनके निमित से होने वाली जीव हिंसा के विषय में फरमाया था कि यह मेरे परलोक, भविष्य के लिए हितकर नहीं होगी।

गृहस्थ को गृहस्थी के कार्यों में हिंसादि करनी पड़ती है किन्तु धर्म के क्षेत्र में जहाँ जीवों पर रहम होना चाहिये, जहाँ मैं भी भाव की प्रधानता होनी चाहिये वहाँ भी सुख-सुविधाभोगी मन:स्थिति नजर आती है तो लगता है पानी में ही आग लग रही है। जो संवर के स्थान हैं वे ही आश्रव के स्थान बनते जा रहे हैं। लाईट, पंखा, ए.सी. आदि पता नहीं कौन-कौन से साधन उपयोग में लिये जा रहे हैं। ऊपर पंखा चल रहा है नीचे मुँहपत्ती बांधकर पूंजनी हाथ में रखकर सामायिक की जा रही है। क्या हास्यास्पद स्थिति नहीं है? इससे भी आगे जब संत-महात्मा भी इन हिंसाकारी संसाधनों का बेहिचक उपयोग करते दृष्टिगत होते हैं तब तो वाणी मूक हो जाती है, हाथ-पांव सुन्न हो जाते हैं। कहाँ गई वह प्रतिज्ञा जिसमें वह कहता है- **से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाइज्जा...** क्या यह प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई। क्या मोबाइल, लेपटॉप आदि साधन साधुओं के उपकरण हैं। क्या इनके बिना साधु जीवन जीया नहीं सकता ? पर ये सारे प्रश्न मन में ही उमड़-घुमड़ कर रह जाते हैं। श्रावक बेचारा दो पाटों में पिसता जा रहा है। वह क्या करे, क्या न करे? उसे सूझ ही नहीं रहा है। मौज उड़ाने में मस्त हैं, उन्हें फिक्र नहीं है। वे फिक्र करें भी क्यों? पर ये मौज ज्यादा दिन चलने वाली नहीं है। यह उन्हें समझ लेना चाहिये।

बोरीवली (मुम्बई)
18 नवम्बर, 2016
मिगसर कृष्णा 5 शुक्रवार

कविता

# तुम चरणों में गुरुवर के

-संध्या धाड़ीवाल

गुरु दर्शन से वंचित, जब मन अकुलाया
जोधपुर की माटी के नाम,
एक खत भिजवाया।
चरण कमल जब पड़े गुरुवर के,
ओ! जोधपुर की पावन माटी,
तुम्हारे शीश पे,
लिपट जाना तुम चरणों में गुरुवर के,
मृदु शब्दों में मेरा संदेश सुनाना,
दर्शन के प्यासे नैनों की,
तुम व्यथा उन्हें सुनाना...।
कहना... उनसे...

लगी प्यास दर्शन की गुरुवर,
लगी प्यास दर्शन की !
दर्श बिना रहा न जाए गुरुवर
अब कुछ सहा न जाए,
ज्यों जल बिन मीन प्यासी गुरुवर
वैसी प्यास सताए।
एक-एक दिन करके गुरुवर,
चौमासा बीता जाए...,
लगी प्यास दर्शन की!!!
गुरुवर लगी प्यास दर्शन की।

व्यथा सुनकर भक्तों के मन की,
गुरु आशीर्वाद की होगी बौछार,
भीग जाना तुम उन पीयूष बौछारों से,
और फिर बादल बन आ जाना मेरे गाँव।
बरसा जाना गुरु आशीषों का अमृत,
उस सुधारस से तृप्त होगा हर मन,
गुरु आशीष बहेगा निर्झर बन
मूंदकर नैनों को, झुकाकर पलकों को,
कहेगा फिर हर मन...

ओझल नहीं नजरों से गुरुवर,
हो अंतर्मन में आप,
दिखती बंद आँखों से मूरत आपकी,
बुझ जाती है प्यास।
जल्दी ही होंगे दर्श आपके,
जाग जाता विश्वास
गुरुवर जाग जाता विश्वास।

और फिर होगा साक्षात् जैसे
गुरु को वंदन...
शत शत वंदन!!!

-रायपुर


यदि कोई उपाय न हो तो दु:खी होने की बजाय हमें तटस्थ हो जाना चाहिये।

# सम्प्रदाय की सुव्यवस्था

गतांक से आगे...

रतलाम चातुर्मास (सं. 1971) में **पूज्य श्री श्रीलालजी म.सा.** के पधारने से रतलाम में आनदोत्सव हो रहा था। व्याख्यान में मंडलियाँ की मंडलियाँ आने लगी थीं। श्री पंचेड़ ठाकुर साहब पंचेड़ा से खास पधारकर व्याख्यान का लाभ उठाते थे। उपरांत राजकर्मचारीगण इत्यादि तथा हिन्दू-मुसलमान बडी संख्या में व्याख्यान श्रवण करते और उसके फलस्वरूप रतलाम में अवर्णनीय उपकार हुए। त्याग-प्रत्याख्यान स्कंध तपश्चर्या इत्यादि बहुत हुई।

इस मुताबिक चातुर्मास बहुत शांतिपूर्वक व्यतीत हुआ, परन्तु वेदनीय कर्म की प्रबलता से कार्तिक शुक्ला 10 के रोज पूज्यश्री के पांव में एकाएक दर्द बढ़ गया। इसलिए मिगसर बदी 1 के रोज पूज्यश्री विहार न कर सके, जिससे श्रीजी के दिल में ऐसा विचार हुआ कि मेरा शरीर पग की व्याधि के कारण विहार करने में असमर्थ है। अत: सम्प्रदाय के संख्याबद्ध संतों की संभाल जैसी चाहिये वैसी नहीं हो सकेगी और एक आचार्य को उनकी संभाल से शुद्ध संयम पलाने की पूरी आवश्यकता है। इसलिए सम्प्रदाय को चार विभागों में विभक्त कर योग्य संतों को उनकी योग्यतानुसार अधिकार देना चाहिये। ऐसा विचार कर पूज्यश्री ने सम्प्रदाय की सुव्यवस्था करने का यथोचित् प्रबन्ध करना ठहराया। थोड़े दिन तो पूज्यश्री के पांव में इतनी अधिक प्रबल वेदना हुई कि तनिक भी चलने-फिरने की शक्ति न रही। उत्तम पुरुषों की आपत्ति चिरकाल तक नहीं रह सकती, इस न्यायानुसार थोड़े ही दिन में आराम होने लग गया। पग में दर्द तो अत्यन्त था, परन्तु पूज्यश्री की सहनशीलता जबरदस्त होने से वे वेदना को बहुत थोड़ी वेदते थे। दि. 15-11-1914 के रोज श्रीजी महाराज वेदना को नहीं गिनते हुए धीमे पांव से चलकर व्याख्यान में पधारे। श्रीजी के दर्शन कर श्रावकों के आनंद की सीमा न रही। उस समय श्रीजी महाराज ने व्याख्यान में फरमाया कि मेरा विचार है कि सम्प्रदाय के संतों की सार-संभाल तथा उन्नति करना, उन्हें योग्य उपालंभ या धन्यवाद देना तथा संयम में सहायता देना इत्यादि आवश्यक काम सम्प्रदाय के योग्य संतों के सुपुर्द कर दूं।

पश्चात् श्रीजी महाराज की आज्ञा से तथा रतलाम श्रीसंघ व जावरा से पधारे कितने ही अग्रेसर श्रावकों की सम्मति से श्री मिश्रीमलजी बोराना वकील ने आचार्यश्री के हुक्म मुताबिक तैयार किया हुआ ठहराव उच्च स्वर में परिषद् में पढ़कर सुनाया, जो निम्नांकित हैं-

### ठहराव की अक्षरश: प्रतिलिपि

श्री जैनदया धर्मावलम्बी पूज्य श्री स्वामीजी महाराजश्री श्री 1008 हुक्मीचंदजी महाराज के पाँचवें पाट पर **जैनाचार्य पूज्य महाराजाधिराजश्री श्री 1008 श्री श्रीलालजी महाराज वर्तमान में विद्यमान हैं,** उनके आज्ञानुयायी गच्छ के साधु एक सौ झाझेरा के करीब हैं उनकी आज तक शास्त्र व परम्परायुक्त सार संभाल आचार गोचरी वगैरह की निगरानी यथाविधि, पूज्य श्री करते हैं, परंतु पूज्य महाराज के शरीर में व्याधि के कारण, संत मुनिराजों की सार संभाल व हिफाजत के वास्ते योग्य संतों को मुकर्रर कर प्राय: कर तालुक संतों को इस तरह सुपुर्दगी कर दिये हैं कि वह अग्रेसरी संत अपने गण की संभाल सब तरह से रखें और कोई गण की किसी तरह की गलती हो तो ओलम्भा वगैरह देकर, शुद्ध करने की कार्यवाही का इंतजाम करें। फक्त कोई बड़ा दोष होवे और उसकी खबर पूज्य महाराज श्री को पहुंचे तो पूज्य श्री को उसका निकाल करने का अख्तियार है सिवाय इसके जो जो अग्रेसरी हैं वे थोक आज्ञा चातुर्मासादिक की पूज्य महाराजश्री से अवसर पाकर ले लेवें।

इसके सिवाय जो कोई संत निचले के गणों से सबब पाकर नाराज होकर पूज्य श्री के समीप आवे तो पूज्य महाराजश्री को जैसी योग्य कार्यवाही मालूम

गुरु राम


यदि सारी पृथ्वी पर कांटे बिखरे हों तो भला इसी में है कि हम अपने पैरों में जूते-चप्पल पहन लें।

होवे वैसी करें। अख्तियार पूज्य महाराजश्री को है और पूज्य महाराजश्री को कोई संत चला जावे तो वे अग्रेसर बिना पूज्य महाराजश्री के उससे संयोग न करें। इसके सिवाय आचार गोचर श्रद्धा प्ररूपणा की गति है, वह गच्छ की परम्परा मुताबिक सर्वगण प्रतिपालन करते रहें।

1. यह ठहराव शहर रतलाम में पूज्य महाराजश्री के मर्जी के अनुकूल हुआ है, सो सब संघ को इसका अमलदरामद रखना चाहिये। गणों के अग्रेसरों की खुलावट नीचे मुताबिक है। पूज्य महाराज के हस्त दीक्षित अथवा खास सेवा करने वालों की सार संभाल पूज्य महाराजश्री करेंगे।
2. वर्तमान में श्री कस्तूरचंदजी महाराज एवं उस परिवार के संतगण की सार संभाल की सुपुर्दगी स्वामीजी श्री मुन्नालालजी महाराज की रहे।
3. श्रीचन्दजी महाराज के निश्राय के संतों की सुपुर्दगी श्री देवीलालजी महाराज की रहे।
4. पूज्य श्री चौथमलजी महाराज साहब के परिवार के संतों की सुपुर्दगी श्री डालचंदजी महाराज की रहे।
5. श्री घासीरामजी महाराज के परिवार में जवाहिरलालजी सार संभाल करें।

ऊपर प्रमाणे गण पांच की सुपुर्दगी अग्रेसरी मुनिराजों को हुई है सा अपने संतों की सार संभाल व उनका निभाव करते रहें। यह ठहराव पूज्य महाराजश्री के सामने उनकी राय मुताबिक हुआ है सो सब संघ मंजूर कर के इस मुताबिक बर्ताव करें। उपरोक्त ठहराव सुनकर श्रीसंघ में हर्षोत्साह की अधिक वृद्धि हुई थी। उस समय रतलाम में मुनिराज ठाणा 25 तथा आर्याजी ठाणा 60 के करीब विराजमान थे। इस चातुर्मास में श्वे. मूर्तिपूजक जैनों के अग्रेसर सुप्रसिद्ध साहिब सेठ केसरीसिंहजी कोटावाला एवं कई मंदिरमार्गी भाई आते थे और प्रश्नोत्तर तथा चर्चा वार्ता कर आनंद पाते थे।

पूज्यश्री के पाँव में कुछ आराम हुआ, तो वे मार्गशिर शुक्ला यूं के रोज, रतलाम से विहार कर जावरा पधारे। उस विहार के समय इस पुस्तक का लेखक उपस्थित था। संख्याबद्ध श्रावक वहाँ दर्शनार्थ पधारे थे। सुबह का उपदेश श्रवण करने के लिए, रातभर श्रद्धा स्थान में, रात की ठंड में, आनंद से निद्रा लेते यह दृश्य देख अश्रुओं से मेरे नेत्र भीग गए। तुरंत वकील मिश्रीलालजी, शरियों में सोई हुई कतार को जाजमों से ढक ठंड से संरक्षा की थी।

**-क्रमशः**

# सामायिक

ज्ञान

-रतनलाल व्यास, कानोड़

**सब सूत्रों में श्रेष्ठ है, सामायिक को जान, नैतिक धार्मिकता बढ़े, मिटे क्लेश अभिमान।**
**मिटे क्लेश अभिमान, सिखाये स्तवन वंदना, आत्मतुल्य व्यवहार, कर हे जन! आराधना।**
**कहे रतन कविराय, हो गुणों की वृद्धि जब, आचरण तू नितलाय, पाप हरेगा वह ही सब।**

**भावार्थ :-** सब सूत्रों में सामायिक सूत्र को अति श्रेष्ठ माना गया है। इसकी आराधना करने से प्राणीमात्र के क्लेश व अभिमान मिटते हैं। राग-द्वेष के वश न होकर समभाव में रहना अर्थात् किसी प्राणी को दुःख न पहुंचाते हुए सबके साथ आत्मतुल्य व्यवहार करना एवं आत्मा में ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि गुणों की वृद्धि करना यही सामायिक है। कवि 'रतन' का कहना है कि हे पुण्यवान! यदि तू इस को आचरण में लायेगा तभी तेरे हृदय में गुणों की वृद्धि होगी और समस्त पूर्व जन्म के पाप नष्ट होंगे।

# सूचना

श्रमणोपासक का नवम्बर-दिसम्बर 2020 का अंक **''जैन का सहयोग अपने राष्ट्र के लिए इस कोरोना काल में''** विषय पर आधारित होगा। सुधी पाठकों से निवेदन है कि इस विषय संदर्भित अपनी रचनाएँ- कविता, लेख, संस्मरण आदि अतिशीघ्र ही मो. नं. 9819998298 पर भिजवाने का कष्ट करें।

-सम्पादक

गुरु राम

# संतान पर माता-पिता का ऋण

– परमपूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.

धन धन जनक 'सिद्धार्थ 'राजा,
धन 'त्रिशला दे' मात रे प्राणी;
ज्यों सुत जायो ने गोद खिलायो,
वर्धमान विख्यात रे प्राणी।
श्री महावीर नमो वरनाणी ।। 1 ।।

**प्रार्थना–** यह भगवान् महावीर स्वामी की स्तुति की गई है। परमात्मा की स्तुति करते हुए आत्मा को मुख्यत: किन तत्त्वों का विचार करना चाहिए इस विषय पर कई बार चर्चा की जा चुकी है। किन्तु आज भी कुछ इस विषय में कहना चाहता हूं।

परमात्मा की प्रार्थना करते वक्त मुख्यत: आत्मतत्त्व पर विचार करना चाहिए। संसार में द्रव्य और पर्याय दोनों देखे जाते हैं। पर्याय का मूलभूत आधार द्रव्य है। द्रव्य न हो तो पर्याय किसकी बनें? **सोने के दागीने सब कोई देखते हैं किन्तु सोना न हो तो दागीने कहां से बने? सोना द्रव्य है और दागीने उसकी पर्याय हैं। किन्तु आजकल लोग द्रव्य को तो भूल गये हैं केवल पर्यायों को पकड़ रखा है। यह लोगों की गंभीर भूल है।** केवल पर्यायों को न पकड़े रहो पर द्रव्य को भी देखो। द्रव्य और पर्याय कदाचित् भिन्न-भिन्न हैं।

जिस प्रकार सोना एक है किन्तु उसके जेवर अनेक प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार चेतन तत्त्व का एक ही प्रकार है किन्तु उसकी पर्यायें- चराचर योनियां अनेक प्रकार की हैं। चैतन्य गुण की तरफ देखिये, अनेक प्रकार के शरीरों में मत फंसिये। अपनो आप विषय थिर आतम सोई हंस कहाय रे प्राणी।

**द्रव्यरूप जीवात्मा को देखने से विषय स्थिर हो जायेंगे, और फिर आत्मा सोई हंस कहा जायेगा। जिसे योगी लोग अनलहक भी कहते हैं। सोहं का अर्थ यह है कि जैसा तू है वैसा ही मैं हूं और हंस का अर्थ यह है कि जैसा मैं हूं वैसा ही तू है, यानी मैं वही हूं, परमात्मा हूं, शुद्ध स्वरूप हूं। अनहलक का अर्थ है मैं खुदा हूं।** जो आत्मा की मूलसत्ता पर विचार करता है वह किसी से द्वेष और किसी पर राग कैसे कर सकता है? तत्त्व ज्ञान का विचार करना ज्ञान मार्ग है।

अनाथी मुनि राजा श्रेणिक को बता रहे हैं कि राजन्! जो व्यक्ति द्रव्यदृष्टि को मुख्य बना लेता है वह सनाथ है। अर्थात् जो शरीर रूप पर्याय पर अधिकाधिक ध्यान लगाता है और आत्मा रूप द्रव्य का खयाल ही नहीं करता वह अनाथ नहीं तो और क्या होगा? वह अपने शरीर का गुलाम होगा।

कथानकों में ऐसा भी सुना जाता है कि अनाथी मुनि का पिता इब्भ सेठ था। इब्भ सेठ तीन प्रकार के होते हैं- उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ। जिसके पास खड़े हुए एक हाथी को रुपयों से ढांक देने जितना धन हो वह कनिष्ठ इब्भ कहा जाता है। जिसके पास मुहरों से हाथी को ढांक देने जितना धन हो वह उत्तम इब्भ सेठ कहा जाता है। अनाथी मुनि के पिता के पास सत्तावन इब्भ धन था। यह सब धन वह अपने पुत्र को पीड़ा मुक्त कर देनेवाले को देने के लिए तैयार था। किन्तु फिर भी रोग मुक्त करने में समर्थ न हुआ।

राजन्! तू अपने को सम्पत्ति के कारण नाथ मानता है किन्तु मेरे पिता के पास सम्पत्ति की कमी न थी फिर भी मैं अनाथ था। तो तू सम्पत्ति के कारण नाथ कैसे कहा जा सकता है? जब तू अपना ही नाथ नहीं है तो दूसरों का नाथ कैसे बन सकता है?

राजन्! मेरे माता भी थी। वैसे तो माता सब के होती है मगर कइयों की तो जब वे गर्भ में होते हैं तभी मर जाती है। और माँ का पेट चीरकर उनको बाहर निकाला जाता है। वे मातृस्नेह से सर्वथा वंचित होते हैं।

गुरु राम



श्रावक! तू पूरे विश्व का विरल है, तू विशेष है।

उनके लिए माता का होना क्या काम आया? लेकिन मेरी माता मौजूद थी और मुझ से बहुत स्नेह भी करती थी। मैंने दीक्षा अंगीकार की तब तक मेरी माता मौजूद थी। मेरी मां ने मेरा बड़े प्रेम से लालन-पालन किया था। मेरा विवाह भी बड़े हर्ष से किया। किन्तु जब मुझे रोग हो गया तब वह बड़ी दु:खी हुई। वह रात-दिन मुझे रोगमुक्त करने के लिए बड़ी चिन्तित रहती थी। लेकिन मेरा दु:ख न मिटा सकी यही मेरी अनाथता है।

कई-कई माताएं ऐसी भी होती हैं जो अपने ऐशोआराम के लिए पुत्र की परवाह नहीं करतीं। अपने दुराचार के लिए पुत्र को मारकर या जिन्दा गाड़ देने की बातें सुनी गई हैं।

ग्रन्थों में कथा है कि ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की माता ने जब गर्भ में था चौदह स्वप्न देखे थे। स्वप्नों के कारण वह जान गई थी कि उसका पुत्र चक्रवर्ती होगा। फिर भी दीर्घराजा के साथ भ्रष्ट हो जाने से उसने अपने पुत्र ब्रह्मदत्त को मार डालने का विचार व प्रयत्न तक किया था। उसने सोचा पुत्र बड़ा हो गया है अत: मेरी कामवासना की पूर्ति में बाधक होगा। इसलिए उसने एक लाक्षागृह बनवाया। उसमें ब्रह्मदत्त को सुला दिया और रात के समय स्वयं ही उसमें जाकर आग लगा दी। यह तो ब्रह्मदत्त के पूर्वकृत पुण्य का फल था कि प्रधान की होशियारी से वह बचा लिया गया। किन्तु उसकी माता ने तो उसे मार डालने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी थी।

राजन्! मेरी माता कहती है कि यदि कोई सामने आकर तेरे शरीर में भाला घौंपता तो मैं बीच पड़कर भाला अपने शरीर पर झेल लेती और तुझे बचा देती। किन्तु तेरी यह पीड़ा भीतरी हैं इसको मैं किस प्रकार मिटाऊँ? तेरी पीड़ा देखकर मैं दु:खी हूं। मगर उसे दूर करने में मैं कतई लाचार हूं। राजन्! यही मेरी अनाथता है।

अनाथी मुनि के कथन का कोई यह अर्थ न लगा ले कि जब माता-पिता हमारा दु:ख-दर्द दूर नहीं कर सकते तो उनको मानने और सेवा-शुश्रूषा करने की क्या जरूरत है। और न यह अर्थ लगाना चाहिए कि जब कोई किसी का दु:ख-दर्द मिटा ही नहीं सकता तो उसकी सेवा-शुश्रूषा या रोग मिटाने का उपाय करना एकान्त पाप का कारण है।

थली मारवाड़ में एक सम्प्रदाय ऐसा भी है जो माता-पिता के लिए पुत्र को और पुत्र के लिए माता-पिता को कुपात्र बताता है। माता-पिता द्वारा पुत्र का पालन पोषण और संरक्षण करना तथा पुत्र द्वारा माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा करना वह सम्प्रदाय सर्वथा पाप मानता व बताता है। अपनी इस मान्यता की पुष्टि में अन्य उदाहरणों के सिवा वह अनाथी मुनि का भी उदाहरण पेश करता है। वह कहता है कि देखो, अनाथी मुनि का दु:ख व रोग कोई नहीं मिटा सके अत: रोगी की सेवा करना एकान्त पापकर्म के बंध का कारण है। लेकिन यह कथन किस प्रकार अनुचित और शास्त्र विरुद्ध है यह बात एक उदाहरण देकर कहता हूं जिससे आपकी समझ में शीघ्र आ सके।

एक माता अपने पुत्र से कहती है कि **पुत्र! अब तू पढ़-लिखकर होशियार हो गया है। मैं तो आशा लगाये बैठी थी कि तू बड़ा होकर मेरी सेवा करेगा। किन्तु तू तो सेवा के बजाय मुझे कष्ट देता है।**

पुत्र अपनी माता को जवाब देता है कि बस मां! तू अपने अज्ञान के कारण ऐसा कहती है कि मुझ पर तेरा उपकार है। बल्कि मेरा तुझ पर उपकार है। जब मेरा जन्म न हुआ था तब तू संतान के लिए कितना विलाप करती और दु:खी होती थी। जब मैं पेट में आया तब तेरा बांझपने का दोष मिटा और तेरी इज्जत बढ़ी। तुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और सुखी हुई। तुम पति-पत्नी मौज करने में लगे हुए थे कि मैं पेट में आ गया। जब मेरा जन्म हुआ तब भी तुमने बड़ा उत्सव मनाया और आनन्दानुभव किया। जब कुछ बड़ा हुआ तब मुझसे लाड़-प्यार करके, मुझे खेलाकर और मेरा चुंबन लेकर तुमने बहुत आनन्द उठाया है। जब शादी के लायक हो गया तब मेरी शादी करके सगे-सम्बन्धियों और गाम में बड़ा लाव्हा लिया था। अगर मैं न होता तो तुझे इतना सुख कहां से प्राप्त होता? अब तू ही बता माँ, कि मेरा तुझ पर उपकार है या तेरा मुझ पर? इसलिए मां, अब तू बड़बड़ाना छोड़ दे और जैसा मैं कहूं, किया कर।

गुरु राम



श्रावक! तू पूरे विश्व का विरल है, तू विशेष है।

मां ने कहा- बेटा! हम लोग आपस में क्यों जिद करें। हम गुरुजी के पास चलते हैं। अगर वे कह देंगे कि शास्त्रानुसार पुत्र का माता-पिता पर उपकार है तो मैं तेरे जुल्म सहन करती रहूंगी और तेरी सेवा करती रहूंगी। और यदि वे कह देंगे कि पुत्र पर माता-पिता का उपकार है तो तुझे मेरी सेवा करनी पड़ेगी।

लड़के ने सोचा कि यह बात ठीक है। क्योंकि शास्त्र में तो मैंने सुना है कि कोई किसी का दुख-दर्द मिटा नहीं सकता। जब कोई किसी का दु:ख-दर्द मिटा नहीं सकता, तो सेवा करना धर्म कैसे होगा, इसमें गुरुजी क्या बतलायेंगे। चल मां, गुरुजी के पास चलें।

बन्धुओ! उस समय यदि वो किसी ऐसे गुरु के पास पहुंच जाती जो माता-पिता की सेवा करने में एकान्त पाप होने की प्ररूपणा करते हैं और माता-पिता को कुपात्र बताते हैं, तो उस बेचारी पर संकट का पहाड़ आ पड़ता और उसका लड़का उस पर हावी हो जाता। किन्तु सौभाग्य से वह ऐसे गुरु के पास पहुंची जो भगवान् महावीर के प्ररूपित शास्त्र के जानकार थे। जिन महावीर ने अपनी हलनचलन से माता को तकलीफ न हो इस भावना से गर्भावस्था में हलनचलन बन्द कर दी थी।

माता ने गुरुजी से पूछा कि महाराज! अभी तक मैं सुनती आई हूं कि पुत्र पर माता-पिता का अनन्त उपकार है। किन्तु मेरा बेटा कहता है कि पुत्र का माता-पिता पर उपकार है! आप कृपया शास्त्र देखकर सच्ची बात बताइये।

पुत्र ने गुरुजी से कहा- **महाराज! आप सोच समझकर निर्णय दें। उत्तराध्ययनसूत्र के बीसवें अध्ययन में अनाथी मुनि के अधिकार में स्पष्ट बताया हुआ है कि माता-पिता, स्त्री आदि कोई भी संबंधी अनाथी मुनि की वेदना मिटाने में समर्थ न हो सके थे, कोई भी मुनि की रक्षा न कर सके थे। इसलिए माता-पिता आदि की सेवा करना एकान्त पाप है, भौंठी छुरी को पैनी बनाना है। शास्त्र में स्पष्ट कह रखा है कि मां-बाप आदि कोई कल्याण नहीं कर सकते, केवल साधु ही कल्याण कर सकते हैं। अत: सोच के निर्णय दें।**

लड़के का कथन सुनकर गुरुजी समझ गए कि यह भ्रम में है। गुरुजी ने कहा- भगवती सूत्र में भगवान महावीर ने कहा है कि मनुष्य के शरीर में तीन अंग माता के होते है और तीन पिता के। बाकी के अंग दोनों के भिन्न होते हैं। मांस, रुधिर और मस्तक मातृ अंग हैं और हाड़, मज्जा और रोम पितृ अंग हैं। लौकिक में भी कहावत है कि मेरी मां का माथा, तेरे बाप के हाथ। अगर माता उच्च विचारशील होगी तो पुत्र का मस्तक भी विचारवान् होगा। पिता के हाड़ मजबूत होंगे तो पुत्र भी बलिष्ठ होगा। जो-जो शूद्र प्रधान अंग हैं वे पिता के हैं। वैद्यक शास्त्र में भी कहा है कि माता पिता के रजवीर्य से संतान का शरीर बनता है। आधुनिक वैज्ञानिक भी ऐसा ही मानते हैं।

गुरुजी ने बताया कि ठाणांग सूत्र में भगवान् महावीर ने स्वयं प्रेरणा से श्रमण निर्ग्रंथ साधुओं को संबोधित करके कहा है कि आयुष्मान् श्रमणो! माता-पिता, सहायता देने वाले और धर्म में स्थिर करने वाले धर्म गुरु का उपकार बहुत बड़ा है। इनसे उऋण होना कठिन है। किन्तु शास्त्रों में मैंने ऐसा कहीं नहीं देखा कि पुत्र का माता-पिता पर उपकार है।

ठाणांग सूत्र में ही कहा है कि यदि पुत्र प्रतिदिन अपने माता-पिता को नहलाता है, अच्छा खाना खिलाता है, अच्छे वस्त्र पहनाता है और अपने कंधे पर उनको उठाये फिरता है तो भी उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकता। आप लोग कहेंगे कि इससे अधिक एक पुत्र अपने माँ-बाप के लिए और क्या कर सकता है। जो इतने पर भी उऋण नहीं होता।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि जब इतनी सेवा करने पर भी पुत्र माता-पिता से ऋण मुक्त नहीं हो सकता तब ऋण मुक्त होने का कोई मार्ग है भी या नहीं। माता-पिता आदि से ऋण मुक्त होने का मार्ग है और वह है उनको धर्ममार्ग पर लगाना। जिस उपादान कारण से तुम पिता-पुत्र के संबंध से बंधे हो और जिससे प्रेरित होकर तुम्हारा पालन-पोषण किया गया है। उस उपादान कारण स्वरूप धर्म का बोध देने से ऋण मुक्त हो सकते हो। माता-पिता को धर्ममार्ग में स्थिर करने से, उनको धर्म प्राप्ति का लाभ कराने से और उनके आत्मसुधार में मद्द करने से पुत्र ऋण मुक्त हो सकता है।

गुरु राम



श्रावक! तू पूरे विश्व का विरल है, तू विशेष है।

सारांश यह है कि निश्चय दृष्टि से तो माता-पिता, पुत्र के और पुत्र, माता-पिता का नाथ होने में असमर्थ है। किन्तु ऐसा वही कह सकता है जो अनाथी मुनि की तरह बन चुका हो। जिसने अनाथी के समान संसार त्याग दिया है। जिसने अभी स्त्री व बच्चों को तो त्यागा नहीं है केवल माता-पिता की सेवा का त्याग करता है उसने धर्म का स्वरूप ही नहीं समझा है।

यह तो पुत्र का माता-पिता के प्रति कर्तव्य बताया गया है। अब माता-पिता का कर्तव्य है कि वे पुत्र की सपूती-कपूती का खयाल न करके अपना फर्ज अदा करें। पुत्र का फर्ज पुत्र के पास रहा और माता-पिता का फर्ज माता-पिता के पास रहा। अगर एक अपना फर्ज अदा करना छोड़ दे। माँ-बाप अपने धर्म पर दृढ़ रहें। अगर बेल अच्छी होगी तो फल भी अच्छे होंगे। माता-पिता संतान का सुधार कर सकते हैं और बिगाड़ भी। छः-छः मास के बच्चों को बूट पहनाकर माँ-बाप प्रसन्न होते हैं! उन्हें फैशनेबुल कपड़े पहनाकर शौकीन बना देते हैं। अगर माता-पिता अपने पुत्र को धर्ममार्ग पर लगाने की कोशिश करते हैं तो वे अपना पूरा फर्ज अदा करते हैं।

जब आत्मा जागृत होती है तब संसार के सब साधन जागृति प्रदान करने वाले हो जाते हैं। जैसे अन्न, जल और वस्त्र पापी और धर्मी दोनों के उपयोग में आते हैं किन्तु पापी का पाप बढ़ाते हैं और धर्मी का धर्म। अपनी आत्मा जब धर्म में लगी रहती है तब संसार का कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो धर्म में मदद न देता हो। ●●●

सच्ची घटना

# मातृ-पितृ ऋण

कैलाश गिरी ब्रह्मचारी ने कहा कि बहुत वर्षों पहले मेरी माँ कीर्तिदेवी ने चार धामों की यात्रा पर जाने की ईच्छा व्यक्त की। चार धाम भारत में हिन्दुओं के लिए सबसे पवित्र धार्मिक स्थल हैं।

इस व्यक्ति ने बिना एक पल भी गंवाए अपनी माता कीर्तिदेवी की इस ईच्छा को पूरा करने का निश्चय किया। उस समय उसे 20वां वर्ष चल रहा था। अभी वह 50 वर्ष के करीब है और उसने 36,000 किमी. की यात्रा पूर्ण कर ली है।

वे बताते हैं कि- जब मैं लगभग आठ साल का था तो मैं एक पेड़ से गिर गया और मेरे फ्रैक्चर हो गया। वित्तीय कठिनाइयों के कारण महंगा इलाज संभव नहीं था। मेरी माँ ने मेरे ठीक होने के लिए प्रार्थना की और मैं जल्दी से ठीक हो गया बिना किसी दवा के। वह किन्हीं कारणों से अपना संकल्प पूर्ण नहीं कर सकी, लेकिन जब मैं 24 साल का हो गया तो मैं अपनी माँ को उन धार्मिक स्थानों पर ले जाने लगा।

बहुत कुछ श्रवण कुमार की तरह, जिनकी कहानी रामायण से प्रसिद्ध है, कैलाश भी अपनी माँ को अपने कंधे पर लादे एक डबल बास्केट में ले जाते हैं। उनकी माँ एक टोकरी में बैठती हैं, तो कैलाश वजन को संतुलित करने के लिए अपने सभी कपड़े, बर्तन और अन्य भारी-भरकम सामान दूसरी टोकरी में रखते हैं। वह हर दिन चार से पांच किमी. चलता है। कैलाश अपने दिन की शुरुआत सुबह 6.30 बजे करता है। दोपहर में आराम करता है और जब सूरज की गर्मी कम हो जाती है तब फिर से चलता है। माँ और बेटा फिर रात को किसी सड़क किनारे विश्राम करते हैं। ●●●

गुरु राम

# हमारी बांह दृढ़ गहिये!!

–परमपूज्य आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा.

कुन्थु जिनराज तू ऐसो,
नहीं कोई देवतो जैसो।
त्रिलोकीनाथ, तू कहिये,
हमारी बांह दृढ़ गहिये।

भारत की यह सांस्कृतिक परम्परा रही है कि यहां के लोक–जीवन व उससे सम्बन्ध रखने वाली विभिन्न धार्मिक पद्धतियों में भी भक्तिमार्ग को उनसे अधिक महत्त्व दिया गया है, और इस मार्ग के अनुपालन का कुछ विशेष रहस्य भी है। ईश्वर की भक्ति का यह प्रयोजन नहीं कि वह उससे हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर दे या अन्य प्रकार का कोई प्रत्यक्ष सहयोग दे। मनुष्य के हृदय में जब तरलता का प्रवाह हिलोरें लेने लगता है कि अपने जीवन का उबार ले, तो उसी तरलता का नाम भक्ति है। भक्ति में मन की सारी आस्था, श्रद्धा और निष्ठा केन्द्रित हो जाती है। उस केन्द्रीकरण के वातावरण में जब ईश्वर के रूप का स्मरण किया जाता है कि किस प्रकार एक साधारण आत्मा ने विकास सोपान पर निरन्तर गति करते हुए चरम विकासावस्था– ईश्वरत्व को प्राप्त किया है तो भक्त के चित्त में भी उस महान् पथ पर चलने की प्रेरणा पैदा होती है।

यही प्रेरणा कवि विनयचंदजी के हृदय में एकनिष्ठ बनकर उनके उद्गारों में फूट पड़ी है कि– हे कुन्थू जिनराज, तेरे जैसा और कोई देव नहीं है, तू तीनों लोकों का स्वामी है, इसलिए अन्य किसी से क्या कहूं– तेरे से ही निवेदन है, इस संसार सागर में डूबते हुए हमारी बांह इतनी मजबूती से पकड़ो कि हम पार उतर जायें!!

ईश्वर की इस भावुक भक्ति में दुहरा लाभ प्राप्त होता है। एक ओर तो उन महापुरुष के विशाल एवं भव्य आदर्शों पर विचार करते हुए उनसे मनुष्य का हृदय अनुप्राणित होता है, उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने की दृढ़ धारणा बनाता है तो दूसरी ओर उनके दिव्य जीवन के समक्ष वह अपने जीवन की लाघवता अनुभव करता है। अपने अहं को नम्रता व शिष्टता में बदल देता है। इस प्रकार भक्ति प्रेरणा और सरलता दोनों की जननी है। भक्ति की भावना से आन्दोलित हृदय सांसारिक विकारों के कीचड़ से निकलने के लिए छटपटाता है और भावना के मुक्त वातावरण में अपना स्थान बनाने लगता है।

कवि विनयचंदजी भी तो अपने आपको उबारने के लिए मजबूती से बांह पकड़ने की प्रार्थना करते हैं, किन्तु उनके इस कथन में यह तर्क पैदा हो सकता है कि क्या परमात्मा बांह पकड़ कर उबारेगा? इसके लिये ''बांह पकड़ने'' के अन्तर्भाव को समझा जाना चाहिये। जो अन्ध भक्ति में विश्वास रखते हैं तथा ईश्वरत्व के स्वरूप को यथार्थ अर्थ में नहीं समझते, वे कह सकते हैं कि दरअसल ईश्वर कोई भी रूप धारण करके हमारी बांह खीच कर हमें उबारेगा। जब–जब भक्तों में 'भीर' पड़ी, भगवान् कोई न कोई रूप धारण करके दौड़े आये और भक्तों को संकट के जाल से मुक्त किया– इस मान्यता के पीछे यह भाव है कि ईश्वर एक विशिष्ट शक्ति का धारक होता हुआ अन्य पूर्ण आत्माओं से पृथक् स्वरूप वाला होता है और मनुष्य की उत्कृष्ट भक्ति किसी भी समय ईश्वर का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करा सकती है, वह जैनधर्म को मान्य नहीं है। जैनधर्म तो आत्मा की पूर्णता में ही ईश्वरत्व का प्रतिरूप मानता है। इसी के साथ उसकी यह भी मान्यता है कि पूर्णता को प्राप्त कर लेने के पश्चात् कोई आत्मा पुन: संसार में आगमन नहीं करती। अत: कवि का यह कथन कि भगवान् उनकी बांह पकड़ कर उबारे– कुछ और ही तात्पर्य रखता है।

इस 'बांह पकड़ने' से स्थूल बांह को पकड़ने का अर्थ नहीं लिया जाना चाहिये, बल्कि इसका अर्थ है– अन्तर्मन की गति–आत्मा के विकासरूपी बांह को पकड़ने से। क्योंकि ईश्वर का शुद्ध

गुरु राम

स्वरूप निजत्व में रमण करना, अरूपी, अशरीरी आदि है अत: वह रूप वाले स्थूल पदार्थों को ग्रहण नहीं करता। स्थूल पदार्थों को स्थूल शरीर ही ग्रहण कर सकता है। अत: ईश्वर से यह चमड़े की बांह पकड़ने की प्रार्थना नहीं की गई है। और आत्मा के विकास रूपी बांह को पकड़ने का भी अर्थ है कि उनके विकास पथ से हम को भी उस पर गतिशील होने की बलवती प्रेरणा मिले। उनका जीवन हमारे समक्ष लक्ष्य का रूप धारण करके जैसे चित्रित सा रहे। इस दृष्टि से अपनी समस्त शक्तियों को ईश्वर के चरणों में अर्थात् उनके विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए समर्पित कर देना ही उनको अपनी बांह मजबूती से पकड़ाना है।

किन्तु इस प्रकार परमात्मा से बांह पकड़वाने के लिए हृदय में तत्परता और आतुरता होनी चाहिये जो जीवन के क्रम को विमलता से ओतप्रोत कर देने पर ही एकत्रित की जा सकती है। इसके लिए उस उग्र भावना की आवश्यकता है जो संसार के निम्न वातावरण से ऊपर उठाकर भावना जगत् में निष्काम होकर विचरण करने का साहस पैदा करे। आत्मोत्थान के लिए इतनी बेचैनी पैदा हो जाय कि निजी स्वार्थ का अन्य विकार-पूर्ण प्रपंच मनुष्य के ध्यान में ही न रहे कि वह तो जैसे अपने आपको त्याग मार्ग पर विसर्जित कर चुका हो। भक्तिमार्ग की उत्कृष्ट श्रेणी ऐसी ही होती है कि वह निजत्व को समस्त जगत् में प्रसारित कर देता है- जगत् से ऊपर उठकर भी जगत् का कल्याण कर देता है।

क्रमश:

●●●

कविता

# पेड़ की असली साधना

विक्रमकुमार जैन

कहीं नहीं है ऐसी साधना
पेड़ की तरह जिन्दगी भर
कि खड़े रहो अपने बल पर,
भीतर-भीतर जड़ की तरह
चिन्तन और मनन पर चलते रहो,
ऊपर चाहे जितना शोरगुल हो
चाहे पंछी का घोंसला हो
या फिर कीड़ों की लम्बी कतार,
बेसहारों को दो सहारा,
कष्टों को सहो,
कुछ न कहो
कीलें ठुके
बदन पर या
कुल्हाड़ी की धार ही क्यों न चले,
सलवटें न आने दो फिर भी
चिन्तन, गहन मनन के पके हुए
फल-फूल बिखेर दो इधर-उधर
कि फिर उन्हें बोया और खाया जा सके,
सदियों तक पकाया जा सके।
कहीं नहीं है ऐसी साधना
पेड़ की तरह जिन्दगी भर
कि खड़े रहो अपने बल पर,
भीतर-भीतर जड़ की तरह

●●●

श्रमणोपासक

गुरु राम

# बबूल बोने से आम कैसे मिलेगा ?

– परमपूज्य आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

**शान्ति जिनेश्वर साहिब सोलमा,**
**शान्तिदायक तुम नाम हो सौभागी।**
**तन मन वचन शुद्ध कर ध्यावतो,**
**पूरे सगला काम हो सौभागी।**

शान्तिनाथ परमात्मा के चरणों में प्रार्थना की पंक्तियों का उच्चारण करते ही शान्ति की आवश्यकता मुखर हो उठती है। वास्तव में इस तापतप्त आत्मा को शान्ति की अत्यधिक आवश्यकता है। इसको शान्ति की बड़ी जबरदस्त भूख है, क्योंकि शान्ति इस आत्मा का मूल स्वभाव है और स्वभाव की जहाँ पर पूर्ति होती है, वहाँ आन्तरिक आनन्द की हिलोरें उठने लगती है।

## शान्ति की खोज किन पदार्थों के संयोग से की जा रही है ?

आज मानव शान्ति पाने के लिये लालायित भी है तथा वह शान्ति की खोज भी कर रहा है, लेकिन देखना यही है कि वह किन पदार्थों का संयोग जुटा कर उनसे शान्ति प्राप्त करने की आशा लगा रहा है ?

मानव सुख पाने और सुख से शान्ति पाने के लिये योग्य पदार्थों का संयोग जुटाता है। मन में जिस कदर भोग की लालसा समाई हुई है, वह सोचता है कि वह उन लालसाओं की पूर्ति के लिये उपयुक्त साधन अर्जित कर ले और उनकी पूर्ति कर ले तो उस को सुख मिलेगा तथा उस सुख से उसको शान्ति मिल जायगी। वह जानता है कि इन्द्रियों के सुख-साधन जुटाने के लिये धन की आवश्यकता होती है, इसलिये वह नीति-अनीति का विचार छोड़ कर किसी भी रीति से अधिक से अधिक धन अर्जन करना चाहता है। धन अर्जन करना भी आसान नहीं होता है। आप अधिक जानते हैं कि इसके लिये क्या-क्या अकरणीय नहीं करना पड़ता है तथा उसके बावजूद भी कितनी कामयाबी मिलती है ? इस प्रक्रिया में कितनी अशान्ति के बीच में से होकर गुजरना पड़ता है—इसका भी कोई हिसाब नहीं। लेकिन फिर भी वह बबूल बोता है इस आशा में कि उसके उग जाने पर उसके आम फल लगेंगे।

धन जुटाकर फिर योग्य पदार्थों का संयोग जुटाया जाता है। वह बढ़िया से बढ़िया खाना खा कर रसना को तृप्त करना चाहता है, सुन्दर से सुन्दर रूप देखकर नेत्रों को सुख पहुँचाता है, संगीत की मधुर लहरियों में डूब कर कानों को निहाल करता है, नासिका को सुगंध से भरपूर बना देता है तो स्पर्श-सुख की अनेकानेक सुविधाएँ जुटाता है और महसूस करने की चेष्टा करता है कि वह सुखी है तथा सुखी है तो शान्ति जरूर पा लेगा।

मन तथा पांचों इन्द्रियों के विषयों को मन भरके भोग लेता है, तब भी क्या उसका मन भरता है ? सुख और शान्ति पाने की लालसा से यह आत्मा अनादि काल से इन जड़ पदार्थों का संयोग जुटाने में पच रह है एवम् पदार्थों को ग्रहण कर रही है। फिर भी उसे शान्ति नहीं मिलती है—इस यथार्थ पर खेद का विषय यही है कि न तो वह गंभीर चिन्तन करती है और न ही अपनी शान्ति की खोज की दिशा ही बदलती है।

## अशान्ति के साधनों से अशान्ति ही बढ़ती है।

अनुभव की गहराइयों में उतर कर यह जान लेने की जरूरत है कि अशान्ति के साधनों से अशान्ति ही बढ़ती है और ये जितने योग्य पदार्थों के साधन हैं, ये अर्जन में भी अशान्ति बढ़ाते हैं तो वास्तव में भोग में भी अशान्ति ही बढ़ाते हैं। प्राथमिक स्तरों पर मनुष्य को ऐसा लगता है कि जब इन योग्य पदार्थों का साधन जुटाता है तो उनसे सुख मिलता है। लेकिन ऐसा आभास क्षणिक ही होता है। इसीलिये ऐसे अनुभव को सुखाभास कहा है और उसके बाद तो वही भोग दुःख का कारण बन जाता है।

गुरु राम

संसार के भोग्य पदार्थ जड़ होते हैं। इनका स्वभाव जड़ का स्वभाव होता है जो सड़न-गलनपूर्ण होता है। फिर इन पदार्थों का बाहरी आकर्षण ऐसा होता है कि मनुष्य के मन में इनके लिये लोभ पैदा हो जाता है और लोभ तृष्णा और वितृष्णा में भयंकर रूप लेता रहता है। अतः इन भोग्य पदार्थों का अन्तिम परिणाम सदैव दुःखमय ही रहता है। अन्त जिसका दुःखमय है, मान लीजिये कि उस दुःख का बीज प्रारंभ में भी विद्यमान ही रहता है। इस तरह प्रारंभ में जो सुखानुभव होता है, वह झूठा होता है। ऐसे पदार्थ तो वास्तव में प्रारंभ से अन्त तक दुःख और अशान्ति बढ़ाने वाले ही होते हैं।

आत्माएँ इन पदार्थों को ग्रहण करती हुई एवम् इनका उपयोग करती हुई दुःख और अशान्ति प्राप्त करती है, फिर भी झूठे अनुभवों के वशीभूत होकर वह इन पदार्थों की वास्तविकता को समझने की चेष्टा नहीं करती है। वह यह नहीं सोच पाती है कि सुख और शान्ति किससे मिलने वाली हैं ? यदि इन पदार्थों से सुख और शान्ति मिल जाती तो क्या संसार में कोई भी प्राणी एकदम अशान्त रहता ? कारण, जितनी भी आत्माएँ है, उनमें से प्रत्येक को ये पदार्थ न्यूनाधिक मात्रा में तो मिल ही रहे हैं। यह स्थिति अवश्य है कि किसी को कम मिल रहे हैं, किसी को ज्यादा मिल रहे है। जिनको कम मिल रहे हैं, उनको कम शान्ति मिले और जिनको ज्यादा मिल रहे हैं, उनको ज्यादा शान्ति मिले, लेकिन अगर इन पदार्थों से सुख और शान्ति मिलती है तो कम-ज्यादा शान्ति सभी को मिलनी चाहिये। परन्तु ऐसी अवस्था दीखती नहीं है। दीखता तो यह है कि जिनको ये साधन कम अंशों में मिले हुए हैं और उनमें यत्किंचित् सन्तोष की मात्रा आ गई है, वे तो फिर भी सुखी हैं, सुख और शान्ति से रहते हैं। लेकिन जिनको ये पदार्थ बहुतायत से मिले हुए हैं, उनकी हाय-हाय तो रात-दिन चलती ही रहती है—शान्ति एक पल को भी उनके पास नहीं फटकती। जितने अधिकाधिक पदार्थों की प्राप्ति होती है, उसी परिमाण में उनके लिये अधिकाधिक दुःख और अशान्ति बढ़ती जाती है। सच पूछा जाएं तो सैकड़ों की पूंजी वाले को उतनी अशान्ति नहीं, जितनी हजारों की पूंजी वालों को है, क्योंकि जितनी अधिक पूंजी, उतनी ही अधिक तृष्णा तथा हजारों की पूंजी वाला, लाखों की और करोड़ों की पूंजी वाला बन जाना चाहता है।

जिसको हजारों की पूंजी मिली हुई है, उसके पास भला पांचों इन्द्रियों के सुख-साधनों की क्या कमी हैं ? फिर लाखों और करोड़ों की पूंजी वह क्यों चाहता है ? और जितना चाहता है, उतना मिल जाने पर भी क्या उसको शान्ति मिलती है ? ऐसा क्यों हैं ?

### मनुष्य जर्जर होता है, तृष्णा कभी जर्जर नहीं होती

आपको देखने का अवसर मिला होगा कि कई अज्ञानी मनुष्य अपने जीवन के दुःखों से घबरा कर कुछ समय के लिये सुख और शान्ति पाने के लिये मदिरा पीना शुरू करते हैं। वे समझते हैं कि जब तक मदिरा के असर से बेभान स्थिति रहेगी, तब तक तो उन्हें उन दुःखों का अनुभव नहीं होगा तथा उन्हें उस समय के लिये तो शान्ति मिलेगी। शराब का चस्का रुकता नहीं है, तृष्णा बढ़ती जाती है और दिन-प्रतिदिन उनकी शराब पीने की मात्रा बढ़ती जाती है। आपने ऐसी दुर्दशा भी देखी होगी कि कई लोग शराब के इतने शौकीन हो जाते हैं कि रात-दिन बोतल लिये बैठे रहते हैं और चौबीसों घंटे नशे मे धुत रहते हैं। कई मजदूर वगैरह तो सड़क की नालियों में पड़े मिलते हैं, उनका परिवार नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है, लेकिन शराब पीने की उनकी लालसा जर्जर नहीं होती—वह तो अशक्त हो जाने के बावजूद भी बढ़ती ही जाती है।

जैसा मदिरा का प्रभाव होता है, वैसा ही संसार के इन भोग्य पदार्थों का भी मादक प्रभाव होता है। शराब वह शान्ति पाने के लिये पीनी शुरू करता है मगर उसकी शान्ति की क्या दुर्गति बनती है—यह आप रात-दिन देखते हैं। हो सकता है कि ऐसे किसी शराबी की हालत देखकर आप तरस भी खाते होंगे, मगर गहराई से अपने भीतर झांक कर देखें तो अपनी दुर्दशा क्या उस शराबी से कम है ? क्या जर्जर वृद्धावस्था आ जाने पर भी तृष्णा जर्जर बनती है या नितनवीन रीति से भड़कती है ? फिर शान्ति की चाह रखने पर भी क्या आपको शान्ति मिल सकेगी?

आपको सच्चे हृदय से बोलने को कहा जाय तो आप भी कहेंगे कि इतना-सारा वैभव अपने

पास होने के बाद भी आपको शान्ति नहीं है। रात-दिन चिन्ता और तृष्णा पड़ी रहती है ओर एक पल के लिये भी चैन नहीं लेने देती है। वास्तव में मनुष्य का शरीर जर्जर हो जाता है, अंगोपांग ढीले पड़ जाते है, मगर उसकी तृष्णा परम दुःखदाई है तथा उसके साथ ये सारे पदार्थ दुःख और अशान्ति देने वाले हैं।

## सुख और शान्ति के विषय में भ्रान्त धारणाएँ

अमेरिका के सबसे बड़े धनवान पुरुष से पूछिये जो शायद फोर्ड है या कौन है, कि तुम अमेरिका के ही नहीं, संसार के सबसे अधिक धनाढ्य हो, विशाल अट्टालिकाओं में रहते हो, अपार वैभाव के स्वामी हो, तुम्हारे यहाँ सुन्दर से सुन्दर योग्य पदार्थों का अम्बार लगा हुआ है—बोलो, भाई! तुम्हारे को तो कोई दुःख नहीं है ? तुम्हें तो पूर्ण शान्ति का अनुभव होता है ? क्या कहेगा वह ? अरे भाई, कहाँ शान्ति है-यहाँ तो हजारों हजार प्रपंच लगे हुए हैं, एक पल को भी शान्ति नहीं मिलती है, बल्कि मानसिक तनाव इतना बढ़ा रहता है कि अशान्ति ही अशान्ति दिखाई देती है।

सोचिये, फिर शान्ति कहाँ है ? आप सारा उल्टा-सीधा करके दुनिया भर का जोर लगाओगे तो चन्द चांदी के टुकड़े जमा कर लोगे और अपनी छाती फुलाएं फिरोगे कि आप बड़े धनाढ्य पुरुष हैं। अरे, लेकिन असलियत क्या है-इस पर भी कभी गहराई से विचार करते हो—संसार का सबसे बड़ा धनाढ्य पुरुष भी अशान्त है तो आपका थोड़ा-सा धन आपको शान्ति कहाँ से दे देगा ?

एक भूखे आदमी को कोई मिट्टी का ढेला खाने को दे तो क्या वह उसे खा सकेगा और क्या उस से उसकी भूख मिट सकेगी ? एक आदमी को कोई समुद्र का खारा पानी पाने को दे तो क्या उसे वह पी सकेगा और क्या उससे उसकी प्यास मिट सकेगी ? रोटी से भूख मिटेगी तथा शीतल मिष्ट जल से प्यास तृप्त होगी। वैसे ही इस आत्मा की भूख और प्यास संसार के इन भोग्य पदार्थों से मिटने वाली नहीं है। वह चाहे इस कान से सुने या उस कान से सुने, आज सुने या कल सुने अथवा कभी सुने ही नहीं, किन्तु जब तक मनुष्य इन नाशवान पदार्थों से अपना सम्बन्ध-विच्छेद नहीं करेगा, तब तक उसको वास्तविक शान्ति मिलने वाली नहीं है। क्षणिक सुखाभास से अस्थायी शान्ति का अनुभव कर भी लिया तो उससे होने वाला क्या है ? तलवार की धार पर शहद लगाकर वह शहद को चाटेगा तो उसकी जीभ कट जायगी। अब वह जीभ कटने को भूल कर शहद के मिठास से मजा लेने की बात कहे तो उसकी मूर्खता पर हंसी आ सकती है। शहद के स्वाद से शान्ति मिलने की बात कहे और कटी हुई जीभ का ध्यान न रहे तो उस शान्ति को कैसी शान्ति कहना ? बेचारी मच्छियां आटे के लोभ में जाल का कांटा पकड़ती है तो आटा तो मिलता नहीं, कांटा उसके मुंह में फंस जाता है—उनकी भूख तो मिटती नहीं, उनकी जिन्दगी मिट जाती है।

अमन चैन, आनन्द, सुख और शान्ति के विषय में संसार के लोगों के मन में बड़ी भ्रान्त धारणाएँ फैली हुई हैं। इन भ्रान्त धारणाओं के वशीभूत होकर वे वहाँ-वहाँ शान्ति की खोज करते हैं, जहाँ अशान्ति भरी पड़ी है और जहां शान्ति की झलक मिल सकती है, उस दिशा में उनके कदम बढ़ते नहीं हैं। सुख और शान्ति के वास्तविक स्वरूप पर गंभीर चिन्तन ही इस विडम्बना को समाप्त कर सकता है।

प्रभु शान्तिनाथ के जीवन के विषय में मैने उल्लेख किया है कि गर्भ में रहते हुए भी उनकी अमोघ शान्ति के प्रभाव से सारे देश में शान्ति स्थापित हो गई। जन्म के बाद वे महान् वैभव के धनी बने, छः खंड का चक्रवर्ती पद उन्होंने प्राप्त किया, फिर भी उन्होंने देख लिया कि उस बड़े से बड़े वैभव में भी शान्ति का निवास नहीं है?वह शान्ति तो अन्तरात्मा में ही विराजमान है। अतः उन्होंने नाक के श्लेष्म की तरह चक्रवर्ती के सम्पूर्ण वैभव का परित्याग कर दिया। फिर वे समभाव की साधना में साधु बन गये। याद रखिये, समभाव की साधना में ही सच्ची शान्ति प्राप्त हो सकेगी और समभाव की साधना सिद्ध कर ली तो आप भी परमात्मा शान्तिनाथ बन सकते हैं।

## आम का वृक्ष लगायेंगे तो आम अवश्य मिलेगा

जीवन में आम का वृक्ष लगाने का मतलब है साधु-अवस्था का अंगीकार करना। साधु-जीवन

गुरु राम

आत्मकल्याण का अति महत्त्वपूर्ण साधन है। साधु के पांच महाव्रत मेरु पर्वत से भी अधिक भारी माने गये हैं। मेरु पर्वत को उठाना सहज है, पर महाव्रत के भार को धारण करके समभाव की साधना के साथ चलना अति ही कठिन है। तलवार की धार पर चलने से भी साधु-धर्म का सम्यक् निर्वाह अधिक कठिन है। वह कठिनता बाहरी कष्ट उठाने तक ही सीमित नहीं है। कड़कड़ाती धूप में चल लेना सहज है, बारह प्रकार के तपों में से बाकृ तप की दृष्टि से मास-मासखमण का पारण करना और शरीर को डंठल की तरह सुखा देना भी सहज है। किन्तु कठिनतम कार्य यह है कि अन्तःकरण के राग-द्वेष को सुखाया जाय, काम, क्रोध की ज्वालाओं का शमन किया जाय तथा ऋजुता व मृदुता को जीवन में उतारा जाय।

भावनात्मक एवम् क्रियात्मक पक्षों का विश्लेषण करते हुए यह समझ लें कि क्रोध के भयंकर रूप का जब तक शमन नहीं कर पावें और मास मासखमण की तपस्या भी करें तो भी आत्मकल्याण के कार्य में वांछित सफलता नहीं मिल सकेगी। शास्त्रकारों ने कहा है कि कोई तीस दिन तक केवल गर्म पानी के आधार पर रहे तथा इकतीसवें दिन एक डाभ के अग्रभाग की अणी पर आवे उतने-से अन्न को पारणे में लेवे एवम् पुनः तीस दिन की तपस्या ग्रहण कर ले और यह क्रम चलाता रहे, किन्तु भगवान् की आज्ञाओं के अनुसार अपने जीवन का क्रम नहीं चलाता हो तो मोक्ष-मार्ग की दृष्टि से उसकी वह कठोरतम करणी प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार चलने वाले साधक की तुलना में सोलहवीं कला में भी नहीं पहुँचती है। जिनेश्वर भगवान् की आज्ञा में निर्दोष भाव से चलने वाला पुरुष भले ही अपनी शारीरिक अशक्ति या अन्य कारण से उपवास, बेला, तेला, पचोला आदि तपस्या नहीं कर सके, किन्तु आन्तरिक क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों को जीतना हुआ एवम् आभ्यन्तर तप की साधना करता हुआ उच्च कोटि का विकास सम्पादित कर सकता है।

शास्त्रकारों ने इस सम्बन्ध में एक दृष्टान्त दिया है। एक गुरु महाराज के पास एक ऐसा शिष्य था, जिसने बहुत बड़ी तपस्या की, जिससे उसका शरीर इतना अशक्त बन गया कि उठना-बैठना भी कठिन हो गया। उसका शरीर हड्डियों का ढांचा बन गया। चेले को अहंकार हो आया कि उसके समान अन्य कौन तपस्वी हो सकता है ? बाहर के तपस्वी ढांचे में अहंकार का जहर घुलकर सब तपस्या को जहरीली बना रहा है—इसको भान ही नहीं था। अपना अन्तिम समय जानकर उसने अपने गुरु से संथारा पच्चक्खाने को आदेश के स्वर में कहा। गुरु उसके मनोभावों से परिचित थे, बोले अभी तुम्हारे संथारे का समय नहीं आया है। अभी तप की कमी है, और तप करो। यह सुनकर चेला भभक उठा—मेरे बराबर कोई तप करने वाला है जो मुझे और तप करने को कहते हो ? फिर भी गुरु ने शान्त भाव से कहा—और तप करो। गुरु की शान्ति का चेले पर असर पड़ा। और वह फिर तप करने लगा। कुछ समय बाद गुरु से संथारा कराने की बात कही तो गुरु ने और तप करने को कहा। यह क्रम तीन बार चला, फिर भी गुरु ने और तप करने को कहा तो चेला आग-बबूला हो गया। उसने अपनी एक अंगुली मरोड़ कर तोड़ डाली और बताई की शरीर में खून का कण तक नहीं रह गया है और फिर तप करने की बात करते हैं। तब गुरु ने कहा—चेले, तुमको मेरे कहने पर उतना क्रोध आया कि अपनी अंगुली ही तोड़ डाली। अब बताओ, शरीर सुखा लिया उससे क्या हुआ ? क्रोध का विकार तो इस तरह उबल रहा है, फिर संथारा कैसे दिलादूं ? समभाव धारण हो जावे तभी समझना कि तप पूरा हो गया है। तब चेले को अपनी वास्तविकता का भान हुआ।

ध्यान रखिये कि बबूल पर कितने ही रेशमी कपड़े बांध दें, लेकिन उसमें से तो कांटे ही निकलेंगे और आमवृक्ष बोएंगे तथा साधु-जीवन की जड़ों को मजबूत बनायेंगे तो मीठे आम जरूर मिलेंगे।

## समभाव की साधना से सच्चा सुख और शान्ति

यदि मनुष्य के विचार, वचन तथा कार्यों में समभाव का समावेश हो जाय तो उसे ऐसा सुख और ऐसी शान्ति मिलेगी जिसका रूप स्थायी एवम् वास्तविक होगा। समभाव, समदृष्टि एवम् समता की जो निरन्तर साधना है, वही साधु-धर्म है। शास्त्रकारों ने साधु

गुरु राम

जीवन की प्रत्येक मर्यादा का विस्तार से अंकन किया है— वह क्या खावे, कैसे चले, सोये बैठे, किस विवेक से प्रासुक पदार्थ ग्रहण करें आदि। बाहर के इस विवेक के साथ विवेक की कठिन जिम्मेदारी भीतर है कि किस प्रकार विषय-कषायों के अन्तर्शत्रुओं से सफल संघर्ष करें एवम् आत्म-स्वरूप को उज्ज्वल बनावे ? त्याग के दो दृष्टिकोण हैं-एक तो बाह्य सम्पत्ति धन परिवार आदि का त्याग तथा दूसरा राग, द्वेष, काम, क्रोध, मोह, माया का परित्याग। एक पदार्थात्मक तो दूसरा भावात्मक त्याग है और इसीलिये दूसरा त्याग अधिक कठिन और अधिक प्रभावोत्पादक होता है।

यह सब समभाव की साधना है और यही साधना सच्चे सुख तथा सच्ची शान्ति की प्रदायक होती है। ...

भजन

# हमें तिराने को गुरु राम आया

तर्ज : तुमको देखा तो ये ख्याल आया

–नरेश मेहता

**जन्मों से भटके, अब मुकाम आया –2**
**हमें तिराने को, 'गुरु राम' आया –2**

निज को भूले थे, पर पे डेरा था –2
आत्म ज्योति को, तुमने प्रकटाया –2
हमें तिराने को .....

राहों में भटके, रहे जग समंदर में –2
पथ वो मंजिल का, तुमने बतलाया –2
हमें तिराने को .....

देह से आशियाँ है, आतम का –2
भ्रमणाओं को, तुमने सुलझाया
हमें तिराने को .....

मंजिलें यूँ मिला नहीं करती –2
राह कांटों पर, चलना सिखलाया –2
हमें तिराने को.....

आगमों की नित नई बारिश है –2
वचनामृत को तुमने बरसाया –2
हमें तिराने को .....
मोह की नींद में रहे सोते –2
'जागरण' देता, सवेरा आया –2
हमें तिराने को .....

संघ बगिया को तुमने सींचा है –2
पुष्प समता का तुमने महकाया –2
हमें तिराने को .....

नाना के ख्वाब की हकीकत हो –2
जो न माने थे, अब यकीं आया –2
हमें तिराने को .....

धन्य है जग ये तुम्हें पाकर –2
प्रबल पुण्यों से 'राम युग' आया –2
हमें तिराने को .....

'राम' के रूप में मिले 'प्रभुवर' –2
अब है बाकी क्या, क्या नहीं पाया –2
हमें तिराने को .....

गुरु राम


सत्ता का उपयोग सम्पत्ति बटोरने के लिए नहीं होना चाहिये, उसका सही उपयोग सेवा है।

# समर्पण और सिद्धि

–परमपूज्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

यह व्यवहार का सत्य है कि प्रयोजन के बिना मंद से मंद बुद्धि वाला व्यक्ति भी प्रवृत्ति नहीं करता। जो भी प्रवृत्ति होती है, वह सहेतुक होती है, निर्हेतुक नहीं। सहेतुक अर्थात् उसके पीछे कोई न कोई कारण अथवा उद्देश्य अवश्य होता है। उसी के आधार पर कार्य की निष्पत्ति होती है।

कवि आनंदघनजी कहते हैं– विमल जिनेश्वर के दर्शनों के साथ– **'म्हारा सिध्या वांछित काज'** मेरी कामना के अनुसार आज मेरा कार्य सफल हो गया। प्रश्न होगा– उनकी कामना क्या थी? कामनाएँ, अभिलाषाएँ अनेक होती हैं। उनका अन्त नहीं है– **'इच्छा हु आगास समाणंतिया'** (उत्तराध्ययन सूत्र 9/48) इच्छा का छोर नहीं। उनकी सीमा नहीं। एक इच्छा पूर्ण होते–होते तत्काल दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। सिलसिला ऐसा बढ़ता है कि उनका कहीं अंत हीं नहीं आता। पर आश्चर्य है कि 'विमल जिनेश्वर' के दर्शन होते ही कवि कहते हैं– **'म्हारा सिध्या वांछित काज'**, कैसे सिद्ध हो गया? किसी की कोई कामना पूर्ण हो तो वह प्रफुल्लता से झूम उठता है। भावना सफल हो जाती है।

**'सिद्धाणं णमो किच्चा'** अत्यन्त अर्थगर्भित सूत्र है। यहाँ कामना नहीं है, यहाँ समर्पण है। कवि जो कह रहे हैं कि कार्य सिद्ध हुआ, तो वह कैसे व कब सिद्ध हुआ? इस सम्बन्ध में वे कहते हैं– **धींग धणी माथे कियो रे'** दु:खों से झुलस रहा था, दुर्भाग्य की काली छाया पीछा नहीं छोड़ रही थी। बड़ी तमन्ना थी कि मुझे सुख–सम्पत्ति मिल जाये। जितना मैं उसके पीछे भागा, वह छाया बन आगे–आगे भागती रही। मैंने पकड़ने की कोशिश की पर छाया हाथ नहीं लगी। हाथ लगा, दु:ख–दुर्भाग्य। मैं हैरान–परेशान हो गया। सोचने लगा– कब तक पीछे भागता रहेगा, ये छाया है, हाथ नहीं आयेगी। जैसे ही यह बोध हुआ, मैंने उधर पीठ कर दी। चारों ओर से थक कर परेशान हुआ तो मैंने स्वयं को समर्पित कर दिया। व्यक्ति पहले स्वयं की सुरक्षा का प्रबंध करता है। हम जानते हैं कि इस दुनिया में सभी देश शांति की बात करते हैं। प्रत्येक देश शांति की कामना करता है। पर शांति कैसे प्राप्त हो? बात तो करते हैं–शांति की, पर सुरक्षा के नाम पर बारूद इकट्ठा करते हैं। उस बारूद के ढेर पर शांति का नारा बुलन्द किया तो क्या शांति प्राप्त हो सकती है? सुरक्षा के नाम पर युद्ध के लिए विस्फोटक पदार्थों का संग्रह करते हैं और चाहते हैं शांति। इस स्थिति में शांति–सुख कैसे मिलेगा?

कवि भी कह रहे हैं– पहले मैंने बारूद इकट्ठी कर ली कि यदि कोई प्रसंग आया तो इससे सुरक्षा प्राप्त होगी। पर देखा जितनी व्यवस्था सुरक्षा के लिए की, दु:ख–दुर्भाग्य उतना ही बढ़ता गया और सुख की छाया, उतनी ही दूर होती गई। मैं हताश हो गया। मैंने इतना इकट्ठा किया पर शांति नहीं मिली तो इस तैयारी का क्या मतलब? मैंने स्वयं को शिथिल कर दिया, समर्पित कर दिया। धींग धणी कौन? धींग मेवाड़ में तो गोत्र है पर कवि कहते हैं, मैंने निराश होकर एक बलिष्ठ को अपने सिर पर आरोपित कर लिया अर्थात् मैंने सर्वस्व उनको समर्पित कर दिया। **'त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।'**– तुम्हीं मेरे माता–पिता–बंधु और सखा हो। फिर मैं झूम उठा, देखा दु:ख दूर हो गया। सुख का संचार हुआ। जिसके पीछे भागा वह सम्पदा मिल गई। अब मुझे भरा–भरा लग रहा है। रिक्तता और हताशा दूर हो गई। हमें लग सकता है कि ये कथाओं, आगमों, कविताओं की कल्पनाएँ हैं, यथार्थ में घटित नहीं होती। पर हमारा सोचना गलत है। हम केवल सुनने की इच्छा ज्यादा रखते हैं, खोज नहीं होती। पर हमारा सोचना गलत है। गहरे में पैठे बिना, बोध–संतोष प्राप्त नहीं होता। गहरे में उतरे बिना मोती नहीं मिलते।

गुरु राम



सत्ता प्राप्ति के बाद सावधानी की जरूरत है।

## अरिहंते सरणम् पवज्जामि

प्रभु ऋषभदेव के शिष्यों से कहा जाता कि ऐसा करना है तो वे वैसा ही करते, उससे आगे प्रज्ञा कार्यरत नहीं होती। जैसे कहा गया- ''नट का नृत्य नहीं देखना'' तो आज्ञापालन करते हुए नटी का नृत्य देखने खड़े हो गये। इतना तर्क नहीं किया कि नट का नहीं देखना तो नटी का तो देखना ही नहीं। यह बताया तो कहने लगे- **''तहत्ति''। अन्नदाता बड़ी कृपा की।** यह थी-सरलता, भोलापन। दूसरा युग आया- नट का खेल नहीं देखना, नटी का देख लिया। पूछा गया तो कहने लगे-आपने तो बताया ही नहीं। कितना अंतर है-द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव में? इसलिए कहना पड़ा- **'अरिहंते सरणं पवज्जामि।'** साधक कहता है-''स्वीकार करता हूँ।'' यदि कोई कहे मेरी शरण में आ जाओ तो कहेंगे, क्यों चले आयें, क्या यही सबकुछ है? तर्क विकसित होगा। इसलिए साधक कहता है- अरिहन्त की शरण ग्रहण करता हूँ। यदि अरिहंत कह दे, मेरी शरण में आओ तो उसे शंका होगी कि यह कह रहा है- 'आ जाओ' तो कहीं इसमें अहं की गंध तो नहीं है। इसलिए तीर्थंकर मौन रहते हैं। साधक ही कहता है- मैं शरण स्वीकार करता हूँ। यथार्थ में स्वीकार हो तो वहाँ रूपान्तरण होगा। हम जानते हैं कि विज्ञान शोध करता है। सूत्रों को लेकर आगे बढ़ता है। इसमें मर्म क्या है? धर्मग्रन्थों में उसे महत्ता क्यों दी गई? धर्म या धार्मिक कहलाने वाले नहीं पहुंचे, उन्होंने खोज की है।

रॉबर्ट पावलिय ने गहरी खोज की। उन्होंने समझ लिया कि सबसे पहले काया का प्रयोग करें, फिर आगे सूत्र पकड़ पाएंगे। सीधे आत्मा या मन तक पहुँचना कठिन है। उन्होंने देखा- एक व्यक्ति खड़ा है, एक व्यक्ति बैठा है। उनके भीतर जो विचार चलने लगे- उनमें अंतर है। उन्होंने प्रयोग किया, प्रयोग विचित्र था। कोई व्यक्ति यदि तनाव में है तो उसे दूर कैसे करें? कोई व्यक्ति यदि मानसिक रोग से रुग्ण है तो उसे कैसे ठीक करें? वे एक-एक सूत्र पकड़कर खोज करते-करते पहुँचे तो एक फार्मूला ईजाद किया- **जो रोगी तनाव से ग्रस्त हैं, उसे एक स्वस्थ गाय के नीचे सुला दिया जाता। चित लिटाने के पश्चात् उससे कहा जाता- सारे शरीर को शिथिल कर दो। यह वही क्रिया है योग शास्त्र की दृष्टि से, जिसे योग निद्रा कह सकते हैं। फिर उसके भीतर भावना करो कि मैं स्वस्थ हूँ, मैं स्वस्थ हूँ। गाय की ऊर्जा मेरे भीतर प्रविष्ट हो रही है, मेरा रोग दूर हो रहा है, मैं निरोग हो रहा हूँ। प्रयोग करके 5 मिनट बाद यंत्र में परीक्षण किया गया तो पता चला कि 5 मिनट पूर्व जो मानसिक तनाव था, वह समाप्त हो गया था। किसी को तेज ज्वर हो तो वह बर्फ-शिला के प्रयोग से नॉर्मल स्थिति में आ जाता है, स्वस्थ हो जाता है। कई ऐसे व्यक्ति जिनमें इतनी थकान होती है कि उठना नहीं, पड़े रहना चाहते हैं उन पर प्रयोग किया गया तो देखा गया कि 5 मिनट में उनमें स्फूर्ति आ गई।** किसी व्यक्ति ने रॉबर्ट पावलिय से कहा- आप सुलाकर प्रयोग करते हैं, क्या बैठे-बैठे भी किया जा सकता है? उसने कहा- हाँ, हो सकता है। पर जो कार्य सोने में 5 मिनट में हो सकता है वह बैठने पर उतना शीघ्र नहीं होगा। जब तक उसके चारों ओर सुरक्षा की दीवार या विश्वास न बने, स्वस्थ नहीं किया जा सकता। विचारों की दीवार को ढहाना पड़ेगा। विचार की दीवार ढह जायेगी, तभी वह स्वस्थ होगा। **''अरिहंते सरणं पवज्जामि''** यह विचार की दीवार को ढहाने के भाव हैं। चहार दीवारी से घिरे रहे, तब तक दुःख दुर्भाग्य दूर नहीं होंगे, सुख प्राप्त नहीं होगा। उस दीवार से बाहर छलांग लगानी होगी। तभी सुख प्राप्त होगा।

एक महात्मा उपदेश दे रहे थे। परमात्मा पर विश्वास की बात कह रहे थे। दूसरे दिन एक बहिन दूध लेकर देर से पहुँची, महात्मा ने पूछा, क्या बात है? बहिन ने कहा- नदी में पूर था, नौका नहीं मिली, इसलिए विलम्ब हो गया। महात्मा ने कहा- ''परमात्मा के नाम का विश्वास रखकर चली आती। उसने विश्वास कर लिया। दूसरे दिन भी नदी में पूर था पर परमात्मा का नाम लेकर चली और जल्दी पहुँच गई। महात्मा ने पूछा- आज जल्दी कैसे आ गई? उसने बताया- मुझे परमात्मा के नाम से मार्ग मिल गया।

जन्माष्टमी के प्रसंग की बात हम सब जानते हैं- वसुदेव कृष्ण को लेकर पहुँचे, यमुना में उफान आ रहा था। लेकिन कृष्ण के अंगूठे का स्पर्श

गुरु राम

हुआ तो मार्ग मिल गया। कथा का यह प्रसंग हमें अतिरेक लगता है पर वर्तमानकाल में भी कहते हैं कि चन्द्रकान्त मणि से मार्ग मिल जाता है। हम उस प्रसंग को चाहे जिस रूप में लें पर वह बात अर्थ, देश, काल के अनुसार है। यदि विश्वास हो, तो कार्य सम्पन्न होता है।

कवि आनन्दघनजी कह रहे हैं- जब तक हमने सुरक्षा की दीवार बना रखी, छाया बना रखी तब तक कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। पर जब मैंने परमात्मा को स्वामी बना लिया, मैंने उनकी शरण स्वीकार कर ली, तब वे दु:ख-दुर्भाग्य उलटे पाँव भागे, टिके ही नहीं। सुख-सम्पदा का स्रोत प्रवाहित हो गया। अब कोई चिन्ता नहीं रही। क्योंकि धींग धणी को अपने माथे पर कर लिया तो उनकी क्षमता-शक्ति से दु:ख-दुर्भाग्य स्वत: दूर हो गये। इकट्ठी की हुई बारूद को बाहर फेंका तो परमात्मा ने सहारा दिया। जैसे डूबते को नौका का सहारा मिल गया। सहारा नहीं मिले तो वह कितने ही हाथ-पाँव मारे पर तैरेगा नहीं। व्यक्ति सोचता है, दीवारों से मेरी सुरक्षा होगी, पर यह विचार ही भूल है। शरण स्वीकार करना है तो दीवार ढहानी पड़ेगी।

रॉबर्ट पावलिय ने सुलाने की बात कही है। यह शवासन की प्रक्रिया भारतीयों की ही है, पर हमने उसका लाभ नहीं उठाया। लाभ उठाया, उन पाश्चात्य विद्वानों ने। फ्रॉयड मनोचिकित्सा कहते हैं- जब पहले मैं सामने बैठकर बातें करता था, तब रोगी बात खोल नहीं पाता था। पास में बैठा तो भी खुल नहीं पाता था, लेकिन जब बीच में पर्दा लगाकर मैं स्वयं ओट में बैठ गया और जैसे ही व्यक्ति ने सारे अंगों को शिथिल किया, मुँह से सारे अपराध, स्वीकार कर लिये। रोगी की यह क्रिया ऐसी थी, जैसे वह अकेले स्वयं से बात कर रहा था। अपने सामने अपने अपराध स्वीकार कर लेने में किसी को संकोच नहीं होता। यहाँ फ्रॉयड पर्दे के पीछे था। व्यक्ति के बीच यदि उसकी उपस्थिति का दायरा होता तो वह संकोच की दीवार गिरा नहीं पाता। लेकिन जब देखा कोई नहीं है तो उसने सारी दीवारें गिरा दी। शांत हो गया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि समर्पणा के सूत्र का प्रथम चरण शवासन है। तनाव शांत करना है तो व्यक्ति आनंद केन्द्र में ध्यान लगावे। व्यक्ति शिथिल हुआ कि सारे तनाव भी शांत। वैज्ञानिकों ने यह प्रयोग किया तो हमने भी माना कि शरण स्वीकार करने में, दीवार ढहाने में बहुत तत्त्व है अन्यथा **'अरिहंते सरणं पवज्जामि'** तो हम कब से कहते आ रहे हैं। महात्मा से बहिन ने कहा- आपके कथनानुसार मैं परमात्मा पर विश्वास करके चली आई। महात्मा के एक शिष्य ने सुना, उसके मन में प्रयोग करने का विचार आया। वह कुछ कहे बिना चल पड़ा। 'णमो अरिहंताणं' कहकर नदी में पैर रखा। णमो अरिहंताणं का उच्चारण कर कदम बढ़ाता गया। आगे बढ़ता गया। पानी कंठ तक आ गया। अब मैं मरा। अरे, वह बहिन तो कुछ और कह रही थी, पर बचूंगा नहीं, वापस लौट गया। महात्मा के पास पहुँचा कहने लगा- आप कहते हैं, परमात्मा के नाम में इतनी शक्ति है कि नदी पार की जा सकती है? महात्मा ने कहा-बात सही है। नाम-स्मरण कर जब भवसागर से पार हो सकते हैं तो नदी क्या चीज है। शिष्य ने पूछा- फिर मैं क्यों तिर नहीं पाया। महात्मा ने प्रश्न किया-तुमने क्या उपाय किया था? उत्तर मिला- मैं जैसे ही नदी के निकट पहुँचा 'णमो अरिहंताणं' का उच्चारण किया, णमो अरिहंताणं कहता हुआ बढ़ता गया। महात्मा ने उत्तर दिया- यही तो कमी थी। तुम्हारे मन में संदेह था। एक-एक पग पर णमोअरिहंताणं बोलते गये। पर अरिहंते सरणं पवज्जामि, या 'सिद्धाणं णमो किच्चा' से भाव-समर्पण कर दिया होता तो यह नौबत नहीं आती। बहिन से पूछा गया- तुमने क्या किया? उसने कहा- परमात्मा तो भवसागर से तराते हैं तो नदी से क्यों नहीं तिराएंगे। नाम लिया और धड़ल्ले से बढ़ती गई। आगे-पीछे नहीं देखा। सोचिये, आगे-पीछे देखते रहें तो काम कैसे होगा? परमात्मा सहयोगी कैसे बनेंगे? सिद्ध प्रभु को नमस्कार करना है- भाव से; ये नहीं कि ऊपर से नाम लेते रहे। नाम हृदय की गहराई से लें। नाम तो महात्मा के शिष्य ने भी लिया था पर लाभ नहीं हुआ। बहिन ने एक बार समर्पण भाव से नाम लिया तो पार हो गई। हमारे यहाँ जंघाचारण, विद्याचारण मुनि का वर्णन आता है। वे एक बार 'णमो अरिहंताणं' बोले कि कार्य हो गया। जब भीतर ऐसा विश्वास बनता है, तब ही सफलता मिलती है। मुख्य वस्तु आस्था, विश्वास और समर्पण हैं।

एक धावक नदी किनारे जाकर सोचे कुदूँ या नहीं, तो क्या पायेगा? लगा दी छलांग, तभी तिरने की कला सीख पायेगा। उसी प्रकार जब

गुरु राम

तक समर्पण की छलांग नहीं, तब तक परमात्मा तक नहीं पहुँचा जा सकता। समुद्र में लहरें उठ रही हैं, पर गहराई में नहीं उतरे तो क्या मिलेगा? वैसे ही ऊपर-ऊपर से देखकर कहें- नमस्कार मंत्र में क्या चमत्कार है तो चमत्कार कैसे घटित होगा? सुदर्शन, सीता आदि की कथाओं में आप सुन चुके हैं कि कैसे सूली का सिंहासन बन गया और अग्नि शीतल हो गई। आप विश्वास नहीं करेंगे, सोचेंगे कि पहले ऐसा होता था तो आज क्यों नहीं होता? आज विश्वास नहीं है, गहरे में नहीं उतरते। तरंगों में झूलते रहे तो कुछ नहीं मिलेगा। 'धींग' अर्थात् समर्थ स्वामी को सिर पर कर लो, उसकी ज्योत्स्ना आपको प्रकाशित करेगी। जैसे रॉबर्ट पावलिय ने उस व्यक्ति को स्वस्थ गाय के नीचे रखा तो गाय की ऊर्जा से व्यक्ति स्वस्थ हो गया, वैसे ही समर्थ स्वामी की किरणों से कवि के दर्द मिट गये। वहाँ शस्त्र-अस्त्र उठाने की जरूरत नहीं, चाहे कुछ भी सामने आये, विजय मिलेगी ही। **कौण गंजे याने माथा और खेट का तात्पर्य है दुर्जन** अर्थात् फिर कोई खल नहीं आयेगा, फिर उसकी क्या हिम्मत कि आंख उठा ले। ये क्रोध, मान, माया और लोभादि खल हैं। समर्थ स्वामी नहीं तो ये सजग नहीं हुई। पर जब समर्थ को स्वामी रूप में स्वीकार कर लिया, स्वयं को समर्पित कर दिया, तब उकसाते और बुरी नजर डालते क्रोध आदि खल परास्त हो गये। पास आने से घबराने लगे, दूर से ही भाग गये। समर्पण के सही तौर-तरीकों से इलाज करें, तभी स्वस्थ होंगे। दु:ख-द्वंद्व नहीं रहेंगे।

हम जो भी कार्य करते हैं, उसके पीछे कोई हेतु होता है। कवि ने भी कहा है, मेरी सफलता में हेतु था। मैंने आश्रय लिया तो चामत्कारिक परिवर्तन हुआ। ऐसा परिवर्तन हमारे भीतर भी हो सकता है। अहमदाबाद वाले रोशनलालजी मेहता ऐसे ही परिवर्तन के कारण डाकुओं के बीच फंसकर भी सुरक्षित बच गये। ये अवस्थाएँ ऐसी हैं कि जब तक हम इनमें गहराई से न उतरें, लाभ नहीं मिलेगा। तरंगों में ही झूलते रहेंगे तो कुछ मिलने वाला नहीं है। कभी-कभी कहा जाता है-गुरु के भीतर भी ऐसा प्रसंग उपस्थित हो सकता है, किन्तु वह भी शिष्य के हित के लिए होता है।

**उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है- गुरु शीतल या कठोर, कैसी भी शिक्षा दे, उसमें भी हित निहित होता है। हम उसे समझ नहीं पाते। हमने जब समर्पण कर दिया है, तब यह उनका कर्तव्य है कि वे हमारा हित देखें। यद्यपि परमात्मा हमारा कुछ नहीं करेंगे पर उनकी करुणा का आभा-मंडल ही ऐसा है कि उसमें किसी भी खल-दुष्ट आदि का प्रवेश नहीं हो सकेगा। गुरु का आभामंडल साढ़े तीन हाथ का बताया गया। उसमें प्रवेश से पूर्व अनुमति लेकर विधि को जान लें, फिर प्रवेश करें तो बात हितकर होगी। समर्पण के पश्चात् सुरक्षा का दायित्व उन पर आ जाता है। वे ही माता-पिता, बंधु और सखा रूप है, ऐसे भाव बनें तो फिर वहाँ अजस्र शक्ति का स्रोत प्रवाहित होगा। ये भाव हमारी सुरक्षा में कारणभूत होंगे। जैसे समुद्र की गहराई से रत्न प्राप्त होते हैं, वैसे ही अपने भीतर की गहराई में श्रद्धा और समर्पण का प्रस्फुटन होगा, तभी सच्चे आनंद की अनुभूति होगी।** ●●●

# चतुर्विध संघ की सेवा है स्वयं की सेवा

चतुर्विध संघ की यथायोग्य सेवा वास्तव में प्रकारान्तर से अपनी स्वयं की सेवा है। चतुर्विध संघ का सदस्य होना ये सेवा दोनों एक दृष्टि से भिन्न नहीं है, तीर्थत्व रूप में भावात्मक दृष्टि से एक ही है। अत: चतुर्विध संघ की यथायोग्य सेवा करते हुए यह नहीं सोचना कि मैं किसी अन्य का उपकार कर रहा हूं। बल्कि सेवा करने वालों को यह सोचना चाहिए कि मैं अपने आप पर ही उपकार कर रहा हूं। जैसे आंख में तिनका गिरा, दर्द हुआ, बेचैनी हुई तो झट से हाथ उसकी मदद में पहुंचता है और तिनके को निकाल देता है। क्या इस क्रिया में हाथ ने कोई परोपकार किया? नहीं, हाथ भी उसी शरीर का अंग है, हिस्सा है और आंख भी। इसी तरह मैं और मेरा संघ एकात्म भाव से अलग नहीं है। ऐसा मानकर संघ के प्रत्येक सदस्य को अपने कर्तव्य कर्म पर दृढ़ रहना चाहिए। ●●●

# वर्ग पहेली

## (CROSSWORD-OCTOBER DHARMIK)

अन्तिम दिनांक
26 अक्टूबर, 2020

आचार्य श्री रामेश के प्रवचन समर्पण और सिद्धि के आधार पर
10-11 अक्टूबर, 2020 धार्मिक अंक

1. अरिहन्त भगवन् की शरणा ग्रहण करता हूँ। (12 शब्द -सीधा)
1. गुरु के आभामंडल में प्रवेश के पश्चात् किस शक्ति का स्रोत प्रवाहित होता है? (6 शब्द - नीचे)
2. समर्पणा के सूत्र का प्रथम चरण क्या है? (4 शब्द - नीचे)
3. मंद से मंद बुद्धि वाला व्यक्ति भी किसके बिना प्रवृत्ति नहीं करता? (4 शब्द - सीधा)
4. कौन डाकू के बीच फंसकर भी सुरक्षित बच गये? (8 शब्द - सीधा)
5. किसके नमो अरिहंताणं बोलने से कार्य हो गया? (5 शब्द - नीचे)
6. किसने खोज में समझ लिया कि अगर पहले काया का प्रयोग करेंगे तो फिर आगे सूत्र पकड़ पाएंगे? (7 शब्द - सीधा)
7. अन्दर के इकट्ठे हुआ बारूद को बाहर फेंकने के बाद कौन सहारा देता है? (5 शब्द - नीचे)

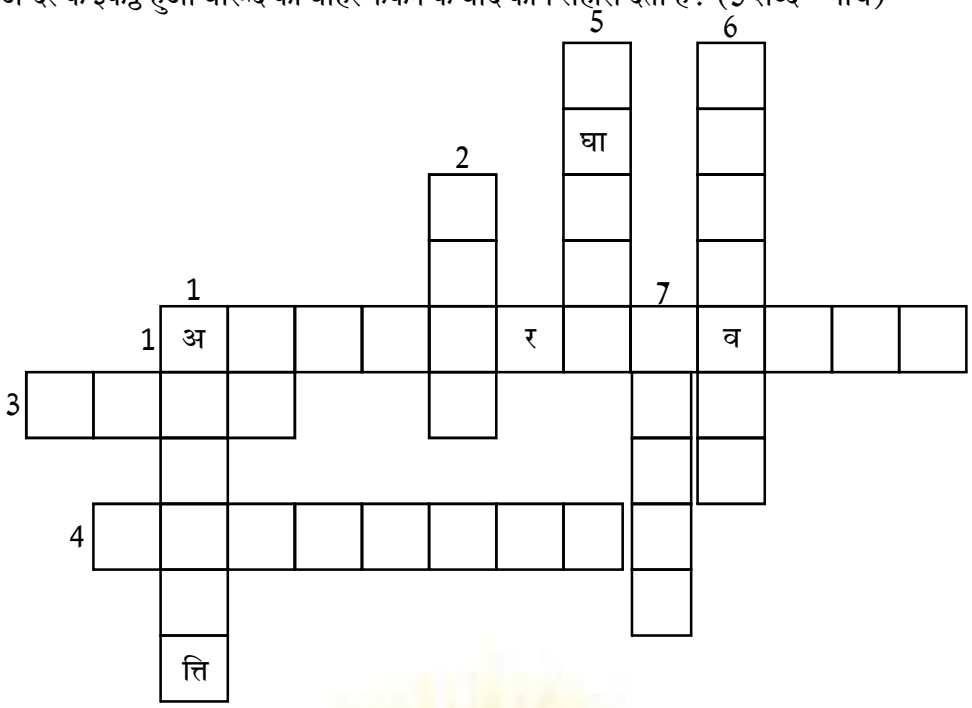


नाम :.....
मो.नं. :.....
जिला :.....
राज्य :.....

गुरु राम

Whatsapp On 9819998298
(No calls will be enteratained, only SMS)

# हु रि उ वौ श्री ज ग नाना राम

## चमक रहे भानु समाना

## परमपूज्य आचार्य-प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

श्वासोच्छ्वास विलास भजन को, दृढ़ विश्वास पकड़ रे।
जपाभ्यास प्रकाश हिये विच, जो सुमरण जिनवर रे।।

भक्त कहते हैं- दु:ख से बचने के लिए परमात्मा का भजन करो। अगर कोई कहे कि मुझे तो समय ही नहीं मिलता, तो फिर भजन किस प्रकार करूं? ऐसा कहने वालों को भक्त उत्तर देते हैं- परमात्मा का भजन करने के लिए तुझे समय नहीं मिलता तो न सही। कोई हानि नहीं है क्योंकि इस कार्य के लिए किसी खास अलग समय की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा का भजन किस प्रकार करना चाहिये यह सीखने के लिए तो समय की आवश्यकता रही है, लेकिन परमात्मा का स्मरण करने के लिए किसी खास समय की आवश्यकता नहीं है। इसका अभ्यास तो श्वासोच्छ्वास की तरह हो जाता है। जब परमात्मा के स्मरण का अभ्यास श्वासोच्छ्वास लेने और छोड़ने के अभ्यास की तरह स्वाभाविक बन जाये तो समझना चाहिये कि परमात्मा का भजन स्वाभाविक रूप से हो रहा है।

●●●

## परमपूज्य आचार्य-प्रवर 1008 श्री गणेशलालजी म.सा.

### गौरव प्राप्यते दानात्

जीवन का गौरव प्रदान करने में है, न कि ग्रहण करके एकत्र कर लेने में। वास्तव में इस प्रदान करने को दान कहिये या त्याग, जीवन के विकास का प्रधान कारण समझना चाहिये। प्रकृति के स्वाभाविक वातावरण में ही इस सत्य का स्पष्टत: दर्शन किया जा सकता है-

गौरवं प्राप्यते दानान्नतु, वित्तस्य संचयात्। स्थितिरुच्चै: पयोदानां, पायोधिनामध: स्थिति:।।

आज के सामाजिक जीवन का भी यही सत्य है। दान उदार हृदय की विशालता को अधिकतम क्षेत्र में प्रसारित करता है। संचयवृत्ति हृदय को अत्यधिक संकुचित बनाती हुई उसे घृणित रूप दे देती है।

अत: जीवन-विकास के क्षेत्र में दान अत्यावश्यक है। जो दान देकर बदले की आशा लगाये रहता है, वह एक दृष्टि से वास्तव में दान नहीं करता है, बल्कि एक तरह का सौदा करता है। दान के शुद्ध दृष्टिकोण से अर्पित की जाने वाली धनराशि ही सच्चा जनकल्याण कर सकती है।

अन्त में यही कहना चाहूंगा कि त्याग और दान ही जीवन के विकासक हैं। दान सरल भी है यदि हृदय में सच्ची भावना व उदारता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने पास से दान-हित कुछ न कुछ निकाल सकता है। मोक्ष के चार उपाय- दान, शील, तप व भावना बताये हैं। उनमें भी दान को सर्वप्रथम कहा गया है। अत: यदि आप जीवन में प्रगति चाहते हैं तो अपनी शक्ति गिरे हुए को उठाने में और दुखियों का दु:ख दूर करने में लगावें।

**परमपूज्य आचार्य-प्रवर 1008 गुरु राम श्री नानालालजी म.सा.**

जीवन की साधना मस्ती में है। विराट विश्व में समग्र वस्तुएँ सहायक के रूप में ली जा सकती है। सहायक अनुकूल साधन में एवं बाधक प्रतिकूल सहायक के रूप में है। कार्य-सिद्धि में अनुकूल-प्रतिकूल दोनों सामग्री अपेक्षित हैं। अनुकूल में अधिक सावधानी तब रहेगी, जब प्रतिकूल सामने होगा। साधक सोचेगा कि यदि मैंने अनुकूल सामग्री का सही प्रयोग नहीं किया तो यह सामग्री प्रतिपक्षी के साथ में चली जायेगी या नष्ट हो जायेगी। ऐसी भावना प्रतिकूल तत्त्वों की उपस्थिति में विशेष बनेगी। अत: प्रतिकूल भी सुन्दर कार्य-सम्पादन में सहायक हुआ। इसलिए प्रतिकूल से कभी भय नहीं खाकर उसे साधन रूप में मानना चाहिये। इस दृष्टि से सोचा जाये तो समग्र विश्व सहायक है। तब किस बात का भय तथा किसके लिए? अत: सदा सर्वत्र भय और चिन्ता से मुक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक जीवन निर्माण में लगना चाहिये।

●●●

## परमपूज्य आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

### सर्वमान्य बाटों से तोल

अपनी तुला पर जब दूसरों को तोलने का प्रसंग बनता है तब मन प्राय: अशान्त बन जाता है। व्यक्ति यह नहीं सोचता कि दूसरों की तुला पर कितना खरा उतर रहा है। दूसरों की तराजू पर जब उसे तोला जायेगा तो वह पास मार्क्स ला पायेगा या नहीं ? संभव है वह न ला सके। इसलिए दूसरों को अपनी तुला पर तौलने के साथ ही स्वयं को दूसरों की तुला पर तौलने का प्रयत्न करना चाहिये। मजे की बात यह है कि व्यक्ति अपनी जिस तुला पर दूसरों को तौलता है उसका पासिंग मिलाता ही नहीं है, परिणामस्वरूप कोई भी उसकी तुला पर खरा उतर ही नहीं पाता। एक बात और है कि वह जिन बाटों से तौलता है वे बाट भी सर्वमान्य नहीं हैं। वे उसके अपने बनाये हुए हैं।

●●●

# वर्ग पहेली

आचार्य श्री रामेश के प्रवचन "सिस्स भिक्खं दलयामो" के आधार पर 25-26 जून 2020

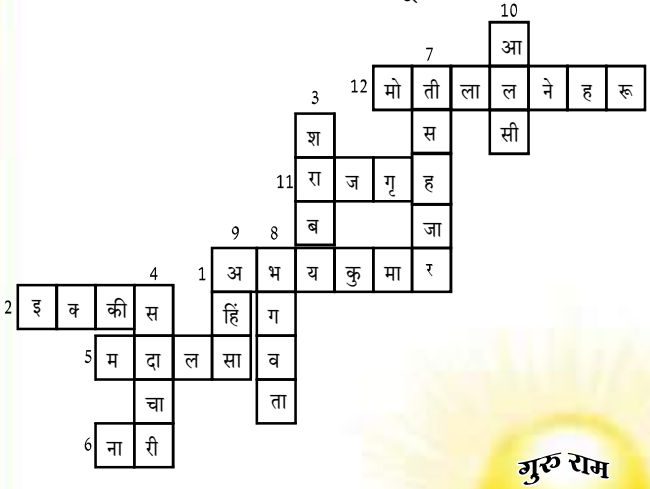


## विजेताओं की सूची

1. नितिन जैन, वड़ोदरा, गुजरात
2. रीतु जावरिया, उदयपुर, राजस्थान
3. जिनी जैन, इंदौर, मध्यप्रदेश
4. सुरेन्द्र सिपानी, बैंगलोर, कर्नाटक
5. ज्योति कांकरिया, कोटा, राजस्थान
6. विमल भूरा, बीकानेर, राजस्थान
7. जयश्री नाहटा, रतलाम, मध्यप्रदेश
8. सरिता, हनुमानगढ़, राजस्थान
9. हर्ष दुग्गड़, पाली, राजस्थान
10. ममता सेठिया, कोयम्बटूर, तमिलनाडु
11. मीना, बालोद, छत्तीसगढ़
12. शांतिदेवी, रानीपेट, तमिलनाडु
13. लूणकरणजी भूरा, हावडा, पश्चिम बंगाल
14. अशोक संचेती, बालाघाट, मध्यप्रदेश
15. गगन जैन, सवाईमाधोपुर

# पॉवर ऑफर कम्यूनिकेशन

-महेन्द्र मुकीम
(इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर)

**हम बचपन में जब एक बार चलना सीख लेते हैं तो फिर हम चलने को फॉर ग्रांटेड लेते हैं। कभी सोचते नहीं कि हमारी चाल कैसी होनी चाहिये, स्टेप्स कैसे होने चाहिये।** ऐसे ही एक बार हम बोलना सीख जाते हैं तो बोलने को भी फॉर ग्रांटेड लेते हैं। **बा, ढा, धू करते-करते कई दिनों तक प्रैक्टिस कराते हैं तो बड़ी मुश्किल से बा, ढ़ा, दा निकलता है। इतनी प्रैक्टिस करके हम बोलना सीख पाते हैं। दुनिया में किसी भी जीव पर इतनी मेहनत नहीं की जाती जितनी इंसान पर की जाती है। गाय का बच्चा बाहर आया और खुद-ब-खुद खड़ा भी हो जाता है। कोई उसको अंगुली पकड़कर चलाता नहीं है। सब अपने आप हो जाता है।** ऐसे ही जब मनुष्य बोलना सीख जाते हैं तो फिर उस पर मेहनत करना छोड़ देते हैं। फिर जो मन में जो आता है, जैसे आता है, वैसे उसको बोल देते हैं। तमाम उम्र ऐसे ही करते हैं।

बोलना भी उसी तरह का फाइन आर्ट है जैसे कि पेंसिल है, जैसे कि कोई इन्स्ट्रूमेंट का उपयोग करना है। सचिन तेंदुलकर पिच पर जाकर स्टेट ड्राईव (straight drive) मारता है तो कमेंटेटर (commentator) के मुँह से क्या निकलता है? एक अच्छा बेट्समैन ही ऐसा शॉट खेल सकता है। सी द टाईमिंग (see the timing)। यही जो टाईमिंग है। ये स्पीकिंग का बहुत बड़ा हुनर है। अब वो टाईमिंग कैसे आयेगी? क्या-क्या टूल्स होते हैं इसके लिए? उस पर हम थोड़ी रोशनी डालेंगे।

मैंने अपने अनुभव से पॉवर ऑफ कम्यूनिकेशन (Power of Communication) सब्जेक्ट पर एक 12 पॉईंट का एजेण्डा (agenda) बनाया है।

**मैं इस कम्यूनिकेशन के पूरे सब्जेक्ट को एक पेड़ के रूप में आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।**

**पेड़ जो होता है उसका सबसे महत्त्वपूर्ण भाग क्या होता है? रूट है, जड़ है।**

इसी तरह कम्यूनिकेशन में हमारा सबसे महत्त्वपूर्ण भाग एक रूट के रूप में होता है।

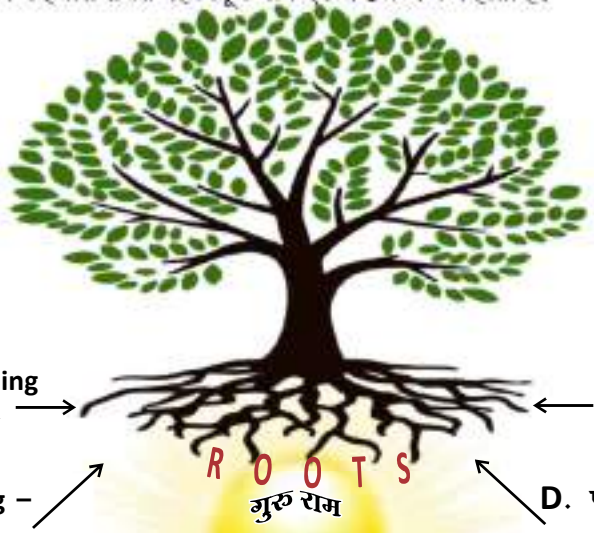


**A. द पॉवर ऑफ Listening यानी सुनने की शक्ति**

**B. पॉवर ऑफ Reading - बहुत पढ़ना चाहिये**

**C. पॉवर ऑफ Thinking - सोचना**

**D. पॉवर ऑफ Awareness- चारों तरफ क्या चल रहा है**



अपने सुख-दु:ख के लिए दूसरों पर निर्भर रहोगे तो तुम्हें दुख ही मिलेगा।

## A. द पॉवर ऑफ Listening यानी सुनने की शक्ति

हमारी मातृभाषा है; मान लीजिये वो मारवाड़ी है या हिन्दी है, उसके लिए हमें ग्रामर नहीं पढ़ना पड़ता। दूसरी कोई भाषा होती है, जो हम बचपन से सुनते नहीं हैं उसको जानने के लिए, उसको समझने के लिए हमको पूरे ग्रामर के प्रोसेस से, मैंथेमेटिकल प्रोसेस से गुजरना पड़ता है। इसलिए जो सुनने की शक्ति है वो इतनी महत्त्वपूर्ण है कि बिना किसी मैथ्स के, बिना किसी साईंस को समझे उस भाषा को सीखा जा सकता है। इतना महत्त्वपूर्ण है सुनना। हम जिंदगी के शुरुआती दिनों में ज्यादातर चीजें जो सीखते हैं वो सुनकर सीखते हैं। लेकिन जैसे-जैसे हमारे बोलने की क्षमता बढ़ती जाती है, हम अपने सुनने वाली क्षमता को धीमा करते जाते हैं और एक समय आता है जब लोग हमारे बारे में कहते हैं कि यह तो किसी की सुनता ही नहीं।

### 1. अच्छे श्रोता को सुनिए और नोट्स बनाइये

**(a)** पब्लिक स्पीकर के रूप में अगर आप चाहते हैं कि आप अच्छा बोलें तो दुनिया के प्रमुख वक्ताओं को सुनिये। वो 24 घण्टे यूट्यूब, ट्विटर, फेसबुक या इंस्टाग्राम पर उपस्थित होते हैं।

**(b)** टेनेंट के लिये स्पीकर को कितना कम समय दिया जाता है। उतने कम समय में वो जीवन की पूरी यात्रा को सुना देता है। ये कैसे होता है? क्यूंकि वो बहुत तैयारी के साथ और कन्टेंट पर बहुत मेहनत करके आता है कि इतने से समय में मैं सारी बात कह दूंगा। ऐसे स्पीकर्स को आप लगातार सुनिये।

**(c)** जब कोई स्पीकर बोल रहा होता है तो उसका हाव-भाव, उसकी बॉडी लैंग्वेज, उसकी वाईस का मॉड्यूलेशन टोन, उसका मुस्कुराना ये सारी चीजें ऐसी हैं जिनको भिन्न-भिन्न वक्ताओं में आप बहुत माईंडली वॉच करेंगे।

**(d)** आप लिस्ट बनाईये कि आज इन पाँच वक्ताओं को तो सुनुंगा ही सुनुंगा। उन पाँचों वक्ताओं को आप सुनिये और सुनने के बाद अपने नोट्स बनाईये कि इनमें किस वक्ता का मुझे बीच-बीच में हंसना बहुत अच्छा लगा, किस वक्ता की मुझे भाषा बहुत पसंद आई, किस वक्ता का लाईव होना मुझे बहुत अच्छा लगा। ये होता है सुनना। सुनना ऐसे नहीं कि हमने ऑन किया और तकिये पर लेटे हैं। हाँ ठीक भाई बोल तू। इतना आलस।

**आप अपने नोट्स बनाए और अच्छे वक्ताओं को सुनें।**

### 2. प्लीज अभी तू रुक, मेरे को सुनने दे

**(a)** सुन रहे हैं तो बीच में अपनी थोट प्रोसेस को थोड़ा रिलेक्स रहने का बोलें। नहीं तो आप सुन नहीं पाएंगे। जैसे मान लीजिये कोई वक्ता बोल रहा है और आप वहाँ पर उसके द्वारा व्यक्त विचारों से थोड़ा भटक रहे हैं तो भगवान के लिए थोड़े समय के लिए अपने दिमाग को बोलें- **''प्लीज अभी तू रुक, मेरे को सुनने दे''** और आप सिर्फ सुनें। दरअसल हम गलती क्या करते हैं कि सुनते समय भी हम अन्दर ही अन्दर लगातार बोल रहे हैं। साउण्ड ना करें, लेकिन हमारा दिमाग कहता है- ऐसे कोई होता है क्या? कुछ भी बोल रहा है। ये सब मत चलने दीजिये। इससे फिर सुनना नहीं हो पायेगा। सुनने के लिये आप बिल्कुल ब्लैंक हो जाईये, शान्त हो जाईये और सुनिये। तब सुन सकेंगे।

## (B) पॉवर ऑफ Reading – बहुत पढ़ना चाहिये

आप अपने वर्कप्लेस पे, बैडरूम में, ड्राईंगरूम में, लिविंग रूम में हर जगह कम से कम एक-एक किताब रखिये और आपको जब भी मौका मिले आप किताब उठाईये और पढ़ने बैठ जाईये। कम्यूनिकेशन में आपके बोलने की भाषा कितनी भी अच्छी हो, कितने भी अच्छे तरीके से आप उसको प्रस्तुत करना जानते हो, लेकिन उसमें मैटर नहीं होगा तो कैसे होगा? तो कंटेंट पर मेहनत करने के लिये एक स्पीकर, एक अच्छे कम्यूनिकेटर को बहुत पढ़ना चाहिये, लगातार पढ़ना चाहिये और जिंदगीभर पढ़ना

गुरु राम

चाहिये।

**(c)** पढ़ने के साधन बहुत सारे हो सकते हैं। किंडल, जिसमें लाखों किताबें आपके पास है, लैपटॉप से पढ़ सकते हैं आदि। फिर भी मैं कहूंगा ये सारे साधनों के बावजूद भी एक बुक खोलकर पढने से जो सीरियस स्टडी होती है, वो कनेक्ट बाकी गैजेट्स से बढ़िया होगा इस पर मुझे शक है। इसलिए आप अच्छी किताबें खरीदते रहिये, अच्छे पेपर्स खरीदते रहिये और उनको लगातार पढ़ते रहिये।

**(d)** पढ़ना जरूरी है क्योंकि आपके अंदर इतना कुछ लगातार जमा होता जायेगा कि जिस समय भी प्रस्तुतिकरण का वक्त आयेगा तो अंदर का ज्ञान बाहर आने लगेगा। बहुत-से लोग बहुत नेचुरल स्पीकर्स होते हैं। उनको किसी भी विषय पर बोलने के लिए कहा जाये, तो वे खड़े होकर बोलना शुरू कर देते हैं। अगर आपको 20 ऑडियंस देख रहे होते हैं तो आपके भीतर का जो बेस्ट इंटनेक्ट होता है ना वो 20 गुणी ज्यादा स्पीड से काम करने लगता है। अगर 100 ऑडियंस सुनेंगे तो 100 गुणी ज्यादा स्पीड से काम करता है। जब हजार ऑडियंस हो तो आपका ब्रेन हजार गुणा ज्यादा तेजी से काम कर सकता है। ब्रेन के पास तो अनलिमिटेड कैपेसिटी है। ये हार्डडिस्क कितने जीबी की है ये अब तक कोई नहीं जान सका।

तो आप सोचिये अगर आपके पास भीतर कुछ है और सामने से चैलेंज जब आता है तो इतना बेस्ट मैटेरियल आपसे बाहर आता है जिसके बारे में खुद आपको अंदाज नहीं होगा। जब आप बोल के खत्म करके बैठेंगे तो आप कहेंगे यार कमाल हो गया। मैं तो यार इतना शानदार बोला! मैं जो लिखा था उससे बढ़िया तो मैं बोल गया। तो वो कब आ सकता है? जब आपके पास स्टॉक में काफी कुछ हो।

### (C) पॉवर ऑफ Thinking – सोचना

**(a)** आप किताब पढ़ रहे हैं और अगर एक चेप्टर खत्म करते हैं तो थोड़ा सा रुकिए। दो मिनट आँखें बंद करिये, गहरी सांस लीजिये और देखिये कुछ भीतर जमा हुआ कि नहीं हुआ। अगर नहीं हुआ तो फिर से पढ़िये उस अध्याय को। हर एक अध्याय पूरा करने के बाद; चाहे वो दर्शनशास्त्र हो, आत्मविज्ञान हो, साहित्य हो, काव्य हो, आपको हमेशा अपने आपको पुन: परीक्षण करना है कि जो आपने पढ़ा वो कुछ भीतर गया कि नहीं गया।

**(b)** अपने आपको टाईम दें। हम एक से एक बड़ी से बड़ी बेहतरीन से बेहतरीन किताबें पूरी पढ़ लेंगे और पढ़ने के बाद हम रख देंगे और दस दिन के बाद उस किताब का कुछ भी हमको याद नहीं रहेगा। हमारा जो ब्रेन होता है वो बहुत ही आलसी किस्म का होता है। अगर हम उसको काम न दें तो वो सिर्फ पढ़ने तक मजा लेगा।

**(c)** हमेशा पढ़ते समय आपके हाथ में नोटबुक और पेन-पेंसिल होने चाहिये। दो, तीन, चार तरह के पेन ले लीजिये। जो लाईनें बहुत ज्यादा आपको अच्छी लगें उस लाईन का आपका कलर कोडिंग हो जाये रेड, कुछ कम टच कर रही है वो ग्रीन, कुछ ब्ल्यू लाईनिंग। ऐसे पूरी किताब को कलरफुल बना दीजिये अलग-अलग लाईंस से और जब आप किताब खत्म कर दें तब आप फिर से शुरू से जाईये और देखिये कि जो रेड लाईंस थी, जिसको आपने सबसे ज्यादा पंच किया क्या वो आप आपके विचार का हिस्सा बनी? अगर नहीं बनी तो कोई बात नहीं, उसे फिर से पढ़िये।

**(d)** जो हम पढ़ रहे हैं उस पर हमारा विचार चलना बहुत जरूरी है। शब्द टू शब्द कोई चीज याद नहीं करनी है, लेकिन जो राईटर कहना चाहता है, जो उसका नेरेटिव है, जो उसका विचार है वो हमारे ब्रेन के भीतर पंच जरूर होना चाहिये। ये एक चीज है जो नियमों के रूप में हमारे स्पीकिंग स्किल पर अब काम करेगी।

गुरु राम

**(D) पॉवर ऑफ Awareness – चारों तरफ क्या चल रहा है**

**(a)** सोशियली, इकोनोमिकली, पॉलिटिकली, साईंटिफिकली, ये जितनी भी लाईफ की चीजें हैं, इन सबके बारे में हमको थोड़ा-थोड़ा पता होना चाहिये। कोई स्प्रीक्चुअल वक्ता है तो वो अपने विषय पर तो बहुत अच्छा जानता है, लेकिन अपने विषय के साथ जीवन की बाकी चीजों के साथ उसकी तारतम्यता करना नहीं जानता है, तो उसकी बातें बहुत ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ पाती।

**(b)** देश में कुछ लोग क्रिकेट में, बॉलीवुड में, पैसे में बहुत रुचि रखते हैं, कुछ बड़ी गाड़ियों में, कुछ गैजेट्स में, कुछ बेहतरीन कॉफी हाऊस में, कुछ फाईव स्टार पर्यटन स्थलों में और कुछ फैशन में। ऐसी मुख्य-मुख्य 10-20 चीजें होती हैं, ज्यादा चीजें नहीं हैं। इन चीजों के बारे में भी आपको पूरी जानकारी होनी चाहिये कि दुनिया में क्या चल रहा है।

**(c)** एक वक्ता को 5-10 मिनिट बोलने के बाद थोड़ा-सा माहौल को हल्का करने के लिए उसके पास दूसरे विषय होने चाहिये और ये दूसरे विषय तब ही आ सकते हैं जब आप इस तरह के विषय, जो जीवन के चारों ओर घूमते हैं उन सबके बारे में आपको पता हो। आपकी रीडिंग सावधानीपूर्वक होनी चाहिये। आजकल सब कुछ आसान हो गया है। आप अपना मोबाइल ऑन कर शॉर्ट न्यूज भी देखते हैं तो आप मात्र 10 मिनिट में पूरे देश के बारे में अपडेट हो सकते हैं। उसमें से आपको लगे कि ये विषय शामिल करने लायक है तो आप उसे डिटेल में पढ़ लीजिये। कहने का मतलब है कि अपडेट रहिये। तो एक वक्ता के रूप में आपकी यात्रा बड़ी शानदार होगी।

**-क्रमशः**

## आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के प्रवचन पर आधारित रिक्त "स्थान की पूर्ति करे" 25-26 जुलाई, 2020 में प्रकाशित का सही हल

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(1) शास्त्रकार ने .....एकेन्द्रिय..... जीव की हिंसा को हिंसा माना है, लेकिन .....पंचेन्द्रिय..... जीव की हिंसा के बराबर नहीं माना।

(2) माँस, चमड़ी, दांत आदि के लिए द्वीन्द्रिय आदि जीवों को मारना .....संकल्पजा..... हिंसा है।

(3) हल जोतने से घर आदि बनाने में जो सूक्ष्म जीवों की हिंसा करना .....आरम्भजा..... हिंसा है।

(4) श्रावक .....चींटी..... को मारने पर अफसोस करता है, लेकिन .....मनुष्य..... पर अत्याचार करने में घृणा नहीं करते।

(5) प्राचीनकाल में आक्रमण करने से पहले .....सूचना..... देते थे, क्योंकि राजा .....निरपराध जीवों..... की हिंसा से बचना चाहते थे।

(6) .....अहिंसा..... कायर का शास्त्र है, यह बात वह ही कह सकते हैं जो अहिंसा का .....स्वरूप..... और .....सामर्थ्य..... नहीं समझते।

(7) .....सात्विकी..... अहिंसा वीतराग प्रभु ही पाल सकते हैं।

(8) .....राजसी..... अहिंसा वह पालता है जो अन्याय के प्रकार के लिए आरम्भ हिंसा करनी पड़ती है।

(9) .....तामसी..... अहिंसा कायरता से उत्पन्न होती है।

(10) तापसी अहिंसा से राजसी अहिंसा .....उच्च..... कोटि की है।

गुरु राम

# जम्बूद्वीप

## 16 विजय शीता महानदी का उत्तरी एवं दक्षिण पार्श्व

- पूजा शाह

उत्तरी पार्श्व विजयों के नाम – 1. कच्छ विजय 2. सुकच्छ विजय 3. महाकच्छ विजय
4. कच्छकावती विजय 5. आवर्त्त विजय 6. मंगलावर्त्त विजय
7. पुष्कलावर्त्त विजय 8. पुष्कलावती विजय

दक्षिण पार्श्व विजयों के नाम – 9. वत्स विजय 10. सुवत्स विजय 11. महावत्स विजय
12. वतसावती विजय 13. रम्य विजय 14. रम्यक् विजय
15. रमणीय विजय 16. मंगलावती विजय

1 व 16 विजय मेरु पर्वत के समीप है एवं 8 व 9 शीता मुखवन के समीप है। प्रत्येक विजय की लम्बाई 16,592 योजन 2 कला तथा चौड़ाई 2,213 7/8 योजन है। इन विजयों में भी वैताढ्य पर्वत एवं गंगा सिंधु नदियाँ है, जो विजयों को 6-6 कुण्ड में विभाजित करती है। वैताढ्य पर्वत, भरत क्षेत्र के वैताढ्य पर्वत के समान है। नवरं विजय का आकार आयत होने से उनकी उत्तर एवं दक्षिण की लम्बाई बराबर है। अत: दोनों श्रेणियों में 55-55 विद्याधर नगर है।

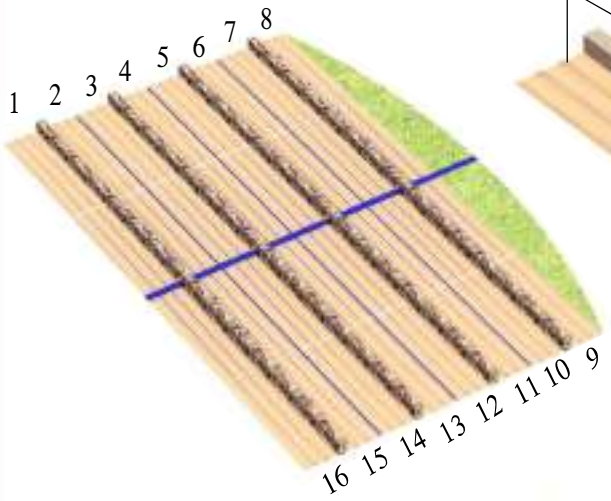


16 विजय पूर्व विदेह में

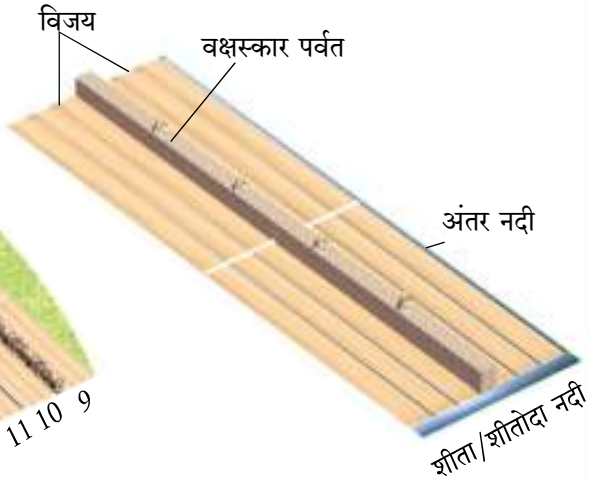


(2 विजय और उसके मध्यम में वक्षस्कार पर्वत)

गुरु राम

# एक और आघात

## राजा हरिश्चन्द्र

गतांक से आगे.....

तारा आज परतंत्र है और इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि उन्हें कोई पांच सौ स्वर्णमुद्राएँ देकर दासीपने से मुक्त करेगा। फिर भी उन्हें अपने पुत्र से इस बात की आशा थी कि वह बड़ा होकर अपने उद्योग से मुझे तथा पति को दासत्व से छुड़ाएगा। इस आशा के सहारे वह दासीपने में भी प्रसन्न थी।

आशा के सहारे किसी न किसी प्रकार तारा के दिन बीत रहे थे, लेकिन अभी भी उनके सत्य की खास कसौटी का होना तो शेष ही था।

नियमानुसार रोहित प्रतिदिन वन से विभिन्न प्रकार के फलों को लाता और तारा उनमें से आप भी खाती और दूसरों को भी देती। यद्यपि तारा इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत कर रही थी, लेकिन हरिश्चन्द्र को सत्य से भ्रष्ट करने की प्रतिज्ञा करने वाले देव से तारा का यह सुख भी न देखा गया और उसने एक बार पुन: राज-दम्पती को सत्य से भ्रष्ट करने की चेष्टा करने का विचार किया।

नित्य की तरह, रोहित वन में गया। वहाँ का प्रत्येक वृक्ष देख डाला लेकिन उस दुष्ट देव की माया से उसे एक भी फल न मिला। फल ढूंढ़ते-ढूंढ़ते काफी समय व्यतीत हो चुका था। अब भूख भी सताने लगी थी। ऊपर से माता की चिंता भी उसे सता रही थी कि यदि मैं बिना फल लिए जाऊँगा तो मुझे माता के भोजन में से ही भोजन करना पड़ेगा और उन्हें भूखा रहना पड़ेगा, जो मेरे लिए सर्वथा अनुचित है। भूख से नितांत विकल होकर, एक वृक्ष के नीचे लेट गया और परमात्मा का स्मरण करने लगा। अचानक समीप ही किसी वस्तु के गिरने की आहट सुनाई दी। उठकर आस-पास देखा तो एक पका हुआ आम का फल दिखाई दिया। प्रसन्न हो कर रोहित ने वह फल उठा लिया और चूसने लगा। फल खाने से रोहित की भूख बहुत कुछ मिट गई।

गुरु राम

पर फिर उसे ध्यान आया कि ऐसा अच्छा फल बिना माँ को दिए मैं अकेला ही क्यों खा गया? अब इस फल के वृक्ष को खोजकर और उस में से फल तोड़कर माता के पास ले जाऊँगा।

इस प्रकार का विचार करके रोहित इधर-उधर उस फल के वृक्ष को देखने लगा। उसे पास ही ऐसे फलों से लदा हुआ एक आम का वृक्ष दीख पड़ा। 'पहले तो इस वृक्ष पर एक भी फल दिखलाई नहीं पड़ा अब तो बहुत सारे हैं! ठीक है, अब माता के लिए ले जा सकता हूँ' -रोहित ने सोचा। जैसे ही वृक्ष पर चढ़ने के लिए वह उसके समीप पहुँचा तो उसकी दृष्टि तने से लिपटे हुए भयानक काले सर्प पर पड़ी। सर्प, उसे देख फुफकारने लगा। लेकिन रोहित वीर बालक था, किंचित् भी भयभीत न हुआ, बल्कि स्वयं सर्प से कहने लगा 'ओ विषधर! तू वृक्ष घेरकर क्यों बैठा है? इस वृक्ष के फलों का अधिकारी मैं हूँ, तू नहीं, अत: यहाँ से चला जा।'

रोहित की इन बातों को सुनकर भी सर्प न हटा, बल्कि पुन: फुफकारा। जब सर्प ने मार्ग न दिया तो रोहित आस-पास की फैली हुई डालियों में से एक को पकड़कर वृक्ष पर चढ़ने लगा, तो सर्प ने दौड़कर उसके पैर में डस लिया। सर्प के डसते ही रोहित छटपटाकर भूमि पर गिर पड़ा और क्षणभर में सारे शरीर में विष फैल गया। **छटपटाते हुए रोहित, आप ही आप कहने लगा - 'माता तारा! आज तुम्हारा रोहित विनष्ट... है। आज से तुम्हें माता कहने वाला न कोई रहेगा। पिताजी... कहाँ हैं... तुम दासित्व के बंधन में जकड़ी हो। विचारता तो था... तुम्हें... बंधन मुक्त... और पिताजी को खोज लाऊँगा लेकिन निराश हो... हो। माता... चिन्ता न करना। मैं वीरों की तरह मर रहा हूँ। तुम्हारी शिक्षा ने...। पिताजी! एक बार... अपने प्यारे... रोहित को देखो! आज... जा रहा हूँ। माताजी को... कौन धैर्य बंधाएगा! लेकिन**

**अब सब चिन्ता छोड... मुझे तो परमात्मा का स्मरण करना... चाहिए जो तिन्नाणं... तारयाणं है। जीव अकेला आता... जाता है। कोई... साथी नहीं। मौत से... कोई नहीं बच सकता। जिस काया पर... घमंड करता है, वह यहीं पड़ी रह जाने वाली है। आत्मा अपने शुभाशुभ कर्मों... का स्वयं फल भोगती है।**

इस प्रकार परमात्मा एवं संसार के स्वरूप का विचार कर रोहित फिर कहने लगा.... माता! मेरा अंतिम प्रणाम्, पर मेरा प्रणाम.... तुम तक पहुँचेगा या नहीं, कौन... तुम्हें पहुँचायेगा। अब तो आप से अंतिम विदा...' कहते-कहते रोहित बेहोश हो गया, जीभ लड़खड़ाने लगी। शारीरिक हरकत बंद होने लगी।

कुछ लोगों ने सर्प द्वारा रोहित को डसते और गिरते देखा था। वे दौड़कर आम के पेड़ के नीचे इकट्ठे हो गए। रोहित को देखकर वे आपस में विचार करने लगे कि न मालूम यह सुन्दर बालक किसका है? देखते-देखते, इसका कोमल शरीर काला पड़ता जा रहा है। बार-बार तारा का नाम लेता है, हो न हो इसकी माता का नाम तारा है। यदि किसी को मालूम हो तो बेचारी को खबर कर दो, जिससे पुत्र का अंतिम बार मुख तो देख ले। इतने में एक ने बताया कि अमुक ब्राह्मण के यहाँ तारा नाम की दासी है। इस बालक को भी उसी के वहाँ देखा है। शायद यह बालक उसी तारा का हो। यह बहुत थोड़ी देर का मेहमान है। बेचारी को खबर कर दो। यह सुनकर आस-पास की भीड़ में खड़े हुए बालक खबर देने के लिए उस ब्राह्मण के घर की ओर दौड़ पड़े, जहाँ तारा रहती थी।

-क्रमशः

संदर्भ- जवाहर किरणावली

कविता

# युवा

मैं युवा हूं, सोच रखता हूं कुछ नया कर दिखाने का।
मुझमें जोश है-सोच को परिणाम तक पहुंचाने का।
हौसला रखता हूं, नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाने का।

सहता हूं पर अपनों तक दर्द पहुंचने नहीं देता।
लड़ता हूं किस्मत से, अपने आप को हारने नहीं देता....
मैं युवा हूं, धरोहर हूं-संघ और समाज की।

संघ के कार्य-समाज के हित को, सदा सर्वोच्च में रखता हूँ।
साधु-संतों के प्रति कर्तव्य, जरूरतमंद की सहायता करता हूँ..
मैं युवा हूं, मान हूं सम्मान हूं अपने परिवार का।

परंपराओं का निर्वाह, सही दिशा भी प्रदान करता हूँ।
दायित्व है परिवार का,
कर्तव्य से मुंह नहीं मोड़ता हूँ।
बड़ों का सम्मान,
छोटों को प्यार-विनम्रता के भाव रखता हूँ।
परिवार को जोड़कर, रिश्तों को सहेज कर
सदैव प्रसन्न रहता हूँ...
यह सब बातें ''परिकल्पना'' है।

मैं ऐसे युवा की बात करता हूं जो है तो मेरे अंदर।
पर बाहर लाने से डरता हूं, ''क्या मैं ऐसा युवा हूँ?

- श्रमणोपासक

गुरु राम

# स्वदेशी को महिलाओं का सहारा

-मोनिका ओस्तवाल

स्वदेशी अर्थात् स्वयं के देश का। हम सब स्वदेशी के अर्थ से भलीभांति परिचित हैं, पर क्या मात्र अर्थ जान लेना ही सब कुछ है। अर्थ की सार्थकता तभी होती है जब उस पर कार्य किया जाए, उसे अपनाया जाए, उसे व्यवहार बनाया जाए।

स्वदेशी अपनाने की बात करें तो प्रश्न उठता है कि आखिर कैसे ये संभव हो क्योंकि चाइनीज सामान हमारे देशवासियों की रोजमर्रा की जिंदगी में पानी में नमक की तरह से घुल गए हैं, जिसके बिना स्वाद नहीं आता। परंतु हमें यह भी नहीं भूलना है कि पानी में यदि नमक के साथ शक्कर मिला दी जाए तो वह काफी हद तक नमक के स्वाद को कम कर देती है और यह कार्य सिर्फ और सिर्फ महिलाओं द्वारा किया जा सकता है। सिर्फ और सिर्फ महिलाएँ ही हैं जो चाइनीज सामान के खारेपन को खत्म करके भारतीय सामान की मिठास घोल सकती हैं।

प्रश्न यह उठता है कि महिलाएँ ऐसा कैसे कर पायेंगी? तो इसे एक बहुत ही सुंदर उदाहरण से समझा जा सकता है। पर्वाधिराज पर्युषण में किसी भी महिला द्वारा जैन परिवारों में हरी सब्जी नहीं पकाई जाती। चाहे बाजार में उन आठ दिनों के दौरान कितनी भी सस्ती सब्जी क्यों ना मिल रही हो या घर के सदस्य खाना सही से ना खा रहे हों, फिर भी वह महिला अपनी एड़ी-चोटी का जोर लगाकर परिवार के सदस्यों खासतौर से बच्चों को समझा-बुझाकर स्वाद बदलकर खाना खिलाती है, परंतु अपने नियम से पीछे नहीं हटती। उसी तरह यदि प्रत्येक महिला यह दृढ़ नियम कर ले कि हमें Made in India ही खरीदना है, Made in China किसी भी परिस्थिति में अब घर में नहीं लाना है, चाहे उस वस्तु के बिना ही क्यों न रहना पड़े। चूंकि महिलाओं के हाथ में पूरे घर की बागडोर होती है और इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि एक-एक महिला यदि अपने घर से शुरुआत करे तो सम्पूर्ण देश से चाइनीज सामान का बहिष्कार हो जाएगा और यह देश की हर बहिन की मिठास होगी, रक्षाबंधन पर अपने फौजी भाइयों के लिए। क्योंकि हमारी सेना तो रक्षा का फर्ज निभा ही रही है, परन्तु बहिनों को भी एक कदम आगे आना ही होगा। अब सिर्फ अपने घरों की नहीं बल्कि पूरे देश की बागडोर महिलाओं के हाथ में है।

बच्चों की स्टेशनरी से लगाकर घर के हर इलैक्ट्रॉनिक आइटम, महिलाओं की ज्वैलरी से लगाकर उनके कॉस्मेटिक्स, किचन की क्रॉकरी से लगाकर परिवार के गैजेट्स, सभी पर मेड इन इंडिया देखें और फिर ही खरीदें। ऐसा नहीं है कि भारत में ये सब नहीं बनता है। बनता है और बहुत अच्छी क्वालिटी में बनता है। अपनी सोच को थोड़ा तीक्ष्ण बनाएँ। खूबसूरती और सस्तेपन पर न जाएं क्योंकि कहावत है कि हर

गुरु राम

श्रावक! तू पूरे विश्व का विरल है, तू विशेष है।

पीली चीज सोना नहीं होती है।

चाइना के सामान का इतना भी भरोसा नहीं कि आप दुकान से खरीद कर घर पहुँचें तब तक भी चलेगा! इसकी क्वालिटी एकदम घटिया तो है ही साथ ही यह हमारे शरीर के लिए भी हानिकारक है। एक सर्वे में बताया गया था कि चाइनीज चप्पल पहनने से आँखें खराब हो जाती है और उसमें कुछ ऐसा सामान प्रयोग किया जाता है जो हमारे सोचने-समझने की शक्ति कम कर देता है। अत: सभी महिलाओं से निवेदन है कि देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझें और चाइनीज सामान का बहिष्कार करें। यदि आपने बहिष्कार नहीं किया तो आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा, परंतु आने वाले कुछ वर्षों में देश की अर्थव्यवस्था को बहुत बड़ा खतरा हो सकता है और हमारे खरीदे हर एक सामान की कीमत सीमा पर तैनात फौजी अपनी जान से चुकाएगा।

ऐसा होने से रोकने के लिए देश की हर एक महिला को कदम उठाना होगा।

-ब्यावर (राज.)

●●●

कविता

# विजयादशमी रा दूहा

-स्व. डॉ. नरेन्द्र भानावत

**विश्वशांति री जानकी, कलपै आठूं याम।**
**रावण ज्यूं हरकत करै, आज शौकीया राम।।**

**समता सीता नत झुरै, भटक विषय बन माय।**
**जी अशोक है शोक री, फूंके हरदम लाय।।**

**रावण रा पुतला जलै, जलै न विषय विकार।**
**ई कारण जुग-जुग वधै, रावण रो संसार।।**

**घर-घर रावण पनपिया, अपहृत वै श्री राम।**
**लक्ष्मण, हणुमण साथ नीं, सीता चढ़ै नीलाम।।**

**विजयादशमी तूं बता, कठै विजय रा भाव?**
**कठै राम री शक्ति वा, कठै उमंग-उमाव?**

**मन री लंका में लड़ै, रावण-राम हमेश।**
**'अवध' भावना जै जगै, मिटै द्वेष नै क्लेश।।**

**संजम बिन न जगै, संजम जय रो मूल।**
**संजम काटै वासना, ऊसर ऊगै फूल।।**

-श्रमणोपासक

●●●

गुरु राम

श्रावक! तू पूरे विश्व का विरल है, तू विशेष है।

कविता

# जीने का तरीका बदलना होगा

-विजय जसराज जैन

अब सब कुछ नये सिरे से शुरू हो जायेगा
हौले-हौले सब पहले-सा बेहतर हो जायेगा
हर चेहरे पर अब एक नयी उमंग होगी
लेकिन हम पर कुछ बंधनों की शृंखला होगी
हमारा भविष्य महफूज रखने के लिए
हमें इन बंधनों को स्वीकार करना होगा
हमारा जीवन जीने का तरीका भी अब हमें बदलना होगा
सड़कों, गलियों में घूमना
अपनों और दोस्तों से मिलना आसान हो जायेगा
लेकिन बेवजह घर से बाहर जाना घातक हो जायेगा
सोशियल डिस्टेंसिंग ही बीमारियों से दूर रहने का एकमात्र मंत्र कहलायेगा
चेहरे पर मास्क लगाना अब सुरक्षा की नई पहचान बन जायेगा
बेदाग फिजाएँ होंगी, सुरीली हवाएँ होंगी
नदियों में पानी की निर्मल धाराएँ होंगी
प्रकृति के हर जर्रे में खुशियों की नयी तरंगें होंगी
हमारे आस-पास फैल रही गंदगी को हमें ही रोकना होगा
सड़कों पर थूकने वालों को अब हमें टोकना होगा
फूलों में भी जब जान है, उसको अपनी शाखा से टूटा हुआ देख
भगवान् खुश नहीं नाराज होता होगा
हमें उन फूलों को अब उनकी शाखाओं पर ही महकने देना होगा
भगवान् पत्थरों में नहीं इंसानों में होते हैं
हमें अब भगवान् को फूलों के हार से नहीं
इंसानियत और एक-दूसरे की सहायता से ही प्रसन्न करना होगा
हमारे हर जन्मदिन पर एक पेड़ लगाने का सिलसिला अब शुरू करना होगा
बीमारियों को दूर रखने के लिए हमारी धरा को हरियाली से महकाना होगा
हमें कुदरत की इस नजाकत को अब बरकरार रखना होगा
इसकी खूबसूरती से खिलवाड़ करने वालों को अब हमें रोकना होगा।

-श्रमणोपासक

लेख

# श्री उत्तराध्ययन सूत्र - महला अध्ययन

-सरिता

श्री उत्तराध्ययन सूत्र भगवान् महावीर की अंतिम देशना है। इसमें अनेक ज्ञानरूपी तत्त्वों का समावेश है, जिनसे साधक को सम्यक् प्रकार से चिन्तन करने की प्रेरणा मिलती है।

इस मूल सूत्र की महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसमें भगवान् ने इस शास्त्र में 'विनय' के विषय पर देशना दी थी। इस दुर्लभ मनुष्य भव की प्राप्ति का सद्उपयोग तथा इसे सफल बनाने के लिए हमारा सम्यक्त्व सहित विनयशील होना अतिआवश्यक है। इससे ही साधक अपने अनंतानंत भवभ्रमण को नष्ट कर सकता है। ऐसे जीव उत्कृष्ट अर्ध-पुद्गल परावर्तन काल में अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करता है।

सम्यक्दृष्टि बनने का पहला कदम विनय है। विनय प्रगति का बीज मंत्र है, जो अहंकार को शून्य करके ज्ञान ग्रहण करने में हमें पात्र बनाता है। जिस प्रकार छिद्रित पात्र में पानी नहीं ठहरता है, उसी प्रकार अविनीत शिष्य को सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्दर्शन प्राप्त करने में असफलता की प्राप्ति होती है। विनय लगता बहुत सरल है किन्तु कई विनयशील व्यक्ति भी कषाय से प्रभावित होकर विनय भाव को नष्ट कर देते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि विनय और कषाय का कोई तालमेल नहीं होता है तथा कषायों पर अंकुश रखना भी आवश्यक है। विनय या तो होता है या नहीं होता।

कई बार व्यक्ति बाह्य रूप से नम्र दिखते हैं किन्तु भीतर से अकड़े रहते हैं। अत: अहंकार आदि कषायों की उपस्थिति में विनय केवल औपचारिकता है।

**एक सूफी सन्त के पास एक व्यक्ति आया। उसने नमस्कार कर निवेदन किया कि कुछ जिज्ञासा है।**

**संत ने कहा- पहले झुको।**

**व्यक्ति ने कहा- मैंने नमस्कार किया। क्या आपने नहीं देखा ?**

**संत ने मुस्कुराते हुए कहा- मैं शरीर से झुकने की बात नहीं कर रहा। तुम्हारा अहंकार झुका नहीं हैं, उसे झुकाओ।**

भीतर का अहंकार नष्ट होगा तभी हमारे शब्दों में आदर-सम्मान एवं व्यवहार में सरलता उत्पन्न होगी। इसके पश्चात् ही 'गुरु ने जो कहा वही तथ्य सत्य है' मानने वाला गुरु के अनुशासन को विनम्रतापूर्वक सुनता है तथा ज्ञान ग्रहण करने का पात्र बनकर विचरण करता है तथा अविनितता का त्याग करता है। विनय (नमस्कार) से सामने वाले (देव, गुरु, धर्म) को कोई फायदा नहीं होता। इसका फल सिर्फ विनयी को ही प्राप्त होता है। इसलिए श्री उत्तराध्ययन सूत्र में ऐसे विनीत शिष्य के संबंध में यह गाथा दी है-

''स पूज्जसत्थे सुविणीयसंसए मणोरूई चिट्ठई कम्म संपया।
तवीसमायारिसमहिसंवुड़े महज्जुई पंच वयाइं पालिया।।''

अपना हित चाहने वाले जीव को देव, गुरु, धर्म का शरण ग्रहण करके गुरु के अनुशासन को स्वीकार करना चाहिये। जो गुरु के अनुशासन को स्वीकार नहीं करता है तथा अहोभाव नहीं रखता है ऐसे अविनीत शिष्य मोक्ष सुख को प्राप्त नहीं करते। इसलिए श्री उत्तराध्ययन सूत्र में ऐसे अविनीत शिष्य के संबंध में यह गाथा दी है-

''कण-कण्डगं चऽत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरे।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीले रमई मित्र।।''

## विनयाघाति पात्रताम्

किसी नगर में एक सिद्ध पुरुष रहता था। उसके दो शिष्य थे। गुरु का दोनों पर समान स्नेह था। दोनों शिष्यों में से एक बड़ा विनयवान् था।


सत्ता का उपयोग सम्पत्ति बटोरने के लिए नहीं होना चाहिये, उसका सही उपयोग सेवा है।

अत: गुरु जो आज्ञा देते उसका यथावत् पालन करता तथा जो भी सिखाते उस पर निरन्तर चिन्तन-मनन करता रहता था। चिन्तन करने पर जिस विषय में उसे किसी प्रकार की शंका होती उसे समझने के लिए गुरु के समक्ष उपस्थित होता तथा विनयपूर्वक उनकी चरण वंदना कर शंका का समाधान कर लिया करता था। किन्तु दूसरा शिष्य अविनीत था और बार-बार गुरु से कुछ पूछने में भी अपना अपमान समझता था।

एक बार गुरु की आज्ञा से दोनों शिष्य किसी गाँव को जा रहे थे। मार्ग में उन्हें बड़े-बड़े पैरों के पद्चिह्न दिखाई दिये। अविनीत शिष्य ने अपने गुरु भाई से कहा- ''लगता है कि ये पद्चिह्न किसी हाथी के हैं।'' उत्तर देते हुए दूसरा शिष्य बोला- ''नहीं मित्र! ये पैरों के चिह्न हाथी के नहीं, हथिनी के हैं। वह हथिनी वाम नेत्र से कानी है। इतना ही नहीं, हथिनी पर कोई रानी सवार है और वह सधवा तथा गर्भवती भी है। रानी आजकल में ही पुत्र का प्रसव करेगी''। यह सुनकर अविनीत प्रश्नकर्ता शिष्य चुप हो गया और दोनों चलते-चलते कुछ समय पश्चात् अपने गन्तव्य ग्राम तक पहुंच गये। उन्होंने देखा कि ग्राम के बाहर एक विशाल सरोवर के तीर पर किसी अतिसम्पन्न व्यक्ति का पड़ाव हुआ है। तम्बुओं के एक ओर बाँयें नेत्र से कानी एक हथिनी भी बंधी हुई है। ठीक उसी समय दोनों शिष्यों ने यह भी देखा कि एक दासी ने महाराज को कहा- 'बधाई हो' राजकुमार का जन्म हुआ है।

तत्पश्चात् दोनों सरोवर में हाथ पैर धोकर एक वट वृक्ष के नीचे विश्राम हेतु बैठ गये। कुछ समय पश्चात् एक वृद्धा स्त्री अपने मस्तक पर पानी का घड़ा लिए हुए उधर से निकली। वृद्धा की नजर उन दोनों पर पड़ी। उसने सोचा- ''ये दोनों विद्वान मालूम होते हैं क्यों न इनसे पूछूं कि मेरा विदेश गया हुआ पुत्र कब लौटकर आयेगा?'' यह विचार कर वह शिष्यों के समीप गई और प्रश्न करने लगी। किन्तु उसी समय उसका घड़ा सिर से गिरा और फूट गया। सारा पानी मिट्टी में समा गया। यह देखकर अविनीत शिष्य झट बोल पड़ा- ''बुढ़िया! तेरा पुत्र घड़े के समान ही मृत्यु को प्राप्त हो गया है।''

वृद्धा सन्न रह गई किन्तु उसी समय दूसरे ज्ञानी शिष्य ने कहा- '' मित्र, ऐसा मत कहो, इसका पुत्र तो घर आ चुका है।'' वृद्धा स्त्री को कहा- ''तुम शीघ्र घर जाओ, तुम्हारा पुत्र तुम्हारी प्रतिक्षा कर रहा है।'' वृद्धा की जान में जान आई। घर पहुंचते ही देखा कि उसका पुत्र उसकी प्रतीक्षा में बैठा है। हर्ष-विह्वल होकर उसने पुत्र को अपने कलेजे से लगा लिया। अविनीत शिष्य ने जब यह देखा कि मेरी बातें मिथ्या सिद्ध होती हैं और मेरे साथी की सत्य, तो वह दु:ख और क्रोध से भरकर सोचने लगा यह सब गुरुजी के कारण ही हो रहा है।

तुरन्त ही वह गुरु से बोला- ''आपने मुझे सम्यक् रूप से नहीं पढ़ाया है, इसलिए मेरा ज्ञान असत्य है और इसे मन लगाकर पढ़ाया है, अत: इसका ज्ञान सत्य। आपने पक्षपात किया है।''

गुरुजी यह सुनकर चकित हुए। उन्होंने अपने विनीत शिष्य से पूछा- 'वत्स क्या बात है? किन घटनाओं के आधार पर तुम्हारे गुरुभाई के मन में ऐसे विचार आए?'' विनीत शिष्य ने मार्ग में घटी हुई घटनाएँ ज्यों की त्यों कह सुनाई।

विनीत शिष्य की बात सुनकर गुरु ने स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए उसकी प्रशंसा की। अविनीत शिष्य से कहा- 'देख, तू न मेरी आज्ञा का पालन करता है और ना ही अध्ययन किये हुए विषय पर चिन्तन मनन करता है। ऐसी स्थिति में तुम सम्यक्ज्ञान का अधिकारी कैसे बन सकता है? मैं तो तुम दोनों को सदा ही साथ बैठाकर एक सरीखा विद्याभ्यास कराता हूँ किन्तु - **'विनयाघाति पात्रताम्।'** यानी विनय से पात्रता, सुयोग्यता प्राप्त होती है। तुम में विनय का अभाव है, इसलिए तुम्हारा ज्ञान भी सम्यक् नहीं है।''

गुरु के वचन सुनकर अविनीत शिष्य लज्जित होकर मौन रह गया।

-कोलकात्ता

लेख

# इंगियागार संपण्णे : बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय-प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी

-संपतराज रांका

परमश्रद्धेय, रत्नत्रय के महान् आराधक श्रीमद्जैनाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के पावन चरणों में सविधि सविनयपूर्वक वंदन। आचार्य-प्रवर ने चतुर्विध संघ पर महती कृपा करके श्रद्धेय, तपस्वी, ज्ञानी-ध्यानी, बहुश्रुत, वाचनाचार्य श्री राजेशमुनिजी म.सा. को उपाध्याय-प्रवर पद की गरिमा से सुशोभित किया। उपाध्याय-प्रवर श्री के जीवन चरित्र के बारे में लिखना मेरे लिए कठिन है, परन्तु कुछ स्वानुभूति के प्रसंग एवं चतुर्विध संघ के सदस्यों से भी मैंने सुने, ऐसे पवित्र जीवन से जुड़ी चन्द अनमोल स्मृतियों को शब्दों में पिरोने का प्रयास कर रहा हूँ।

**अत्यंत पुण्यशाली जीव :** आपश्री चिकित्सक बनना चाहते थे। श्रद्धेय आचार्य-प्रवर से सुना हुआ है कि आपश्री के हृदय में वैराग्य, नानेशवाणी की पुस्तक ''ऐसे जीएं'' के स्वाध्याय से प्रस्फुटित हुआ। आपको इस सदी के दो महान् आचार्यों का सान्निध्य मिला। जिन्होंने साधुत्व की परिभाषा को आचरण में लाकर ज्वलंत रखा, और शुद्धाचार का बिगुल बजाया। जिनको जैन समाज में भगवान् महावीर की श्रमण संस्कृति की अनमोल धरोहर के रूप में जाना जाता है।

**प्रेरणास्पद पाँच समिति एवं तीन समिति के शुद्ध आराधक :** हावड़ा-कोलकाता चातुर्मास के प्रसंग पर गोचरी सेवा में साथ जाने का प्रसंग बना। 42 दोष टालकर भिक्षा ग्रहण करना इस पंचमकाल में भी चतुर्थ आरे की बानगी के रूप पाकर चतुर्विध संघ गौरवान्वित हैं, अभिभूत हैं।

**मुनि जीवन का प्राण-अहिंसा :** आप कई बार फरमाते हैं कि मुनि जीवन का प्राण ही अहिंसा है। मुनि का रोम-रोम सत्य और अहिंसा से प्रस्फुटित होना चाहिये। ऐसे कई प्रसंग देखे गए, सुने गए कि आपश्री 6 काया के जीवों की रक्षा के लिए सदैव जागरुक एवं तत्पर रहते हैं। आपके द्वारा किसी भी जीव को तनिक भी कष्ट नहीं पहुँचाने का ध्येय प्राथमिकता पर रहता है।

**इंगियागार संपण्णे :** जो शिष्य गुरु के उपपात में रहे, वहाँ यह अवस्था भीतर से प्रस्फुटित होती है। जो विनयी है, उसके भीतर विशेष प्रतिभा प्रवाहित होती है। वो शिष्य जान लेता है कि किस समय गुरु के नेत्र का किस प्रकार प्रस्फुटन होता है। हाथ उठता है अथवा हाथ की विशिष्ट मुद्रा का क्या अर्थ होता है, यह उनके उपपात में रहकर ही समझा जा सकता है कि अमुक स्थिति में यह क्रिया होती है। इस प्रकार के अनुभव से उनके हृदय में निर्देश अवस्थित होते जाते हैं और गुरु का जिधर इशारा हो, उधर ही गति करने लग जाते हैं। श्रद्धेय उपाध्याय- प्रवर का जीवन भी आचार्य श्री रामेश के प्रति समर्पित एवं इंगियागार संपण्णे से युक्त है।

**निष्काम सेवा :** आचार्य भगवन् के अलावा भी रुग्ण चारित्रात्माओं की सेवा आप निष्काम भाव से करते हैं। रतलाम वर्षावास में स्वर्गस्थ श्री नन्दनमुनिजी म.सा., जो कैंसर से पीड़ित थे, उनकी उत्कृष्ट सेवा जिनशासन में अनुपम सेवा का उदाहरण है। ऐसे अनेक निष्काम सेवा कार्यों के प्रसंग से आपका जीवन अभिष्ठित है।

**तपस्वीराज :** बेले-बेले की तपस्या एवं एकासन से पारणा करना आज भी, पूज्य आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. की तप की अनुगूंज सम्पूर्ण चतुर्विध संघ को सुनाई दे रही है।

**बहुश्रुत :** आपश्री के प्रवचन आत्म-केन्द्रित होते हैं, जो भव्य जीवों को मोक्ष की राह के लिए प्रशस्त करते हैं। आपश्री कम शब्दों में आगमों का सार बता देते हैं। आगमों के गूढ़ रहस्यों को आप सरलता से प्रतिपादित करते हैं। दोपहर की वाचनी में आपश्री के

गुरु राम



सत्ता प्राप्ति के बाद सावधानी की जरूरत है।

प्रश्नोत्तर सुनकर सम्पूर्ण चतुर्विध संघ भाव-विभोर हो जाता है।

**सत्य एवं निस्पृहता :** आपश्री का जीवन ही सत्य एवं निस्पृहता की एक अनुपम मिसाल है। सत्य एवं निस्पृहता से प्रतिबिम्बित आपश्री का जीवन सदैव आत्मचिंतन तथा ज्ञान-दर्शन, चारित्र एवं तप में ही गतिशील रहता है।

**दूरगामी-दूरदृष्टि :** चतुर्विध संघ में ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप में अभिवृद्धि कैसे हो उसके लिए आपश्री का चिंतन सदैव दूरगामी रहता है। किसी भी कार्य को करने से पहले उसके उद्देश्य को लेकर आगे की कार्यशैली का नियोजन (Planning) पहले किया जाता है। मुख्य उद्देश्य को केन्द्रित किया जाता है, ताकि कार्य को करने में अवरोध ना हो। कौन क्या कर रहा है, उसका चिंतन नहीं, हमें क्या करना है, उसका चिंतन सदैव रहता है।

आप गंभीर हैं, छल-प्रपंच से रहित हैं, किसी का तिरस्कार न करने वाले, सब पर मैत्री भाव रखने वाले हैं। पराये दोष न देखने वाले, शत्रु की निन्दा न करने वाले, इन्द्रियों का दमन करने वाले, ऐसी महिमा से मण्डित, जिन नहीं, फिर भी जिन के समान, साक्षात् ज्ञान का प्रकाश करने वाले श्री उपाध्याय प्रवर हैं। संपूर्ण जिनशासन एवं साधुमार्गी परिवार गौरवान्वित है। आप दीर्घायु हों, भव्य जीवों को अज्ञान के अंधकार से, ज्ञान के आलोक में प्रशस्त करें, यही हमारी मंगलकामना।

-मुम्बई (महाराष्ट्र)

●●●

## वीतरागी बनना-मौलिक सिद्धान्त

श्रद्धेय उपाध्याय-प्रवर ने ध्यान साधना में चिंतन का स्वरूप कैसा हो, उसके लिए निम्न भाव फरमाए :-

- मैं अनंत शक्ति सम्पन्न हूँ।
- मैं प्रतिक्षण इस बात के लिए जागृत हूँ कि मेरे भीतर लेशमात्र भी संक्लेश भाव नहीं उभरें।
- मैं किसी भी व्यक्ति, किसी भी वस्तु, किसी भी वातावरण या परिस्थिति के संयोग या वियोग से सर्वथा अप्रभावित रहता हूँ।
- मैं न सफलता पाने पर किंचित् मात्र भी प्रसन्न होता हूँ, न विफलता पाने पर लेशमात्र भी खिन्न होता हूँ, चाहे वो सफलता-विफलता धन, वैभव एवं साधना की ही क्यों न हो।
- मैं इस बात का बिल्कुल भी विचार नहीं करता कि कौन मुझे कैसा समझ रहा है। कौन मेरे प्रति क्या सोचता है। कौन मेरे प्रति क्या कहता है और मेरे प्रति किसका क्या दृष्टिकोण है? बल्कि मैं इस बात के लिए जागृत रहता हूँ कि मैं सही कर रहा हूँ या गलत, मैं अच्छे रूप में देखा जाना नहीं चाहता हूँ, लेकिन मैं सचमुच अच्छा रहना चाहता हूँ।
- मैं लोगों द्वारा मेरे प्रति किए गए अच्छे या बुरे विचारों को, अच्छे या बुरे वचनों को, अच्छी या बुरी प्रवृत्तियों को कभी भी मन में दोहराता नहीं हूँ।
- साथ ही मैं किसी भी व्यक्ति की गलती या दुर्गुण को बार-बार कहता या सोचता नहीं हूं।
- मैं हर परिस्थिति को जीवन विकास का साधन मानता हूँ और उस परिस्थिति में पूर्ण सम्यक्त्व भाव को टिकाए रखने के लिए मानसिक तौर पर उद्यमशील रहता हूँ अर्थात् मैं किसी भी परिस्थिति में प्रसन्न, सुखी एवं सहज रहने के बिंदुओं का अनुसंधान करता रहता हूँ।

**उपरोक्त चिंतनमणियाँ हमारी ध्यान साधना में आत्मसात करने का निरन्तर अभ्यास करेंगे तो हमारे जीवन में सम्यक्त्व भाव सुदृढ़ होने लग जायेगा। हम सिद्धत्व बनने की राह की ओर प्रशस्त होने लग जायेंगे। यही हमारे जीवन का मुख्य लक्ष्य होना चाहिये।**

गुरु राम

कहानी

# द्विमुखता स्तम्भ की ओर अपनी

पांचाल देश में कम्पिलपुर की राज्यसभा में वहाँ के यव राजा की प्रशंसा में बाहर से एक बारहठ आया हुआ था। यव राजा और उसकी महारानी गुणमाला दोनों वास्तव में गुणों के भंडार ही थे और इसी कारण वे प्रजावत्सल भी थे। दोनों परम धार्मिक थे तथा जैन धर्म की निष्ठापूर्वक आराधना करते थे। राजा, प्रजा के सुख-दु:ख का सदा ध्यान रखता था और स्वयं को प्रजा का सेवक समझता था। अत: अपनी प्रशंसा सुनकर यव राजा बोला- बारहठ जी! मुझे अपनी प्रशंसा सुनने में कोई रुचि नहीं है। मैं आपसे एक अन्य तथ्य की जानकारी करना चाहता हूँ।

राजन्! यह आपकी महानता है किन्तु गुणों की अनुशंषा करना मेरा भी कर्तव्य है। आप आज्ञा करें -चारण ने अधिक विनम्र होकर निवेदन किया।

बारहठ जी! आप अनेक राज्यों में भ्रमण करते हैं तथा वहाँ की विशेषताओं एवं व्यवस्था का अवलोकन करते हैं। इससे आपको विविध तथ्यों की जानकारी होती है। आप मेरे राज्य में आए हैं- यहाँ की विशेषताएँ एवं व्यवस्था भी आपने देखी होगी। कृपा करके बतावें कि अन्य राज्यों की तुलना में यहाँ कमी किस बात की है? आपका कथन तथ्यात्मक होगा।

आपकी जिज्ञासा उचित है नरेश, इस राज्य में भी सभी प्रकार से सुव्यवस्था है तथा सभी सुविध एवं शोभा स्थानों की उपलब्धता है। हाँ, एक कमी मुझे अवश्य दिखाई दी, वह है एक चित्रशाला की कमी। कला का समुचित विकास सम्पादित करने की दृष्टि से राज्य में एक चित्रशाला भी होनी ही चाहिए। आपका सुझाव सही है। मैं भी अपने राज्य में एक सर्वांग सुन्दर चित्रकला का शीघ्र निर्माण कराऊंगा -राजा ने कहा और चारण को उदारतापूर्वक उपहार देकर विदा किया।

तब राजा ने अपने मंत्री को आदेश दिया- मंत्रीजी! आप देश-परदेश से कुशल चित्रकारों को बुलवाइए तथा उनकी सम्मति के अनुसार एक चित्रशाला का निर्माण करवाइए। अद्भुत चित्रांकन के साथ वह चित्रशाला ऐसी अनुपम होनी चाहिए कि दूर-दूर से लोग उस विख्यात चित्रशाला को देखने के लिए मेरे राज्य में आएँ और वे यहाँ समुचित आतिथ्य-सत्कार प्राप्त करें।

मंत्री ने करबद्ध होकर कहा- ''महाराज! आपकी आज्ञानुसार तुरन्त ही चित्रशाला का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया जाएगा'' और सारा कार्य यथानिर्देश एवं यथाविधि आरम्भ हो गया। जब चित्रशाला की नींव का खनन कार्य शुरू किया गया तो कुदालियों की मार के बीच अकस्मात् एक दिव्य रत्नजड़ित मुकुट प्रकट हुआ। वह रत्नजड़ित मुकुट राजा यव को भेंट किया गया। राजा अपने सज्जा कक्ष में पहुँचा तथा एक विशाल दर्पण के समक्ष खड़ा हो गया। उसने उस मुकुट को अपने मस्तक पर रखा।

परन्तु यह क्या? दर्पण में अपनी मुखाकृति देखकर वह परम आश्चर्य में डूब गया। उस मुकुट को धारण करने से उसके एक के स्थान पर दो मुख दिखाई देने लगे थे। मुकुट उतार कर देखा तो एक मुख था। फिर मुकुट धारण किया तो फिर से दो मुख दृश्यगत होने लगे। इससे वह राजा तदनन्तर द्विमुख के नाम से जाना जाने लगा।

द्विमुख- यह स्थिति राजा के लिए रहस्यमय ही बनी रही। कई बार निराश होकर वह उस पर सोचना त्याग देता, किन्तु उसका अन्तर्मन नहीं मानता और वह पुन: विचारमग्न हो उठता उसके रहस्य को खोज निकालने के लिए।

उधर चित्रशाला का निर्माण कार्य बड़ी तेजी से चलने लगा। जब निर्माण कार्य सम्पूर्ण हो गया तो उसमें चित्रांकन एवं सज्जा का कार्य आरम्भ हुआ। सब कुछ सर्वांग सुन्दर बनाने का सभी सत्प्रयास करने लगे। राजा भी उस चित्रकारी से पूर्ण सन्तुष्ट था।

कुछ समय पश्चात् इन्द्र महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। उसके लिए नगर के मध्य में एक अतीव सुन्दर एवं सुशोभित स्तम्भ खड़ा किया गया। उस काष्ठ स्तम्भ को बहुमूल्य वस्त्रालंकारों से इस प्रकार कलापूर्वक सज्जित किया गया कि

गुरु राम

उसकी शोभा देखते ही बनती थी, जैसे वह काष्ठ का न होकर एक जीवन्त स्तम्भ हो। राजा ने जब आरोहण क्रिया सम्पन्न की तो उसका ध्यान उस स्तम्भ की ओर सूक्ष्मता से आकर्षित हुआ। वह उसे बड़ी देर तक पैनी दृष्टि से देखता रहा। वह आश्चर्यान्वित था कि क्या ऐसी अपूर्व सज्जा से युक्त स्तम्भ की रचना भी की जा सकती है? वह उसे चमत्कृति लगी। उसके आनन्द का पार नहीं रहा। उस स्तम्भ रचना ने जैसे उसकी चित्रशाला के निर्माण को सार्थक बना दिया। उस स्तम्भ की शोभा उसके हृदय में बस गई।

चूंकि उस स्तम्भ की रचना इन्द्र महोत्सव के लिए ही विशेष रूप से की गई थी इस कारण महोत्सव के बाद उस स्तम्भ को वहाँ से हटा लिया गया था और अनुपयोगी मानकर उसे एक कोने में पटक दिया गया था।

भव-भवान्तर में भ्रमण करते हुए किसी भी भव्य आत्मा के समक्ष ऐसा अवसर अवश्य उपस्थित होता है कि उसे प्रतिबोध प्राप्त हो। वैसा प्रतिबोध किन्हीं महापुरुष के उपदेश श्रवण से हो सकता है या किसी अन्य निमित्त से भी। किसी भव्य आत्मा को आन्तरिक चिन्तन से भी ऐसा प्रतिबोध प्राप्त हो सकता है जो किसी बाकृ पदार्थ को देखने से उत्प्रेरित हो। ऐसे प्रतिबुद्ध पुरुष प्रत्येक बुद्ध कहलाते हैं। यह द्विमुख राजा भी प्रत्येक बुद्ध हुआ।

कालान्तर में एक दिन उस राजा को अपने नगर भ्रमण की इच्छा हुई। घूमते हुए राजा की दृष्टि एक कोने में रखे एक विद्रय पदार्थ की ओर मुड़ गई। वह उसके पास चला गया, क्या देखता है कि एक काठ का लठ्ठा पड़ा हुआ है, उस पर चढ़े वस्त्रालंकार छिन्न-भिन्न हो गए हैं एवं बुरी तरह से धूल-धुसरित भी। यहाँ तक कि वह स्तम्भ पूरी से उघड़ा हुआ है। महाराज को स्मरण हुआ कि इन्द्र महोत्सव के लिए एक सुन्दर स्तम्भ की रचना की गई थी और उसका रूप-स्वरूप आज भी उनके हृदय में बसा हुआ है। नगर रक्षक ने बताया कि ये शोभाहीन काठ का लट्ठा वही है।

राजा तो उस तथ्य को जानकर जैसे अपने आप में खो गया। वह जहाँ खड़ा था, वैसा ही खड़ा रहा। उसकी विचारधारा का प्रवाह त्वरित गति से प्रवाहित होने लगा- क्या यह अपरूप वही सुन्दर स्तम्भ है, जो मुझे उस समय इतना अधिक भा गया था? आज आकर्षक दिखाई देने वाला दृश्य क्या इसी प्रकार कल विद्रूप हो जाता है?

जैसे राजा के मनमानस में दीर्घकाल से जमी रहस्य की परतें एक-एक करके हटने लगीं। उसकी अनुभूति जागृति के क्षणों में जैसे प्रकाशवती हो उठी। क्या यही तो द्विमुखता नहीं है? एक मुख है उस दिन का वह सुन्दर स्तम्भ और दूसरा मुख है आज का यह अपरूप स्तम्भ। अवश्य ही वह मुकुट रहस्यपूर्ण है, जिसका रहस्य अब जाकर स्पष्ट हुआ है। मेरा सुन्दर मुख और शरीर भी कल इसी स्तम्भ के समान जर्जर हो जाएगा। काल की धूल इस पर इस प्रकार जम जाएगी कि इसका दृश्य भी किसी को सहन नहीं होगा। यही तो इस मुख की द्विमुखता है। एक आज का आकर्षण और दूसरी आने वाले कल की निकर्षण दशा!

फिर आज के आकर्षण के प्रति मुग्ध भाव क्यों? मोहावस्था क्यों और मिथ्या शोभा के प्रति झुकाव क्यों? जिसके प्रति मुग्धता सदा बनी रहे, उसके प्रति प्राभाविकता तो सम्यक्, किन्तु नाशवान आकर्षण के प्रति मोहित हो जाना क्या आत्मा का स्वस्थ भाव कहलाएगा? राजा की चिन्तन धारा अधिक से अधिक अन्तर्मुखी बनती गई। कल को सार्थक बना लेने के लिए आज ही मैं सक्रिय क्यों न हो जाऊँ? काश, द्विमुखता का यह रहस्य मुकुट धारण करने के दिन ही मुझे ज्ञात हो जाता तो मैं इतना समय भी निरर्थक न गँवाता, पर अब तो एक-एक क्षण गँवाना भी मेरे लिए उचित नहीं।

राजा ने वहीं खड़े-खड़े अपने वस्त्रालंकार उतारे, पंचमुष्ठि केशलुंचन किया तथा स्वमेव दीक्षा ग्रहण कर ली। तदनन्तर आत्मशुद्धि करके मोक्ष धाम का वरण किया।

**स्रोत- उत्तराध्ययन सूत्र।**

**सार- भावना की उत्कृष्टतम श्रेणी मुक्तिद्वार तक पहुँचा देती है।**

संदर्भ- समता कथा माला

गुरु राम

# समवसरण

-श्रीमती कंचनदेवी कांकरिया

जैन परम्परा में तीर्थंकर भगवान् का स्थान सर्वोपरि होता है। पूर्वभव में बांधे हुए शुभ नामकर्म के फलस्वरूप वे अत्यन्त रूपवान् होते हैं। उनके रूप की तुलना देव और मनुष्य किसी से भी नहीं की जा सकती है। वीतराग भाव की शान्त और सरल मुद्रा के कारण उनके सौन्दर्य की कान्ति अनन्त गुणा बढ़ जाती है, जिसे अपलक दृष्टि से निहारते हुए भव्य प्राणी थकते ही नहीं हैं। उनकी रूप सम्पदा भी अनेक प्राणियों को धर्म मार्ग में जोड़ने का निमित्त बनती है। तीर्थंकर भगवान् का आभ्यन्तर सौन्दर्य भी ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी और परम शक्ति सम्पन्न होता है। इसीलिए उनके मुखारविन्द से निकली हुई वाणी यानी उनके ज्ञानावर्त की धारा जब प्रवाहित होती है तो वह 6 राग और 30 रागिनियों; 36 रागिनियों नहीं, 30 रागिनियों के रूप में परविर्तित होती है, जिसे सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं और उन्हें ऐसी अनुभूति होती है मानो वे किसी भिन्न विश्व में पहुँच गये हैं। सर्वत्र शांति-शांति और निर्विघ्नता छा जाती है। प्रत्येक प्राणी उनकी धर्मदेशना में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि यदि उनके समीप किसी की मृत्यु हो जाये तो भी उनका ध्यान नहीं जाता है।

इस विषय में एक आख्यान- एक बूढ़ी औरत लकड़ियाँ चुनने के लिए नीचे झुकी। जैसे ही तीर्थंकर भगवान् की वाणी उसके कानों में गई वह वैसी ही झुकी हुई खड़ी रह गई। तीर्थंकर भगवान् लगभग एक प्रहर तक (लगभग तीन घण्टा) तक व्याख्यान फरमाते हैं। एक प्रहर तक वो हक्की-बक्की होकर वाणी सुनती गई और ऐसे ही झुकी हुई खड़ी रही। इससे हम समझ सकते हैं कि कितनी तन्मयता से लोग इस व्याख्यान को सुनकर अपने आपको आध्यात्मिकता से लबालब भर लेते हैं।

तीर्थंकर भगवान् की वाणी के प्रभाव से तिर्यंच, देव, मनुष्य सबका वैरभाव शांत हो जाता है। जैसे भाई-भाई का वैर, भाई-बहिन का वैर, देवों का परस्पर वैर, शेर और हिरण का वैर, उस समय शांत हो जाता है। इसलिए सभी समवसरण में बैठकर देशना सुनते हैं और आत्मिक शीतलता की अनुभूति करते है। तीर्थंकर भगवान् के शरीर से जो शांति की किरणें निकलती हैं उससे उनके आस-पास के 25 योजन के क्षेत्र का वातावरण शांत हो जाता है। 25 योजन यानी लगभग 300-400 किलोमीटर के क्षेत्र में महामारी नहीं फैलती है, युद्ध नहीं होते हैं। अतिवृष्टि यानी बाढ़, आंधी, तूफान आदि नहीं आते हैं। अनावृष्टि यानी दुष्काल नहीं पड़ता है। सर्दी में शीत लहरें नहीं बहती हैं, गर्मी में लू नहीं चलती है। स्वाभाविक सुन्दर वातावरण बन जाता है।

प्रश्न 1.तीर्थंकर भगवान् को सूर्य की उपमा क्यों नहीं दी जाती है?

उत्तर : तीर्थंकर भगवान् चन्द्रमा या दीपक के समान कहलाते हैं क्योंकि एक सूर्य दूसरा सूर्य नहीं बना सकता है, जबकि एक दीपक सैंकड़ों दीपकों को प्रज्वलित कर देता है। उसी प्रकार तीर्थंकर भगवान् अपनी देशनाओं में जिन कारणों से उन्होंने तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया उसकी भी प्ररूपणा करते हैं। जैसे अरिहंत भगवान् का, सिद्ध भगवान् का, आचार्यश्री का गुणगान करते हुए उनमें उत्कृष्ट रसायन लाते हुए तीर्थंकर नाम का बंध कर सकते हैं उसका चतुर्विध संघ को बोध कराते हैं और उन्हें तन्मयता पूर्वक आराधना करने की प्रेरणा देते हैं।इसलिए प्रत्येक तीर्थंकर के शासन में अनेक जीव तीर्थंकर नामकर्म का बंध करके इस पदवी को प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 2. कल्याण किसे कहते हैं?

उत्तर : चारों जाति के देवता जिस महोत्सव को हर्षोल्लास पूर्वक मनाते हैं तथा जो तीन लोक के प्राणियों के लिए कल्याणकारी होता है उसे कल्याणक कहते हैं।

गुरु राम

प्रश्न 3. तीर्थंकर भगवान् का समवसरण कैसा होता है ?

उत्तर : अनादिकाल से यह परम्परा चली आ रही है कि तीर्थंकरों के पाँच कल्याणक देवता मनाते हैं। उनका च्यवन यानी गर्भ में आना, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण। केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणक (महोत्सव) पर देवता समवसरण की रचना करते हैं। देवता अपने स्थान पर ही रहकर नमोत्थुणं के पाठ से उनकी स्तुति करके च्यवन कल्याणक मनाते हैं। जन्म कल्याणक मेरुपर्वत पर एवं नंदीश्वर दीप में जाकर मनाते हैं। दीक्षा कल्याणक उनके नगर में मनाते हैं। तीर्थंकर भगवान् को जब केवलज्ञान उत्पन्न होता हैं तब चारों जाति के देवता मिलकर इस समवसरण की रचना करते हैं। इसे त्रिगड़ा भी कहते हैं, धर्मसभा भी कहते हैं, प्रवचन मण्डप भी कहते हैं। अगर तीर्थंकर भगवान् न हो और देवता सोचें कि हम ऐसी रचना कर दें, वह संभव नहीं है। तीर्थंकरों की पुण्य प्रभाव से ही ऐसी रचना संभव हो पाती है।

प्रश्न 4. तीर्थंकर भगवान् के कल्याणक का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

उत्तर तीर्थंकर भगवान् अपनी आत्मा पर रहे हुए गाढ़ पत्थर जैसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्म को क्षय कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप उनकी आत्मा पर केवलज्ञान, केवलदर्शन का महान् प्रकाश प्रकट होता है। सम्पूर्ण लोक में क्षणभर के लिए हर्ष की लहर व्याप्त हो जाती है और 64 इन्द्रों के आसन कंपायमान होने लगते हैं। 64 इंद्र अवधिज्ञान से जब अपने आसन के कंपित होने का कारण देखते है तो अत्यन्त हर्षित होते हैं कि भरत क्षेत्र में तीर्थंकर भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है। इन्द्र की आज्ञ से सर्वप्रथम आदि योगिक देव समवसरण की रचना के स्थान पर आकर एक योजन प्रमाण गोलाकार भूमण्डल को (समवसरण की रचना एक योजन के क्षेत्र में होती है) संवर्तक नामक वायु उत्पन्न करके उस क्षेत्र में जो भी कंकर, पत्थर अशुचिमय, दुर्गन्धमय वस्तुएँ होती हैं उनको हवा से उड़ाकर एकान्त स्थान में डाल देते हैं। फिर बिजली चमकते हुए गरजते हुए, गरजते हुए बादलों की रचना करते हैं और उसमें से रिमझिम-रिमझिम सुगन्धित पानी की वर्षा करते हैं। वर्षा की बूंदों से वहाँ की मिट्टी और धूल जम जाती है। उसके पश्चात् वे आदि योगिक देव (सेवक देव) पुष्पमय बादलों की विकुर्वणा करते हैं। उन बादलों से पाँच वर्ण के अचित्त सुगंधित फूलों की घुटनों प्रमाण वर्षा होती है। सभी फूल विकसित रूप में ही गिरते हैं, सबके डंठल नीचे रहते हैं और ध्यान देने योग्य कि जैसे बाग-बगीचों में चलने का रास्ता रहता है उसी प्रकार रास्ता छोड़कर फूलों की वृष्टि होती है। उसके बाद वे देवता उस स्थान को और अधिक पुद्गलों के द्वारा सुगंधित बना देते हैं, जिससे वह क्षेत्र देवों के आगमन योग्य हो जाता है।

-क्रमशः

कविता

# तू जिंदगी को जी

-सुरेश कुमार

तू जिंदगी को जी, मन में चल रहे युद्ध को विराम दे,
उसे समझने की कोशिश न कर। खामखां खुद से लड़ने की कोशिश न कर।
सुन्दर सपनों के ताने बाने बुन, कुछ बातें भगवान पर छोड़ दे,
उसमे उलझने की कोशिश न कर। सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर।
चलते वक्त के साथ तू भी चल, जो मिल गया उसी में खुश रह,
उसमें सिमटने की कोशिश न कर। जो सुकून छीन ले वो पाने की कोशिश न कर।
अपने हाथों को फैला, खुल कर साँस ले, रास्ते की सुंदरता का लुत्फ उठा,
अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर। मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर।

गुरु राम

WRITE-UP

# EXPERIENCE OF AN EX ANGEL INTUITIVE CARD READER

-Simple

The world of spirituality is as large as the universe, may be larger – is diverse and yet leads to the one path. This realization hit me once I embarked on my spiritual journey, only, it took me quite sometime to make a final choice which seemed right for me. In the process I was also blessed with a clarity that though there are several ways of attaining self realization – some religious and others purely spiritual, some can be misleading too. I had several questions about my existence; my financial security was also a big mystery, so in the quest of answers I was hopping from one religion/cult/spirtuality to another. Astrology was something that I was always interested in as I wanted all hurdles out of my future.

Linda Godman, Bejan Daruwalla, Majorrie Orr and many more were my muse (for the longest period of time) and was topped up after attending a workshop on Angel Intuitive Card reading. It was a whole new beautiful ocean for me and I was diving in the temporary bliss of not just knowing my future and ways of enhancing it but also helping others in knowing theirs, there by gaining in cash and kind. At this point of time, I was also dabbling in various modes of spirituality. Very often I would be restless and confused. Sometimes something would work and at other times I would end up being baffled, when things would not work. Eventually I found solace in just one of the paths that not only gave me my answers but also made me identify the misleading directions and the futility of instant gratification by new age practices like tarrot card reading, angel therapy, numerology and several others.

As an angel intuitive card reader when I would hear my client's woes and do a session of card reading for them, while my answers and solutions would be bang on; my inner conscience kept pricking me.

Very soon my thought process was also reiterated by a news feed on facebook by the founder of angel therapy- Doreen Virtue and this brought me to give up these practices altogether.

As Doreen Virtue took to christianity, she realised that the new age practices that she had being promoting were essentially occult and if you follow a particular faith then these practices become redundant.

It dawned on me that if one's faith is consistent and unwavering, then these easy peasy practices are irrelevant and actual hurdles in the path of one's enlightenment if one is truly in the seeking.

Having said that, I do not condemn these practices as these hold relevence like a ray of hope for those who live in the world of uncertainty. It is like a crash course which can give you an idea, but is inadequate for attaining a degree.

Follow any path but with complete surrender. Your belief in the chosen path should prevent you from wavering on to alternate pathways.

While conducting sessions of card–reading, I came across several people who were desperate to hear answers that they desired and would be in a very happy space when they did received those answers; would also get distressed if they received something that put them in a fix or predicted trouble/ doom.

Most of them came with expectations with card reading to be some kind of magical wand that would waive away all their problems and give them lucrative solutions.

Well, it does not work that way. Card reading sessions, numerology, and the likes are all temporary tools for providing superficial relief to the troubled lot.

These practices are there in the universe and exist because of the belief of people in them. Who are these people? they are those who are totally confused about their roots, religion and purpose in life. They lack spiritual depth and are entagled in various realms of religion, seeking quick and favourable solutions.

When someone desires success without having to do much in any field, when people are too blinded by their miseries and unable to look beyond, when people are oblivious to the divine, but seemngly indulge in lengthy religious practices, then practices like card reading, numerology and others come to their rescue.

I do not say that these tools are ingenuine, I feel these are primary level reference books that may bring your attention to the existance of divinity and spirituality, but cannot help you graduate in that field.

I do not feel ashamed to say that I was one of those "people" a few years back and am still in the process of searching my purpose of life.

My reading so far is an eternal fact is that there is one supereme power who is dressed in innumerable reigious attires and worshipped worldwide. If we connect to this supereme being directly in any which form, without confusing it with spirituality, then practices like card reading etc become redundant. There are no shortcuts; doing your bit - karma and the quest of knowing yourself (and in the process knowing your God) are some of the ways that nullify the need of these practices.

●●●

There is great strength in togetherness with a collective effort every task may be accomplished in an easy economical, comprehensive and fruitful manner.

Forsight in a task is indicated by close supervision and due care and saves a man from diffulties and disasters in a forseeable future.

गुरु राम

**-Acharya Shri Nanalalji M.S.**

# 25 BOL - 13TH BOL MITHYATV

-Jitesh Kothari

(1) Any Jeev to attain salvation or go to Moksh has to rise above Mithyatv and become samyaktvi as its the first essential qualification for soul upliftment.

(2) To interpret the elements and principles in the right way is **Samyaktv** and opposite of Samyaktva is Mithyatv.

(3) Whether the Jeev is mithyatvi or samyaktvi is majorly decided on how Jeev interprets the concepts or the principles. If the interpretation is in the right direction, then the Jeev is called samyaktvi, and if the Jeev is interpreting wrongly, then its mithyatvi.

Jeev is said to be mithyatvi if it showcases any one or more of the following ten attributes, Mithyatv is broadly categorized in 10 ways-

**A. ADHARM KO DHARM SHRADHE TO MITHYATV**

**B. DHARM KO ADHARM SHRADHE TO MITHYATV**

Q. 1. What is Dharm?

Ans. (a) The essence of the object is called Dharm ¼oLrq ds LoHkko dks èkeZ dgrs gSa½.

(b) We relate Dharm to the good deeds that a living creature has to do to attain salvation. Majorly all the good deeds revolve around Ahimsa, therefore **"Ahimsa Parmo Dharam."**

Hence, we understand that Ahimsa has Dharam and where there is Hinsa, its Adharm.

(c) E.g. (A) Any act done in the name of Dharm and has violence involved can never be Dharm; it is always Adharm, and beliving Adharm as Dharm is Mithyatv.

(d) Dharm reduces the soul's enemy called Kashaay (क्रोध, मान, माया, लोभ)।

Dharm also reduces affection & hatred (राग और द्वेष)। Any act towards reducing our Kashaya, Raag & Dvesh can be called Dharm. Assuming dharmik activities as Adharm is Mithyatv. Any dhaarmik action understood as Adharm is mithyatv.

E.g. (B) Someone is doing samayik and presuming that samayik does not help anyone; it is a waste of time and is no way to attain salvation is mithyatv.

**C. SANSAAR KE MARG KO MOKSH KA MARG SHRADHE TO MITHYATV**

**D. MOKSH KE MARG KO SANSAAR KA MARG SHRADHE TO MITHYATV**

**Moksh = Salvation; Liberation (End of death & re-birth cycle)**

**MARG**

**SANSAAR MARG**

The path which does not drive to moksh is called sansaar Marg. In this marg jeev will keep wandering in four gatis (Narak, Tiryanch, Manushya, Dev)

**MOKSHA MARG**

The path which drives to moksha, attain salvation

गुरु राम

**Marg = Path; Way**

To perceive & believe Sansaar marg as Moksha Marg is Mithyatv.

E.g. (C) Like Terrorists, they believe that if they die while performing terror activities, they will go to Moksha, because that type of death is described as Jannat. On the contrary they don't realize that this type of death would increase their Sansaar and the part they are following is Sansar Marg.

Samayak Darshan, Gyan, Charitra and Tap are four parts to attain Liberation (Moksha), but some people that these are way to Sansar Marg and not to Moksh Marg, this is Mithyatv.

E.g. (D) Some people believe in doing Samyak Tap (Fasting) or learning dharmik knowledge is not a part of Moksh. They feel it is just a show off. So to believe Moksh Marg is Sansar Marg is Mithyatv.

**(E) AJEEV KO JEEV SHRADDHE THO MITHYATV**

**(F) JEEV KO AJEEV SHRADDHE THO MITHYATV**

We can differentiate between Living and Nonliving things but why will one believe in Jeev and Ajeev.

E.g. (E) Suppose one believes in praying in a temple. He/She prays to the idol, pays tribute to the idol, worships the idol. One does so because believes the Idol as God.

However God is a living being while the Idol is a Nonliving being. Therefore, Ajeev is perceived or believed to be Jeev is Mithyatv.

E.g.(F) Water has life we all know, but practically when we use do we take into consideration. When we Waste water while bathing, brushing, washing cars, clothes, etc, do we give a second thought on considering on killing lot of Living beings in the water. Therefore, Jeev is perceived or believed to be Ajeev is Mithyatv.

-Bangalore

## आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. की जीवनी पर आधारित (Match the following) सही उत्तर का मिलान करें 25–26 जुलाई, 2020 में प्रकाशित पहेली का सही हल

| A | B |
|---|---|
| (1) जयपुर | (a) घीसूलालजी संचेती ने दीक्षा ग्रहण की। |
| (2) टोंक | (b) संसारी भाणजी और भाणजी पति ने सर्वथा ब्रह्मचर्य व्रत जोड़े से अंगीकृत किया। |
| (3) अजमेर के बाहर | (c) पूज्य श्री देवीलालजी महाराज श्री नंदलालजी महाराज, श्री पन्नालालजी महाराज आदि से अपूर्व आनन्दोत्सव छा गया था। |
| (4) कंजार्ड़ा | (d) धर्मोन्नति हुई। |
| (5) 1974 + 1976 | (e) मुसलमानों ने जीव हिंसा तथा माँसभक्षण का त्याग किया। |
| (6) खरवा | (f) श्री गब्बूलालजी ने दीक्षा ग्रहण की। |
| (7) पूज्यश्री | (g) पशुशाला स्थापित हुई। |
| (8) नयेनगर | (h) चतुरबाई एवं श्री सूरजमलजी की दीक्षा हुई। |

(1) d, (2) b, (3) g, (4) f, (5) b, (6) a, (7) e, (8) c

गुरु राम

Poem

# APART BUT TOGETHER

Keith Batoo

I heard a little rumour,
I don't know if it's true
That the world is going to be at peace
For a month or may be two

The shooters can't go out to shoot
The dealers cannot deal
The bombers cannot throw grenades
So mother earth can heal

I heard that folk must stay at home
And spend time with their kin
Slow down relax and take a breath
And find some peace within

I heard that food and water
Is being shared around
So everyone has got enough
World kindness has been found

The queens and kings and governments
Have settled for enough
Instead of always wanting more
While millions see it rough

The factories have all closed their doors
And so have schools and bars
The atmosphere is cleaner now
A healthier world is ours

And though we may be worried
About money, jobs and bills
We will notice beauty everywhere
Blue skies, fresh lakes, green hills

The social isolation
Is really not a curse
A blessing in disguise I'd say
To stop things getting worse

And when the month or two is over
And we can go back to our lives
People can show gratitude
That their loved ones all survived

Drugs and bombs and bullets
Will be put away for good
There will be no hate or bitterness
All children will have food

I'm not sure if it's a rumour
Perhaps it's just a dream
But with all of us together
We can make it as a team

STORY

# JAMBUSWAMI

**Continued-** **Compiled**

Jambuswami's sixth wife Suwaranshri was very motivated by Nabsena's talk but when Jambuswami overpowered her with his logical speech, she also got demotivated and a ray of hope just vanished away. But she still wanted to give a try to convince Jambuswami.

She told him that she is mesmerized by his thoughts and reasoning but she feels that instead of doing everything so fast and abnormally he should go step by step and spread his thoughts to the world. She tells him that he is a lifeline to all his wires and by sacrificing his life he is inturn also sacrificing all their lives. He wants to water his dharmik tree on their tears, he wants to crush their blooming teenage life with his religious legs, if he wants he can do so but such a harsh base would not make his religious journey successful. A religious life blooms when there is innocence but on such a ruthless base, there would be bed of thorns ahead.

Jambuswami tells Suwamshri that she is very poetic and her poetic lines could definitely melt anyone's thought, but he is not emotional, he is practical. He tells her that life is long and he should go step by step but is she sure that she will be able to see all four stages of her life-childhood, teenage, middle age and old age. Many people die in their childhood itself, then how can one say that one would live all the four stages of life. Our soul is caged in our body, and when all windows and doors are open, then which fool will want to live like a slave. Don't waste your present for your future, make the most of it. He continues and tells her that she had said that he is their lifeline and separation would be painful, but remember in this never ending life and death cycle we all have to fight our own battles. Therefore we have to learn to live alone and not get affected by togetherness and separation as this will cause immense pain. So learn the art of living and keep your soul free from all these complications.

He tell Suwarnshri to think that there is no connection between his renunciation and their emotional pain. Both are separate paths as each and every soul is connected to their Karmas and not to any individual.

to be continued...

It is not definite that the objective of common masses today would remain the same in future. A time would come when his objective would be totally opposite to what is now.

It is not feasible to exactly discern the strangeness of this world. Some people are occupied in exploring it. They have achieved success to an extent too, but to emulate them is impossible.

**-Acharya Shri Nanalalji M.S.**

लेख

# सुंदरता के पीछे छुपा हमारा क्रूर चेहरा

-जय ओस्तवाल

महिलाएँ अपने आपको संवारने के लिए न जाने कितने जतन करती हैं। यह तो वे स्वयं ही जानती हैं, परंतु साथ ही साथ उन्हें यह जानना भी जरूरी है कि कहीं शृंगार में छुपा उनका चेहरा कई पंचेन्द्रिय जीवों का कातिल तो नहीं या यूं कह लें कि उनके चेहरे की सजावट की कीमत कई बेगुनाह जानवरों के जान की कीमत तो नहीं। बात को ज्यादा विकट मोड़ ना देते हुए सीधे अपने बिन्दु पर आते हैं। आज के जमाने में सौंदर्य प्रसाधनों अर्थात् कॉस्मेटिक्स में प्रयोग में आने वाली सामग्री का पता लगाए बिना ही हम सब बेझिझक, बेपरवाह उस सामान को उपयोग में ले लेते हैं। हम इतने ज्यादा आलसी और सूक्ष्म बुद्धि के हो गए हैं कि हमें या तो पता नहीं रहता कि हमारे कॉस्मेटिक्स में क्या मिला है या हम जानने के कोशिश नहीं करना चाहते हैं।

हजारों तरह के प्राडक्ट्स की बात ना भी करें तो रोजमर्रा में काम आने वाले कुछ प्राडक्ट्स जैसे- काजल, लिपिस्टिक, बॉडी लोशन आदि हर महिला का पसंदीदा शृंगार होता है। इसे अपने होंठों पर लगाने से पहले एक बार आँख बंद कर उन जानवरों के बारे में सोचें जिनकी जान या तो ये लिपिस्टिक बनाने में गई है या टेस्टिंग में। कहने को सारी कम्पनियाँ कहती हैं कि हमारा प्रॉडक्ट 100 प्रतिशत हर्बल है, पर हम अपनी सोच पर जोर डालें कि 100 प्रतिशत हर्बल चीज अगर बनाई जाए तो क्या वो इतने साल टिकेगी? कोई भी कॉस्मेटिक प्राडक्ट हो वह दो तरह से बना होता है- 1. सिन्थेटिक कैमिकल, 2. एनिमल एक्स्ट्रैक्टेड। कैमिकल से बना प्राडक्ट हमारी त्वचा के लिए नुकसानदायक होता है और जो synthetic chemicals natural ingridients जानवरों से मिलते हैं वो नुकसानदायक नहीं होते हैं और इन्हीं सब चीजों को मार्केट में नाम दिया जाता है हर्बल या नैचुरल प्राडक्ट का। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि ये कम्पनियाँ सीधे किसी जानवर के शरीर से फैट निकालकर डालते हैं, ऐसा नहीं है। ये कम्पनियाँ भी आगे दूसरे मार्केट से अपने प्राडक्ट को लम्बे समय तक टिकाने के लिए कैमिकल खरीदते हैं, जो कि असल में एनिमल एक्स्ट्रैक्टेड प्रीजर्वेटिव्स होते हैं।

इन्हीं प्रिजर्वेटिव्स के कारण ही लिपिस्टिक, काजल, मस्कारा आदि कई प्राडक्ट्स की एक्सपायरी डेट्स 3 साल तक लम्बी होती है। एक सर्वे के अनुसार सिर्फ इन चीजों के परीक्षण में प्रतिवर्ष 1 लाख से 2 लाख जानवर मरते हैं, तो इन्हें बनाने में कितने जीव बलि चढ़ते होंगे। society for the prevention of cruelty to animal (SPCA) के तहत जानवरों पर परीक्षण को बैन कर दिया गया था। 14 अक्टूबर 2014 में ऐसे सारे सौंदर्य प्रसाधनों के आयात पर रोक लगा दी गई थी जिनकी टेस्टिंग में जानवरों का संहार होता है। परंतु सरकार के बैन लगाने या कोई कानून बनने से कोई फायदा नही हैं, क्योंकि आज भी जानवरों पर परीक्षण होता है और इन प्राडक्ट्स को प्राकृतिक बनाने में एनिमल एक्स्ट्रैक्ट्स का उपयोग होता है। ये मिलता है बंदर, खरगोश, चूहे और भेड़ से और इस प्रजाति को मेमल्स कहा जाता है, क्योंकि मेमल्स और इंसानी शरीर के अंदर की संरचना लगभग समान होती है। जैसे- यूट्रस आदि। टेलोव एक ऐसा जीव है जो कि भेड़ में मिलता है और लिपिस्टिक में काम आता है। अतिरिक्त carmine lanoline हजारों कीड़ों को मारकर उनके रंजक से लाल रंग प्राप्त किया जाता है जो कि लिपिस्टिक में मिलाया जाता है। फिश ऑयल जो कि लगभग चिकनाहट के लिए हर कॉस्मेटिक प्राडक्ट में डाला जाता है और विटामिन-बी के नाम से बाजार में इसके कैपसूल्स भी मिलते हैं। ये सब पढ़कर ऐसा लगता है कि क्या ऐसा हो सकता है? क्या ये संभव है? जी हाँ, ये सभंव भी है और शत-प्रतिशत सत्य भी। विश्वास करने के लिए यू ट्यूब पर एनिमल टेस्टिंग ऑन एनिमल डालकर देखें, रोंगटे खड़े कर देने वाले वीडियो आप देखेंगे और पायेंगे कि इंसानियत का ये कैसा घिनौना खेल है, जिसके कहीं ना कहीं हम भी हिस्सेदार हैं।

ये प्रयोगशालाएँ ऐसी जगहों पर होती है

गुरु राम


सत्ता प्राप्ति के बाद अपनी सात्त्विकता को गुम नहीं होने देना चाहिये।

जहाँ पहुँच पाना किसी आम आदमी या रिपोर्टर के लिए नामुमकिन है। हाई-सिक्योरिटी के साथ इन लैब के मालिकों की पहुँच इतनी ऊँची होती है कि कोई चाह कर भी इनका कुछ नहीं कर सकता। उन सुनसान जगहों पर इंसानी राक्षस अपने फायदे के लिए लाखों जानवरों का संहार करते हैं। जिस तरह अचार, सॉस, जैम को टिकाने के लिए उनमें प्रिजर्वेटिव्स डाले जाते हैं वैसे ही कॉस्मेटिक्स में भी animal extract fats presarvatives के रूप में डाले जाते हैं। एक काजल, जो विज्ञापन में दिखाया जाता है कि 12 या 24 घंटों तक नहीं हटेगा, आप सोचिये कि बनाने वाला अपनी आँखों पर तो टेस्ट करेगा नहीं। अत: इसकी टेस्टिंग खरगोश के ऊपर होती है। 24 घंटों तक उसकी आँखों को चिटकनी से खींच कर काजल लगाया जाता है तथा रिजल्ट निकाले जाते हैं कि ये काजल ज्वलनशील तो नहीं, कितनी देर टिकेगा, आँखों में फैलेगा या नहीं, आँसू आयेंगे या नहीं इत्यादि।

इतनी भयावह है हमारे शृंगार की कीमत! भारत और यूरोप में एनिमल टेस्टिंग बैन है, पर चीन, जर्मनी आदि देशों में एनिमल टेस्टिंग और उनके एक्स्ट्रैक्ट उपयोग करने पर कोई पाबंदी नहीं है और ये बात हम सब अच्छी तरह से जानते हैं कि भारत में एक बड़ी मात्रा में कॉस्मेटिक्स खासतौर से लिपिस्टिक का आयात होता है। हमारे जैसे कई लोग होंगे जो इन घिनौने कृत्यों के बारे में भली-भाँति जानते होंगे या कार्यरत होंगे, परन्तु प्रश्न ये उठता है कि इस भयावहता का अहसास कर कौन इनके खिलाफ खड़ा होता है? हमें यहाँ कोई लड़ाई नहीं लड़नी है बल्कि इन प्राडक्ट्स का उपयोग बंद करना है। या तो ये सब हम घर में ही बनाएं या सुनिश्चित करें कि वह प्राडक्ट 100 प्रतिशत शुद्ध है।

चिन्तन करें कि एक काजल की लकीर में कितने बेजुबान जानवरों की चीख है और वह एक लकीर हमारी आत्मा के मोक्ष द्वार की लक्ष्मण रेखा बन सकती है, जिसे हम कभी पार नहीं कर पायेंगे और इसी जन्म-मरण के दलदल में फंस जायेंगे। अत: प्रभु महावीर के अनुयायी होने का परिचय दें और कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों का त्याग कर इन मासूम बेजुबान जानवरों को अभयदान दें। -ब्यावर (राज.)

●●●

कहानी

# याते नीचे नैन

-डॉ. भैरूलाल गर्ग

एक नगर में एक धनी सेठ रहते थे। वह बहुत दानी थे किन्तु उनकी एक विशेषता थी कि वे दान देते समय किसी भी याचक की ओर नजर उठाकर नहीं देखते थे। इस कारण कई लोग उनसे एक से अधिक बार दान ले चले जाते। सेठजी से आँखें नीची रखने का कारण लोग कई बार पूछ चुके थे किन्तु सेठजी कोई उत्तर देने की अपेक्षा मुसकराकर रह जाते।

हमेशा की तरह जब वे वस्तुएँ दान कर रहे थे तो एक युवक उनके सामने आकर खड़ा हो गया। सेठजी ने उसे दान में कोई वस्तु देने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन युवक उसी तरह खड़ा रहा। उसने वस्तु के लिए अपना हाथ नहीं बढ़ाया। सेठजी ने नजर उठाकर देखा तो सामने एक युवक को खड़ा पाया। सेठजी ने हैरान होकर पूछा, 'भाई! क्या बात है? तुम मुझसे चीजें क्यों नहीं ले रहे हो जबकि तुम मेरे सामने खड़े हो?'

यह सुन वह बोला- सेठजी! पहले आप यह बताएँ कि दान देते समय आप किसी की ओर क्यों नहीं देखते? इसका फायदा उठाकर कुछ लोग आपसे दो बार भी ले जाते हैं, इस पर सेठजी ने कहा-

**देनहार कोउ ओर है देत रहत दिन रैन।**
**लोग हम पर भरम धरै याते नीचे नैन।।**

देने वाला तो कोई और (भगवान) ही है। मैं तो निमित्त मात्र हूं। लोग मुझे दाता कहते हैं, वास्तव में मैं दाता हूं नहीं। इस कारण मुझे लज्जा अनुभव होती है अत: मैं आंखें ऊँची नहीं कर सकता।

सेठजी की बात सुन युवक बड़ा सन्तुष्ट हुआ और मन ही मन सेठजी की अभिमान रहित दानशीलता की प्रशंसा करने लगा। -श्रमणोपासक

●●●

गुरु राम

# पहला आरा

-स्नेहलता कोठारी

भगवान् फरमा गये- **षट्द्रव्य, जीवाजीव शाश्वत है।** समय, काल- भूत, भविष्य, वर्तमान में विद्यमान है और ढ़ाई द्वीप में निरन्तर चल रहा है। इसी काल के प्रभाव से और अपने उपार्जित कर्मो से जीव भी 84 लाख जीव योनियों में निरन्तर चक्कर काट रहा है। मनुष्य जन्म दुर्लभ फरमाया। मनुष्य की बुद्धिमता तो भगवान् की कृपा से आरे दर आरे बढ़ती गयी, पर जब स्वपुष्टि से संतुष्ट होना छोड़कर मनुष्य को मैं, मान व लोभ ने दबोचा तो उसने अपने आगे प्रकृति को भी कुछ ना समझा और मूक धरा को रौंधता हुआ प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ता गया। कहीं ना कहीं इस लॉकडाउन में सोचने पर विवश हो जाते हैं कि क्या यह एक पलटवार तो नहीं।

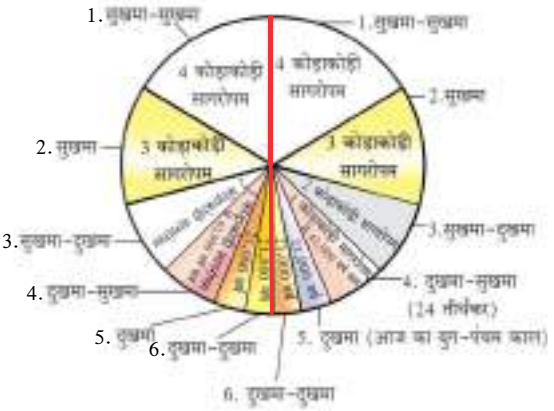


चलें इस यात्रा को देखें और प्रकृति में ही इसका हल ढूंढ़ें।

**20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का 1 कालचक्र।**

**10 कोड़ाकोड़ी का अवसर्पिणी काल और 10 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का उत्सर्पिणी काल।**

**पहला आरा :-**

सुषमा सुषमा के इस पहले आरे में प्रकृति जैसे खिल-खिलाकर हँस रही थी। इस कारण भी वृक्ष भी गुण व सुरसों से भरे थे। दस प्रकार के वृक्ष युगलिकों की हर जरूरत की पूर्ति करते थे। ज्यादा तो उन्हें चाहिये ही नहीं था। भूमि भाग समरमणीय और श्रीमद्भगवतीसूत्र में कहा भी है कि ये मनुष्य छ: उत्तम गुणों से युक्त थे- 1. पद्म समान गन्ध वाले, 2. कस्तूरी समान गंध वाले, 3. ममत्व रहित, 4. तेजस्वी, रूपवंत, 5. सहनशील, 6. उतावल रहित।

आश्चर्य की बात यह कि दोनों युगलों की आयु जब 6 माह शेष रहती तभी वे अपने युगल बच्चों को जन्म देते।

दस प्रकार के वृक्ष अपने स्वाभाविक परिणाम से युक्त होकर युगलिकों की इच्छा में सहायक होते हैं।

1. **मत्तांग वृक्ष** के फल, पत्र, छाल आदि पौष्टिक रसों के रूप में परिणत होते हैं।

2. **भृतांग वृक्ष** के फलादि थाली-कटोरी आदि भाजन बन जाते हैं।

3. **त्रुटीतांग वृक्ष** के फलादी वीणा, बाँसुरी आदि वाद्य यन्त्रों में परिणत हो जाते हैं।

4. **दीपशिखा वृक्ष** के फलादी दीपकों के प्रकाश रूप में परिणत हो जाते हैं।

5. **ज्योतिशिखा वृक्ष-** ये प्रात:कालीन सूर्य, अग्नि, बिजली, मणिरत्नों में परिणत हो जाते हैं।

6. **चित्रांग वृक्ष-** पुष्पमालाओं की विधि शोभा रूप में परिणत हो जाते हैं।

7. **चित्ररस वृक्ष-** श्रेष्ठ सुगंधित पदार्थों से युक्त खीर, दूधपाक आदि व्यंजन बन जाते हैं।

गुरु राम

8. **मणभंग वृक्ष–** हार, कुण्डल आदि अनेक प्रकार के आभूषणों के रूप में बन जाते हैं।

9. **मेघकार वृक्ष–** गजमहल, शिखर, हवेली आदि अनेक विध ग्रहों के रूप में बन जाते हैं।

10. **अनग्न वृक्ष –** कपास, रेशम, ऊन आदि विविध वस्त्रों के रूप में बन जाते हैं।

प्रकृति के अनुरूप प्रवृत्ति करते इन युगलिक मनुष्य के न रोग, न शोक, न लड़ाई, न झगड़ा, न सुकाल, न दुकाल कुछ नहीं होता। ना ही घर, मार्ग, ग्राम, नगर, असि, मसि, कृषि, व्यापार, राजा–सेनापति, सेठ–नौकर, शत्रु–मित्र, सगाई–विवाह, उत्सव–महोत्सव, खेल–क्रीड़ा, रथ–पालकी, गड्ढ़ा–कीचड़, काँटे–कंकर, अशुचि–दुर्गंध, गर्जना–बिजली चमकना, सूर्यग्रहण–चंद्रग्रहण।

अभय होकर वे अपना जीवन शांति से व्यतीत करते हैं व राग रहित, मोह रहित संसार को बाय–बाय कहते हैं तो देवता आकर मृत कलेवर को क्षीर सागर में बहा देते और वे जीव देव गति को ही प्राप्त करते हैं।

3 पल्योपम की आयु लेकर,
साईज था उनका 3 कोस
फिर भी आहार करते 3 दिनों में,
बस 1 दाल के दाने सा डोज
10 कल्पवृक्ष करते मुरादें पूरी,
न प्रकृति से कुछ चाहा रोज।
सुख से जीये युगल दो,
49 दिनों पोषण कर अपने युगल बच्चों का
एक छींक, एक उबासी लेकर पहुँच गये देवलोक वो।।

## 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम पहला आरा (सुखम् सुखम्) सुषमा सुषमा

| पृथ्वी | मनुष्य | आयु | अवगाहना | आहार | शिशु पालन | आगति | गति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुलायम रेशम सी कोमल स्वाद अत्यन्त मीठा | युगलिक Twins एक लड़का एक लड़की | Maximum उत्कृष्ट 3 पल्योपम Minimum जघन्य उत्कृष्ट से कुछ कम | Maximum उत्कृष्ट 3 कोस Minimum जघन्य उत्कृष्ट से कुछ कम | 3 दिन के अंतर में अरहर की दाल जितना | सिर्फ 49 दिनों तक पालते हैं फिर स्वतंत्र रहते हैं। | सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य | देवगति भवन वाणव्यंतर ज्योतिषी 1–2 देवलोक |

माता–पिता 49 दिनों तक पोषण करते हैं। जब आयु 6 माह शेष रहती है तब स्त्री युगलिक को जन्म देती है, जो कुछ वर्षों तक भाई–बहिन व फिर पति–पत्नी के समान रहते हैं। माता–पिता को एक छींक, एक खांसी आती है और कालधर्म को प्राप्त हो जाते हैं। देवता मृत शरीर को क्षीर सागर में बहा देते हैं।

–क्रमशः

लेख

# आखिर बच्चों को धर्म से कैसे जोड़ें?

-संदीप देशलहरा

आज अमूमन सभी परिवारों में इस प्रश्न के उत्तर की तलाश की जा रही है कि बच्चों को धर्म से कैसे जोड़ा जाए? ऐसे क्या कारण हैं कि उनकी रुचि धर्म या धार्मिक क्रियाओं की ओर नहीं होती? दबाव से या लालच देकर आखिर कितने दिनों तक उनसे ये सब करवाया जा सकता है? भीतर से उनका मन क्यों नहीं कहता कि मैं भी धर्म से जुड़ जाऊँ। आइये, इस ज्वलंत समस्या पर थोड़ा चिंतन करें।

## धर्म से नहीं जुड़ पाने के कारण

पालकों में बच्चों के लालन-पालन हेतु पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं है। कोमल हृदय वाले बच्चों में किस तरह प्रारंभिक अवस्था या यों कहा जाए कि गर्भकाल से ही संस्कारों का बीजारोपण किया जाए, इसका पर्याप्त प्रशिक्षण माता-पिता द्वारा लिया जाना चाहिये। पालकों का स्वयं का जीवन भी बच्चों के लिए प्रेरणास्रोत होता है। अब तय पालकों को ही करना है कि वो बच्चों को वास्तव में कैसा बनाना चाहते हैं? एक पैसा कमाने वाली मशीन या संस्कारवान्? जीवन में शांति और आनंद का अनुभव कैसे किया जा सकता है, इसका बीजारोपण बचपन से ही करना होगा। बच्चे पढ़कर या सुनकर जितना नहीं सीख पाते उससे कहीं अधिक वे देखकर सीखते हैं। अनुसरण करते हैं अपने पालकों का, अपने शिक्षकों का और सम्पर्क में आने वाले लोगों का। यदि पालकों का स्वयं का जीवन सत्य और नीति से युक्त नहीं होगा, यदि पालकों की स्वयं की प्राथमिकता पैसा और सिर्फ पैसा ही होगी, उनकी जीवनशैली इंद्रियों को अत्यधिक पोषित करने वाली होगी, इसी में सुख मानने वाली होगी तो फिर बच्चों से उम्मीद करना कि वे सचाई के मार्ग पर चलेंगे और अपने जीवन में धर्म को प्राथमिकता देंगे, ये बेमानी है। कभी ऐसा भी होता है कि पालक तो धर्म से, नीति से चलने वाले, सत्य मार्ग का अनुसरण करने वाले होते हैं परन्तु बुरी संगत में बच्चे दुर्व्यसनों और बुरी आदतों के शिकार हो जाते हैं। अत: पालकों को यह सावधानी रखनी होगी कि बच्चों की संगति भी ठीक हो। वह किन लोगों के बीच उठ-बैठ रहा है, क्या कर रहा है, मोबाइल, कम्प्यूटर और टी.वी. पर क्या देख रहा है? आदि ध्यान रखना होगा। अच्छा साहित्य पढ़ने की रुचि उनमें विकसित करनी चाहिये। जब भी अवसर मिले सत्संगति में उन्हें लेकर जाएं। साधु-साध्वीजी का योग मिलने पर नियमित दर्शन, वंदन, प्रार्थना, प्रवचन, धार्मिक कक्षाओं में भाग लेने हेतु प्रेरित करें। संस्कार पाठशाला, धार्मिक शिविर में भेजने का लक्ष्य रखें। चूंकि हम बाहर का वातावरण तो बदल नहीं सकते और वह बहुत तेजी से प्रदूषित होता जा रहा है। इन संस्कारों से हम तो सिर्फ उसका 'सुरक्षा-कवच' मजबूत बना सकते हैं, ताकि वह प्रतिकूल वातावरण में भी अपने आप को बचा सके। ज्यादातर पालक मोहवश कुछ गलतियाँ करते हैं। बचपन से ही सुविधाओं का अम्बार लगा देते हैं। खान-पान भी सादा न होकर नित नए पकवान खिलाए जाते हैं। पालकों को चाहिये कि बच्चों को स्वावलम्बी बनाएं, उन्हें हर छोटे से छोटा कार्य साफ-सफाई, मेहनत का कार्य करने की आदत डालें। खान-पान भी संतुलित और स्वास्थ्यवर्धक हो। रसना को स्वादलोलुप न बनाएं। उनके जीवन का उद्देश्य एक अच्छा इनसान बनना हो। उनकी सारी गतिविधियाँ उन्हें इस लक्ष्य की ओर ले जानी वाली हो।

## धर्म और संस्कारों से नहीं जुड़ने के परिणाम

आर्थिक सम्पन्नता को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाकर चलने और धर्म तथा संस्कार को अनदेखा करने का नतीजा हमारे सामने हैं। बड़ा होने पर पास में कुछ लाख-करोड़ रुपये तो हैं पर जीवन में प्रसन्नता का अभाव है, शांति का अभाव है। एक शून्यता है, तनाव है, अवसाद है। नई-नई बीमारियाँ हैं; नतीजतन बढ़ते तनाव, बढ़ता नशा और आत्महत्या के प्रकरण हैं। बढ़ता अपराध है और अगली पीढ़ी को विरासत में देने के लिए कुछ लाख-करोड़ रुपयों के साथ यही सब है।

गुरु राम

## धर्म और संस्कारों से जोड़ने के उपाय

पालकों को चाहिये कि बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाएं ताकि जीवन में आने वाली परेशानियों का दृढ़ता से मुकाबला कर सकें। मितव्ययी बनाएं ताकि प्रतिक्षण आर्थिक विफलता का भय मन में न रहे। स्वावलंबी जीवनशैली से उसे अपने दो हाथों पर भरोसा हो, तभी जीवन में आनंद और शांति का अनुभव वे कर सकेंगे। हर विफलता के बाद भी दुगुने उत्साह से फिर उठ सकेंगे। बच्चों के सामने आपसी झगड़े, क्लेश, गालियाँ देने व झूठ बोलने से बचें। वे अपनी सारी बातें आपसे बेबाक कह सकें ऐसा वातावरण परिवार में बनाने का प्रयास करें।

अब प्रश्न यह उठता है कि शुरुआत कहाँ से करें? जिससे विनय, ज्ञान, त्याग, दान, सरलता, सेवा के गुणों का क्रमिक विकास करते हुए अपने आपको दुर्व्यसनों से बचाकर सामंजस्य के साथ शांति और आनंद का जीवन जी सकें। आइये, इसकी शुरुआत हम अपने पूरे परिवार से करें। इन 10 नियमों का प्रत्येक सदस्य पालन करे। बातें छोटी-छोटी हैं परन्तु इनका प्रभाव दूरगामी व सशक्त होगा।

## Ten Point Target दस सूत्रीय लक्ष्य

1. प्रतिदिन घर में सभी बड़ों को प्रणाम करें।

   Bow (by touching feet) to the elders in the family daily.
2. प्रतिदिन कम से कम 15 मिनट शारीरिक व्यायाम करें।

   Do physical exercise at least for 15 minutes daily.
3. प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट प्रेरणादायक अच्छा साहित्य पढ़ें।

   Read good, inspiring books at least for 10 minutes daily.
4. प्रतिदिन कम से कम 1 प्रत्याख्यान ग्रहण करें।

   Take at least one "Pratyakhyan" daily. (can start with easy one)
5. प्रतिदिन एक दान दें। (1 रुपया या 1 रोटी जितनी हमारी श्रद्धा)

   Donate on daily basis (can be Rs.1 or as much as we can)
6. सप्ताह में कम से कम एक बार झाड़ू, पोंछा, बर्तन सफाई, शौचालय सफाई, बिस्तर उठाना, रसोई के कार्य जैसा कोई एक कार्य करें। (प्रयास करें कि सभी तरह के कार्य माह में एक बार करने का अवसर आए।)

   Do at least once in a week, work like dusting, wiping, utensil cleaning, toilet cleaning, maintaining bed or some work in kitchen. (Try to do all such work atleast once in a month.)
7. प्रतिदिन परिवार, संघ, समाज या संस्था में एक सेवा का कार्य करें। (अपने बड़ों का कोई भी कार्य करना इसमें शामिल है।)

   Do at least one service activity daily in family, society or institution. (It includes any help you do for your elders.)
8. सप्ताह में एक दिन बिलकुल सादा भोजन ग्रहण करें। (इसकी आवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ाएं।)

गुरु राम

Take simple food at least once in a week. (It's frequency should be increased gradually.)

9. परिवार के सारे सदस्य प्रार्थना/नाश्ता या भोजन के समय एक साथ हों अन्यथा रात को 10 मिनट एक साथ बैठकर चर्चा करें।

All family members must be together for prayer, break fast, lunch otherwise sit together at night for 10 minutes and exchange your views.

10. रात्रि 10:30 बजे के बाद घर से बाहर न रहें। (आवश्यक कार्य या किसी आयोजन की स्थिति को छोड़कर)

No one should go outside after 10:30 P.M. (Emergency or some functions can be exempted)

इस ''दस सूत्रीय लक्ष्य'' का हम कितना पालन कर पाए उसे प्रतिदिन नोट करें। हर महीने इसमें क्या सुधार हो सकता है, उस पर चिंतन करें।

Note down every day how much you could follow "Ten point target".

Every month think for improving your performance.

-दुर्ग (छ.ग.)

●●●

## आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के प्रवचन ''पर्व आत्मा का'' के आधार पर 25-26 जुलाई, 2020 में प्रकाशित पहेली का सही हल

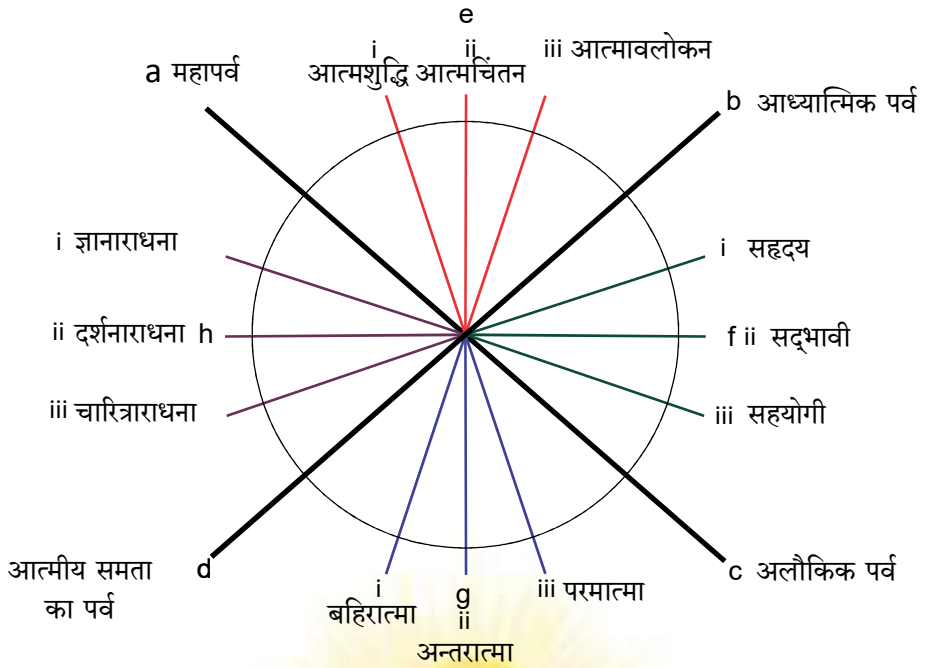


गुरु राम

कविता

# नैतिक उद्बोधन

-हीरालाल गांधी 'निर्मल'

**लो आज उठो, आवाज करो, नैतिकता की ललकार करो।**
**फिर सदाचार का ध्वज फहरे, सद्गुण की जय जयकार करो।।**

जीवन के मूल्य पतन की गहराई में जाकर अटक गये।
इतने मिटे हाय! कि नैतिक राहों से भी भटक गये।।
गिरते जाते अंधकार में हम ज्योति की आशा में।
मार कुल्हाड़ी अपने पैरों गिरे हैं घोर निराशा में।।
अनाचार, अनैतिकता पर, उठो, वज्र-प्रहार करो।
सद्गुण को फिर गले लगा लें और आचरण में लायें।
सत्य, अहिंसा, ज्ञान, नम्रता, अनुशासन को अपनायें।।
झूठ, कपट, जुआ, चोरी और परनिन्दा का कर दें त्याग।।
मदिरा, मांस, ईर्ष्या छोड़ें, जीव-मात्र से हो अनुराग।।
जीवन को आदर्श बनाओ, सुख का नव संसार करो।

विश्वगुरु थे, देव कहाते, जहाँ नहीं लगते ताले।
थे जग पूजित, रामराज्य था, धर्मप्रेमी रहने वाले।।
क्या थे? अब क्या हुए? हाय! हम धर्म कर्म को भूल गये।
इसीलिए हर फूल हमारे लिए आज बन शूल गये।।
अब भी चेतो, जागो, सम्भलो एक नई हुंकार करो।
विश्वप्रेम हो मंत्र हमारा, करें देशहित हम बलिदान।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध का हो सम्मान।।
माता-पिता, गुरु के विनयी बन, सेवा में जुट जायें।
धर्ममयी शिक्षा अपनाकर संस्कारों में रम जायें।।
दया, क्षमा और धैर्य धरो, 'निर्मल' बुद्धि विस्तार करो।

नैतिकता का बिगुल बजाकर आगे बढ़ते जाना है।
कठिनाई के हिमगिरि आये उन पर चढ़ते जाना है।।
बाधाओं से वीर कभी ना डरते हैं, करते संघर्ष।
हम सन्तान 'वीर' की हैं, है करना हमें आत्म उत्कर्ष।।
लोक और परलोक बना लो, जीवन का उद्धार करो।
सद्ग्रंथों का पठन करें और भावों में निर्मलता हो।
सन्त-समागम, शुद्ध आचरण, जीवन में निश्छलता हो।।
पर-सेवा, पुरुषार्थ करें सब शोषित-पीड़ित का सहयोग।
छुआछूत और बुरी रूढ़ियों के मिट जाये भीषण रोग।।
सच्चा आत्मानन्द मिलेगा, 'निर्मल' धर्म प्रचार करो।

श्रमणोपासक

# आस्रव तत्त्व

गतांक से आगे...

-दीपक रांका

प्र. 1 आस्रव किसे कहते हैं?

उ. जिन कारणों से कर्म आत्मा में प्रवेश करते हैं, उन्हें आस्रव कहते हैं। जैसे किसी तालाब में बहुत सारे नालों द्वारा पानी आता है वैसे ही आत्मारूपी तालाब में विभिन्न कारणों से कर्मरूपी पानी आता है। उन कारणों को आस्रव कहा गया है।

श्री स्थानांग सूत्र में 5 प्रकार के आस्रवों का वर्णन है।

मिथ्यात्व ↓ अव्रत ↓ प्रमाद ↓ कषाय ↓ योग ↓

प्र. 2 आस्रव के पाँच प्रकारों का अर्थ क्या है?

उ. पाँच आस्रवों का संक्षिप्त अर्थ इस प्रकार है-

1. मिथ्यात्व :- जिनेश्वर भगवंतों की वाणी पर श्रद्धा न होना अथवा न्यूनाधिक श्रद्धा होना मिथ्यात्व है। भवसिद्धिक (भवी/भव्य) जीवों को आत्मकल्याण का मार्ग बताने हेतु केवलज्ञानी भगवान् उपदेश फरमाते हैं। उनके वचनों पर अश्रद्धा करने से आत्मा के साथ कर्मों का बंध होता है।
2. अव्रत :- पापकारी कार्यों का त्याग न करना अव्रत कहलाता है। पाँच प्रकार के अव्रत बताये गये हैं :-
   (अ) प्राणातिपात - जीव हिंसा करना
   (ब) मृषावाद - असत्य बोलना
   (स) अदत्तादान - चोरी करना/किसी की वस्तु बिना पूछे लेना
   (द) मैथुन - कुशील सेवन करना
   (य) परिग्रह - धन-संपति आदि पर आसक्ति/ममत्व भाव रखना

   इन पाँच कारणों से जीव के कर्मबंध होता है।
3. प्रमाद :- हित-अहित अथवा उचित-अनुचित का सही निर्णय न कर पाना अथवा निर्णय करके भी हितकारी कार्यों में प्रवृत्ति न करना प्रमाद है।
4. कषाय :- क्रोध, मान, माया और लोभ में प्रवृत्त होना आस्रव है।
5. योग :- मन, वचन और काया की प्रवृत्ति को योग कहते हैं। योग के कारण आत्मा का कर्मों से संबध जुड़ता है। योग दो प्रकार है- शुभ योग और अशुभ योग।

   शुभ योग (शुभ उद्धेश्य से की गई प्रवृत्ति) से शुभ/पुण्य कर्मों का बंध होता है। अशुभ योगों (अशुभ उद्धेश्य से की गई प्रवृत्ति) से अशुभ/पाप कर्मों का बंध होता है।

   उपर्युक्त पाँच प्रकार के आस्रव कर्मबंध के कारण हैं।

   सारांश :- जैसे जल में रही हुई नाव में यदि छेद हों तो उन छेदों से नाव में पानी प्रवेश करता है वैसे ही आत्मारूपी नाव में आस्रवरूपी छेदों, कर्मरूपी छेदों से कर्मरूपी पानी प्रवेश करता है।

   इस प्रकार आस्रव तत्त्व का स्वरूप समझकर आत्मा में कर्मों के आने के द्वारों को बंद करके परमकल्याण की अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है।

-क्रमशः

गुरु राम

# पुण्य की पराकाष्ठा

-गौतम पारख

गुणों की पूजा ही जिसके प्राण है, त्याग जिसकी नींव है, अहिंसा जिसका मार्ग है, सत्य जिसकी आँखें हैं, सिद्धत्व जिनकी मंजिल है, शरीरी से अशरीरी बनना जिनका ध्येय है, साथ ही अंत में जो सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो चुके हैं, उन सब भव्य आत्माओं को एक सूत्र में पिरोने वाले महामंत्र का नाम है नवकार मंत्र। जाति, मजहब व धर्मविशेष की परिधि से भी ऊपर उठकर शाश्वत सत्य को पाने के राहगीरों व मंजिल पर पहुँच चुके राही (सिद्ध) को नमस्कार करने की अद्वितीय विद्या है- नवकार महामंत्र। नौ पुण्यों में नमस्कार पुण्य की अन्तिम पराकाष्ठा का नाम है- नवकार मंत्र।

नवकार मंत्र में जीवन के सत्य, साध्य और साधक स्वरूप को समझने का बोध प्राप्त होता है। मोक्ष के प्रणेता, मोक्ष के भोक्ता एवं मोक्ष पथ के साधक इन तीनों के गुणों का जहाँ साक्षात्कार होता है और श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है साथ ही आँखें बन्द कर, हाथ जोड़कर, पाँचों अंगों को नवाकर जिनको नमन करने का सहज, स्वाभाविक भाव हिलोरें लेने लगता है, उन्हें पंचपरमेष्ठी के नाम से पुकारा जाता है। यह मंत्र पापनाशक, शांतिदायक, मोह-कालुष्य का प्रक्षालक और मान-मल का शोधक है। इसलिए इसे सभी मंगलों में प्रथम मंगल कहा जाता है।

यह संप्रदायातीत है क्योंकि व्यक्ति पूजा से परे, एक मात्र गुणपूजक है। इसलिए अनन्त बार चौबीस तीर्थंकर हो चुके हैं, वर्तमान में चौबीस तीर्थंकर हैं और भविष्य में अनन्त चौबीसी (तीर्थंकर) होंगे, परन्तु व्यक्ति पूजा से परे होने के कारण यह मंत्र शाश्वत ही रहेगा। इसमें काल के प्रभाव से भी कोई परिवर्तन नहीं होगा। नाम तो व्यक्ति की पहचान के लिए होता है, अस्तित्व का बोध कराता है, लेकिन गुणों से ही व्यक्ति के आचरण, कृत्य भावों का बोध होता है।

नवकार मंत्र में अरिहन्त के बारह गुण, सिद्ध के आठ गुण, आचार्य के छत्तीस गुण, उपाध्याय के पचीस गुण और साधुजी के सत्ताइस गुणों का अलग-अलग वर्गीकरण किया गया है। सिद्ध के मात्र आठ गुण बताये गये हैं, जबकि सिद्धत्व तो सम्पूर्ण कर्मों के क्षय हो जाने पर मोक्ष प्राप्त हो जाने पर प्राप्त होता है। प्रश्न उठता है कि सिद्ध के आठ गुण ही क्यों? सिद्धों के एक-एक गुणों में अन्य पदों के गुणों का समावेश हो जाता है। अत: गुणों की संख्या से नहीं गुणों के घनत्व से यहाँ पर अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय व साधु की पहचान होती है। जैसे समता, समभाव शब्द के उच्चारण से क्रोध, मान, माया, लोभ इन चारों कषायों के शमन की साधना समाहित हो जाती है। अत: समता शब्द को शास्त्रों के संदेश का निष्कर्ष भी माना गया है।.

नवकार मंत्र के पाँच पदों- अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु - इन सभी के मिलाकर एक सौ आठ गुण होते हैं। एक माला में (12+8+36+25+27 = 108) एक सौ आठ मनके होते हैं। अन्य परम्पराओं में भी माला में एक सौ आठ मनके होते हैं। माला फेरते समय व्यक्ति प्रभु के नाम का स्मरण करता है अर्थात् व्यक्ति को ही याद करता है, परन्तु नवकार मंत्र से शिक्षा मिलती है कि नामों की अपेक्षा उनके गुणों का स्मरण कर और उनके गुणों को आत्मसात् करने की शपथ लें, तभी तुम्हें मुक्ति मिल पायेगी। अत: अन्त में गुणपूजक बनना ही मोक्ष का दरवाजा है। गुण पूजा ही महामंत्र नवकार का पर्यायवाची कह देवें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। नवकार मंत्र के पाँच पदों- अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु में 35 अक्षर होते हैं। 35 को जोड़ देवे तो (3+5 = 8) होता है अर्थात् आठ कर्मों का क्षय होता है। यही सिद्धत्व है, यही मुक्ति है। नवकार मंत्र में कुल नौ पद होते हैं। नौ पदों में अड़सठ अक्षर होते हैं। 68 को 6+8 जोड़

गुरु राम

देने से 14 होता है। जैन मान्यता के अनुसार 14वें गुणस्थान में पहुँचने पर सिद्धत्व अथवा मुक्ति के सोपान में पहुँच जाते हैं।

नवकार मंत्र के पाँच पदों में पाँच बार 'णमो' और अन्त के चार पदों में 'णमो' शब्द एक बार आता है अर्थात् नवकार मंत्र में णमो शब्द छह बार आता है। णमो का अभिप्राय नमस्कार, झुकना, विनयवान बनना है। मैंने अनुभव किया कि एक बार नवकार मंत्र बोलने से छ: बार झुकने का, विनयवान बनने का संदेश मिलता है। हे भव्यप्राणी! तू अपने अहंकार को गला दे, क्रोध को शान्त कर ले, माया (छल, कपट) से मुक्त हो जा, लोभ के जाल से अपने आपको निकाल ले, तभी तो सही मायने में नमस्कार करना सीखेगा, झुकना सीखेगा, विनयवान बनेगा। अन्यथा ये क्रोध, मान, माया, लोभ तुम्हें दुर्गति का मेहमान बना देंगे।

पंच परमेष्ठी के पाँच पदों में विराजित, अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु के भी रंग विज्ञान की दृष्टि से अलग-अलग रंगों का संयोजन किया गया है। अरिहन्त का श्वेत रंग अर्थात् तेरा हृदय पावन-पवित्र श्वेत हो चुका है। अब तू मोक्ष के दरवाजे में पहुँच चुका है, प्रवेश बाकी है। सिद्धों का लाल रंग लालिमा का प्रतीक है। आत्मा जब अपने निज स्वरूप में आ जाती है, शाश्वत सुख में लीन हो जाती है तो उसकी लालिमा आत्मीय प्रकाश का प्रतिबिम्ब बन जाती है। आचार्यों को पीले रंग का रंग विज्ञान की दृष्टि से प्रतीक माना गया है। स्वर्ण की तरह जैसे-जैसे तुम तपोगे, साधना करोगे, विशुद्ध साध्वाचार का स्वयं पालन करोगे और दूसरों को पालन करवाओगे तो तुम इस पाँचवें आरे में अरिहन्त का बोध करवाने वाले बन जाओगे। गुणों की पूजा, प्रतिभाओं का उन्नयन करना आपका साधना जगत् में एक मात्र लक्ष्य बन जावेगा।

उपाध्यायों को नीले रंग का प्रतीक बताया गया। ग्रन्थों, शास्त्रों व जिनवाणी के मर्म को स्व-पर सारी मान्यताओं के दलदल से ऊपर उठकर जिनवाणी का स्वयं अध्ययन कर अन्यों को अध्ययन करवाने का गुरुतर दायित्व ही तुम्हारे नीलकण्ठ बनने का प्रतीक है। पंच परमेष्ठी में अन्तिम पद है- साधु! साधुओं का रंग विज्ञान की दृष्टि से काला रंग है। यह रंग बोध देता है- हे सन्तजन! तुम साधुत्व की श्रेणी में प्रवेश कर चुके हो। तुम्हारे सामने पूर्वकृत् कर्मों की काली शृंखला मौजूद है। तुम में इन काले कर्मरूपी बादलों को काटकर आत्मा को प्रकाशित करने का अद्वितीय अवसर है। कठिन साधना करो। निस्पृह, निष्काम भावों से साधनारत रहो। तेरे-मेरे के बंधन से मुक्त होकर परमात्म पद को पाने के लिए दृढ आस्था, दृढ मनोबल व कठोर साधना के साथ जीवन जीओ।

नवकार मंत्र में प्रथम पाँच पद ही परमेष्ठी के पदों से जाने जाते हैं। शेष चार पद पापनाशक, मंगलकारक भावों का बोध करवाते हैं। कहा गया है- नवकार मंत्र की विशुद्ध व्याख्या जब आप करेंगे तो इसमें चौदहपूर्व का सार व शास्त्रों का मकरंद छिपा है।

हे प्रभो! हमें भी गुणपूजक का उपासक बनने का सामर्थ्य सदैव प्रदान करते रहें। हे प्रभो! हमें शक्ति देना कि हम भी साधना पथ के पथिक बनें। प्रभु इतना सामर्थ्य अवश्य देना कि गृहस्थ धर्म का ईमानदारी पूर्वक पालन करते हुए इनसानियत व मानवता के हम पुजारी बन सकें। -राजनांदगाँव

●●●

संसार में जिधर दृष्टि डालिये कहीं भी सर्वात्मना कष्ट रहित अवस्था नहीं मिलती है। ऊपर से भले कोई कह दे कि मैं शांति से, सुख से रहा हूँ, पर अन्त:करण में दु:ख अनुभव करता है। वह सोचता है कि भले मुझे धन वैभव मिला है, पर अन्तर में संतुष्टि नहीं है। तृष्णा रहती है कि यह प्राप्त करूं, वह प्राप्त करूं। यह संसार का रूप प्राय: सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। जब बच्चा जन्मता है तो विशेष कोई आवश्यकता नहीं रहती, मात्र दूध की आशा रखता है। वह मिलने के बाद वह संतुष्ट हो जाता है, पर वास्तविक रूप में नहीं हो पाता क्योंकि धीरे-धीरे दूध के बाद खाने की ओर चाह बढ़ती है, उसके बाद तो 99 का चक्कर उसे सताने लगता है, जो उसे चैन से नहीं रहने देता।

गुरु राम

**-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.**

लेख

# विनाश काले विपरीत बुद्धि

-धार्मिक श्राविका

वो कहते हैं ना कि ''विनाश काले विपरीत बुद्धि'' ऐसा ही कुछ हो रहा है विश्व के देश उत्तर कोरिया में, जहाँ कि आज भी तानाशाही शासन चलता है। आज भी वहाँ के नागरिकों को कोई स्वतन्त्रता नहीं है। उन्हें अपने राजा की हर सही-गलत बात सिर झुका कर सुननी पड़ती है। उत्तर कोरिया के राजा है किम-जोंग-उन। हाल ही में उन्होंने एक घोषणा की है कि पालतू कुत्ते ''पूंजीवादी पतन'' का प्रतीक हैं, क्योकि देश भोजन की कमी से जुझ रहा है। अत: तानाशाह किम ने जुलाई में घोषणा की कि कुत्तों समेत एक पालतू जानवर का मालिक अब कानून के खिलाफ है।

संयुक्त राष्ट्र की हालिया रिपोर्ट के अनुसार उत्तर कोरिया के 25.5 मिलियन लोगों में से 60 प्रतिशत को भोजन की कमी का सामना करना पड़ रहा है, जो उसके परमाणु मिसाईल कार्यक्रमों के लिए शासन पर लगाए गए अन्तरराष्ट्रीय प्रतिबन्धों से और भी खराब है।

प्रतिवर्ष दो मिलियन कुत्तों की खपत अभी भी उत्तर कोरिया में प्रधान मेनू पर है। विचार करें कि कितनी भयावह होगी उस देश की स्थिति जिसका वातावरण हर पल बेजुबान जानवरों की चीख से गुंजायमन रहता है, जहाँ की गलियों में खून या आंसु की नदियाँ बहती हों, जहाँ हर एक व्यक्ति के हाथ खून से रंगे हों। सोचने वाली बात यह है कि उस देश में ऐसा चलन चला क्यों? क्योंकि वहाँ के लोगों के हाथ नहीं कांपते किसी प्राणी को मारते हुए। यहाँ फर्क है तो सिर्फ विरासत में मिले संस्कारों का। आज से 2500 वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने ''जिओ और जीने दो'' का सिद्वान्त दिया था और आज लोग उसी सिद्वान्त पर चलकर एक चींटी को भी मारने से कतराते हैं, परन्तु उत्तर कोरिया शायद वहाँ के किसी बड़े महापुरुष ने यह मांसाहार की परम्परा चलाई है।

वहाँ के लोग चाहें या न चाहें उन्हें अपने प्यारे पालतू जानवरों की बलि अपने तानाशाही राजा के आदेश पर देनी होगी। चिन्तन करें कि यदि वहाँ धर्म होता, संस्कार होते तो क्या आज यह परिस्थिति पैदा होती? वहाँ के लोगों को ना कर्मो का डर है ना उनकी सजा का और डर हो भी कैसे? उनमें यह डर पैदा करने वाला कोई हो ही ना। फिर भी प्रकृति का नियम बस ब्रहाण्ड का हर प्राणी भली-भाँति जानता है कि ''जैसा करोगे वैसा भरोग'' क्योंकि वह कितने समय तक कुत्तों से अपना भोजन प्राप्त करेगा? एक ना एक दिन वह भी खत्म होंगे।

अत: हमें इतना समझना चाहिये कि हमें अपने कर्मो की वजह से आर्य देश, उच्च कुल मिला है। किसी भी परिस्थिति में अपना धर्म और देश ना छोड़ें, क्योंकि धर्म है तो नैतिकता, मानवता सभी हैं, नहीं तो कुछ नहीं। आज अपने बुरे कर्मो के फलस्वरूप उत्तर कोरिया के लोगों को ना चाहते हुए भी राजा का आदेश मानना पड़ रहा है, हिंसा करनी पड़ रही है। आज अगर उस देश में महापुरुषों की सत्संगति मिली होती, उनका उपदेश मिला होता तो शायद उस देश की स्थिति ऐसी ना होती। आज के युग में महापुरुषों की वाणी, समागम, संतों के सान्निध्य से ही उद्धार है, नहीं तो इस चकाधौध में हम कब मंजिल भटक जायेंगे और कहाँ पहुँच जायेंगे हम स्वयं भी नहीं जानते। इसलिये आचारांग सूत्र में कहा है-

**इच्चत्थं गढिए लोए, जमिणं विरूवरूवेहे सत्येहिं तसकाय कम्म सभारंभेण तसकाय-सत्थं सभारंभाणे अण्ण अगणगरूवे पाणे विहिंसति।**

अर्थात्

भगवान् से या गृहत्यागी श्रमणों के समीप रहकर कुछ मनुष्य यह जान लेते हैं कि हिंसा ग्रन्थि है, मृत्यु है, मौत है, नरक है। ●●●

गुरु राम

# श्रीमद्भगवतीसूत्र

गतांक से आगे...

-श्रीमती कंचन कांकरिया

## पाप-पुण्य कर्म और फल श. 7 उ. 10

**प्र. 2229 भंते! क्या जीवों को पापकर्म अशुभ फल विपाक सहित लगते हैं?**

उत्तर हाँ, कालोदायी लगते हैं।

**प्र. 2230 पापकर्म अशुभ फल विपाक सहित कैसे होते हैं?**

उत्तर मिट्टी के बर्तन में अच्छी तरह पकाया हुआ 18 प्रकार के व्यंजनों से युक्त विष मिश्रित भोजन करते हुए अच्छा लगता है किन्तु उसका परिणमन दु:ख रूप होता है। उसी प्रकार 18 पाप करना जीव को अच्छा लगता है किन्तु पाप के कड़वे फल भोगते समय जीव दु:खी होता है।

**प्र. 2231 भंते! क्या जीवों के कल्याण कर्म शुभ फल वाले होते हैं?**

उत्तर हाँ, कालोदायी! कल्याण कर्म शुभ फल वाले होते हैं। जैसे- मिट्टी के बर्तन में अच्छी तरह पकाया हुआ 18 प्रकार के व्यंजनों से युक्त औषध मिश्रित भोजन अच्छा नहीं लगता है किन्तु उसका परिणमन सुखदायी होता है। उसी प्रकार 18 पाप त्यागते समय अच्छा नहीं लगता है किन्तु जब कल्याणकारी पुण्यफल उदय में आता है तब बहुत सुखदायी होता है।

## अग्नि के जलाने-बुझाने की क्रिया श. 7 उ. 10

**प्र. 2232 एक पुरुष अग्नि जलाता है और एक पुरुष अग्नि बुझाता है, इन दोनों में कौन महाकर्म, महाक्रिया, महाआस्रव और महावेदना वाला है और कौन अल्पकर्म, अल्पक्रिया, अल्प-आस्रव और अल्पवेदना वाला है?**

उत्तर 1. जो पुरुष अग्नि जलाता है, वह महाकर्म यावत् महावेदना वाला है क्योंकि वह तेउकाय का अल्पारंभी है किन्तु 6 काया में से शेष 5 काया का महारंभी है।

2. जो अग्नि बुझाता है, वह अल्पारंभी है क्योंकि वह 5 काया का अल्पारंभी और एक तेउकाय का महारंभी है। जैसे- जंगल की आग बुझाने वाला।

**प्र. 2233 क्या अचित्त पुद्गल भी अवभास (प्रारम्भिक प्रकाश) करते हैं, उद्योत (अधिक प्रकाश) करते हैं, तपते हैं (गर्मी पहुँचाते हैं) और प्रकाश (पूर्ण प्रकाश) करते हैं?**

उत्तर हाँ, कालोदायी! अचित्त पुद्गल भी अवभास यावत् प्रकाश करते हैं।

**प्र. 2234 कौन-से अचित्त पुद्गल अवभास यावत् प्रकाश करते हैं?**

उत्तर कोपायमान तेजोलेशी लब्धिवंत अनगार की तेजोलेश्या निकलकर नजदीक या दूर जहाँ जाकर गिरती है वहाँ वे अचित्त पुद्गल अवभास यावत् प्रकाश करते हैं।

**प्र. 2235 उपर्युक्त प्रश्न किस आशय से किया गया है?**

गुरु राम

उत्तर सचित्त तेउकाय के पुद्गल अवभासित यावत् प्रकाशित होते ही हैं, परन्तु क्या अचित्त पुद्गल भी अवभासित यावत् प्रकाशित होते हैं? इस शंका के समाधान के लिये उपर्युक्त प्रश्न किये जाने की संभावना है।

**प्र. 2236 क्या कालोदायी अनगार सर्व दु:खों से मुक्त हुए?**

उत्तर कालोदायी अनगार उपवास, बेला, तेला आदि तपस्या करते हुए केवलज्ञान, केवलदर्शन उपार्जन कर सिद्ध, बुद्ध यावत् मुक्त हुए।

**प्र. 2237 तेजोलेश्या (तेजो ज्वाला लब्धि) के अलावा अन्य कौन-से अचित्त पुद्गल अवभास यावत् प्रकाश करते हैं?**

उत्तर सूर्य विमान से निकले हुए अचित्त पुद्गल भी अवभास यावत् प्रकाश करते हैं।

**प्र. 2238 देवताओं को तेजोलब्धि किस प्रकार प्राप्त होती है?**

उत्तर देवों को वैक्रिय शरीर की तरह यह लब्धि भी भवस्वभाव से प्राप्त होती है।

**प्र. 2239 क्या देवता तेजोलब्धि का प्रयोग करते हैं?**

उत्तर युद्धादि में तीव्र क्रोध के उदय में इसका प्रयोग करते हैं। श्रीमद्प्रज्ञापनासूत्र के 36वें पद में भवनपति से 12वें देवलोक तक के देवों में इसका प्रयोग जघन्य 1, 2, 3 यावत् संख्यात्, असंख्यात बार बताया है।

**प्र. 2240 मनुष्य में तेजोलब्धि किस प्रकार प्रकट होती है?**

उत्तर बंद मुट्ठी में जितने उड़द के बाकुले आवें, उतने खाकर और चुल्लु भर पानी पीकर, निरन्तर छठ-छठ की (बेले-बेले की) तपस्या के साथ, दोनों हाथ ऊँचे कर सूर्य की आतापना लेने वाले को छह मास में तेजोलेश्या प्राप्त होती है।

**प्र. 2241 तेजोलेश्या का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है?**

उत्तर तेजोलेश्या के प्रयोग के लिए तैजस् समुद्घात किया जाता है।

**प्र. 2242 क्या सभी की तेजोलेश्या समान होती है?**

उत्तर सबकी समान नहीं होती है। तेज-मंद भी होती है।

**प्र. 2243 तेजोलेश्या की विरोधी लब्धि कौन-सी है?**

उत्तर शीतोलेश्या।

**प्र. 2244 शीतोलेश्या का वर्णन कीजिए।**

उत्तर तेजोलेश्या के प्रकोप से बचाने के लिए अथवा जगत् को महामारी और रोगादि से पीड़ित देखकर संयमी, महातेजस्वी साधु के हृदय में प्राणियों की रक्षार्थ दया उत्पन्न होने पर उनको बचाने के लिये शुभ तेज निकालते हैं यानी आभोगपूर्वक दृष्टि प्रक्षेप करते हैं, उसे शीतोलेश्या कहते हैं। इससे कष्ट दूर हो जाता है।

**प्र. 2245 तेजोलेश्या का वर्णन कीजिए?**

उत्तर मुनि कुपित होता है तब 7-8 कदम पीछे जाकर तैजस् समुद्घात के द्वारा अशुभ तेज पुद्गलों को निकालता है। ये पुद्गल जहाँ के लिए छोड़े जाते हैं वहीं जाकर खुलते हैं (Guided Missieles की तरह) और पात्र को भस्म या पीड़ित करते हैं। सूर्य किरणों की तरह ये बीच में नहीं खुलते हैं।

गुरु राम

-क्रमशः

लेख

# सच्चा जैनी कहता है, कोरोना से डरो मत

-सोनू पवनजी मूणत

We have to live with corona. we have to change our life style. No music, no theatre, no parties, less business will lead to less expenditure, minimum helpers. So what is the right life style..... should we be worried or take life as it comes.

दुनिया हिला दी इक वायरस ने जिसका नाम कोरोना
सच्चा जैनी कहता इससे डरो ना।

जी हाँ, कोरोना एक ऐसा वायरस है जो हमारे जीवन में आँधी की तरह आया और तूफान की तरह हमें हिलाकर रख दिया। कहने को तो ये एक साधारण-सा अदृश्य जीव है, जिसने हम पंचेन्द्रिय जीवों को अपने इशारों पर बखूबी नचाया और हम नाचे, किन्तु अब महसूस हो रहा है कि यदि कोरोना के साथ ही जीना है तो क्यों ना अपने जीवन जीने के तौर-तरीकों में थोड़ा-थोड़ा बदलाव करके और अपनी जिंदगी में कोरोना के डर को खत्म करके जिया जाये क्योंकि- ''जिंदगी ना मिलेगी दोबारा''।

भले ही ये एक फिल्म का नाम हो, लेकिन आप और मैं सभी ने अनेक बार गुरु-भगवंतों के मुख से मनुष्य भव की दुर्लभता के बारे में सुना है। 84 लाख जीवयोनी में भटकते हुए हमें मनुष्य भव प्राप्त हुआ है। अब कोरोना की वजह से हमें इसे नष्ट नहीं करना चाहिये बल्कि अपने जीवन जीने की शैली में परिवर्तन करना होगा। जब कोरोना भारत में नहीं आया था तब हमें लगता था ऐसा भी हो सकता है कि आदमी दिनभर घर में ही रहेगा। बाजार में खाना-पीना बिल्कुल बंद हो जायेगा। दिन हो या रात मास्क हर समय आवश्यक होगा। मनोरंजन के लिए थियेटर, होटल, पार्टी सब बंद करने होंगे, लेकिन इन सबके बावजूद भी हमारी जिंदगी अविरल गति से चली जा रही है क्योकि मरना कोई भी नहीं चाहता। सब जीना चाहते हैं। उसके लिए हमें जो करना पड़े, हम करते हैं।

कोरोना के चलते हमें अपने जीवन में जैन धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों को अपनाना पड़ेगा। जैसे- सात व्यसन का त्याग, रात्रिभोजन का त्याग, जंकफूड और बाहर के खाने का त्याग, गर्म व धोवन पानी पीना। इस तरह छोटी-छोटी बातों को अपनाकर हम हमारे जीवनप को सुरक्षित बना सकते हैं अन्यथा जो अन्य देशों के हाल हुए हैं वो ही हमारे भी होंगे।

जहाँ तक कोरोना का सवाल है तो मुझे लगता है उसने हमें जिंदगी जीने के सही मायने समझाये हैं। सभी व्यक्ति भाग-दौड़ वाली जिंदगी जी रहे थे, वहीं कोरोना ने उन्हें थमना सिखाया। अपने स्वास्थ्य के प्रति, परिवार के प्रति, धर्म के प्रति, समाज के प्रति, कर्त्तव्यों का भान कराया और व्यक्ति के सोचने के तरीके में परिवर्तन लाया और यही परिवर्तन हमें अपनों के पास लाता है। लेकिन हमारा नजरिया शुरू से ही हमारे पास जो नहीं है उस पर अधिक रहता है। एक उदाहरण से समझते हैं कि बच्चों का रिजल्ट आया और उसको 60 प्रतिशत अंक आये तो उसके प्रति अपना दृष्टिकोण क्या रहेगा? हम सब उससे 40 प्रतिशत कम आने का कारण पूछेंगे ना कि 60 प्रतिशत आने पर उसकी पीठ थपथपायेंगे। क्योंकि हमारा नजरिया हर परिस्थिति में कमी देखने का ही हो चुका है। हम उस कमी पर ही फोकस करते हैं, बल्कि जो अच्छा है हमें उस पर फोकस करना चाहिये।

व्यापार में इन दिनों बहुत नुकसान हुआ, लेकिन फिर भी हम स्वस्थ हैं तो ये हमारे जीवन का सबसे बड़ा लाभ है।

बहुत दिनों से हमने पार्टी नहीं की, लेकिन परिवार के साथ जो समय बिताया वो भी किसी

गुरु राम



श्रावक! तू पूरे विश्व का विरल है, तू विशेष है।

पार्टी से कम नहीं था।

बहुत दिनों से हम थियेटर नहीं गये, लेकिन लॉकडाउन के दौरान जो सपरिवार रामायण, महाभारत देखी वो भी थियेटर से कम नहीं थी।

क्या फर्क पड़ता है बहुत दिनों से हमने होटलों में नहीं खाया फिर भी घर पर दादी, नानी, मम्मी के हाथों के स्वादिष्ट व्यंजन भी किसी पकवान से कम नहीं थे।

अंतर केवल हमारे नजरिये का है। इन वर्तमान परिस्थिति को हम नहीं बदल सकते, लेकिन हम अपने जीवन को कैसे बेहतर जी सकते हैं ये हमें सोचना है। किसी और को या परिस्थिति को दोष देने की बजाय हम उसमें परिवर्तन करके किस तरह अच्छी जिंदगी जी सकते हैं हमें इस पर चिंतन करना है। ●●●

---

कहानी

# तात्कालिक कर्मफल

कभी-कभी ऐसा प्रसंग आता है कि पाप को करते-करते ही उसका फल प्राप्त हो जाता है। कभी पाप करने के बाद फल मिलता है तो दो-तीन सप्ताह में भी मिल सकता है। कभी वर्षों बाद मिल सकता है।

मेरठ जिले के दादरी गांव में एक पहलवान रहता था। पहलवानी करने के बाद वह दूध पीता था। दूध भी पर्याप्त मात्रा में आवश्यक था। वह दूध खरीद कर लाया और उसे बर्तन में डाल कर अंगीठी पर गर्म करने को रख दिया तथा सोचा कि कसरत करके वापस आकर दूध पी लूंगा। हंडिया रखकर कसरत करने चला गया। वहां पर एक कुतिया थी, जो चुपके से आकर कुछ दूध पी लेती थी। ऐसा उसने कुछ दिनों तक अनुभव किया। उसने सोचा कि कोई मनुष्य तो यहां दिखता नहीं, फिर दूध कौन पी गया?

एक दिन उसने कुश्ती को गौण किया और हंडिया को रखकर कोने में छिपकर बैठ गया। कुतिया का रोजाना का अभ्यास था, उसने दूध पीना चालू किया। पहलवान चट से निकलकर बाहर आया और कमरे में कुतिया को बन्द कर दिया। कुतिया ने कितना दूध पीया होगा- इतने दिनों में अधिक से अधिक एक-दो किलो पीया होगा। उस पहलवान ने लोहे की सलाखा तपाई और कुतिया की आँखों में डालकर उसकी आँखें फोड़ दी। देखिये, मनुष्य कैसे अपने जीवन का दुरुपयोग करता है और कैसे मन को मलिन करता है। कुतिया तत्क्षण तो नहीं मरी, लेकिन उसको इतनी वेदना हुई कि तीन दिन बाद वह समाप्त हो गई।

पहलवान ने खुशी मना ली कि मैंने दूध का बदला चुका लिया।

कहते हैं- कुदरत में देर है, लेकिन अंधेर नहीं है। सरकार देख लेती तो कुतिया को मारने का दण्ड दिया जाता या नहीं, ऐसा प्रावधान कानून में है या नहीं?

लेकिन कुदरत की रचना में देर है, अंधेर नहीं। इससे उसका इतना कर्मबंधन हुआ कि वह कर्मबन्धन सप्ताह-भर में ही प्रकट हो गया। पहलवान की दोनों आँखों में इतनी पीड़ा होने लगी, आँखें इतनी जलने लगी कि सहना कठिन हो गया। उस भाई की आँखों में वेदना इतनी तीव्र हुई कि वह भी सात दिन में समाप्त हो गया! यह निकट भविष्य में फल प्राप्ति की बात हुई। किन्तु जिसके मन में पवित्रता होती है, वह मन में संस्कारों को ठीक करता रहता है। उसे कुछ अच्छा निमित्त मिलता है। कोई किसी को मारने का प्रयास करता है, तब भी नहीं मार सकता पर मारने वाला मारने की भावना का दण्ड पहले ही पा लेता है। ●●●

गुरु राम

लेख

# कमाना या जीना?

-अरुणा चौरड़िया

''कमाना'' शब्द दैनिक जीवन में अलग-अलग क्रियाओं के साथ जुड़ता हुआ नजर आता है। जैसे- नाम कमाना, पुण्य कमाना, पैसा कमाना आदि। सभी जगह यह पुरुषार्थ का संकेत करता है। कर्मो की उदय स्थिति शुभ का संकेत करती है, पर सारे कमाने के कार्यक्रम (जो दायरे में किये जाएं) वो शरीर से जुड़े हैं और एक सुखी जीवन के लिए अनिवार्य हैं। आज का युग पैसे का युग है। व्यक्ति इसी को माध्यम बनाकर नाम भी और पुण्य भी कमाने का प्रयास करता है। जीवन यापन हेतु पैसा जरूरी है, पर पैसा ही जरूरी है इस सोच को बदलने का सही समय अब ही है। जीने के लिए पैसा है, पैसे के लिए जीवन नहीं। वैसे ही दूसरा शब्द है- जीना। जीवन जीना, खुद के लिए जीना, औरों के लिए जीना, यह जीवन से अलग-अलग स्थलों पर जुड़कर जीवन को गति, आकार व मतलब देते हैं। हर जीव सुख का इच्छुक रहता है। इसलिए अपने सुख की कल्पना हेतु व अपने तरीके से परिश्रम करता है अर्थात् जब तक जीता है तब तक किसी न किसी रूप में कमाता है, तो व्यर्थ है कहना कि जीवन नहीं तो क्या कमाना यह तो इकतरफा सत्य है।

आज की स्थिति में जहाँ कोरोना की बीमारी से ग्रसित सारा संसार है, दु:ख, वेदना व मृत्यु आस-पास मंडरा रही है। विचार आता है कि क्या और कितना आवश्यक है? इस समय में क्या कमाई करने के नए रास्ते ढूंढ़ने हैं या कमाए हुए धन आदि का उपयोग कर जीवनशैली, मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में करना चाहिये। इस महामारी के दौरान यदि हम स्ट्रेस फ्री रहें, स्वस्थ रहें तो फिर से अच्छा समय आने पर धन कमाने का रास्ता मिल ही जाएगा। पर अभी भी हाय धन, हाय पैसा करते रहे तो स्वास्थ्य तो बिगड़ेगा ही, कहीं जान से हाथ न धोना पड़े। कई बार पैसा बहुत जोड़ लेते हैं, पर उसके उपयोग का सही समय ही नहीं मिलता। परिवार बहुत बड़ा बसा लेते हैं, पर उसकी खुशियों में शामिल होने का अवसर खो देते हैं। यह समय जीवन से जुड़े हर रिश्ते को जानने का, समझने का व प्रेम से संवारने का सुअवसर है। फिर दोबारा शायद कभी न आए।

जो पैसा कमाने में तल्लीन रहते थे उनको इस वक्त अपनी कार्यक्षमता को घटाने में बहुत तकलीफ महसूस हो रही होगी। पर वर्तमान समय ने पुण्य उपार्जन की शुभ भावनाओं की, गहरे चिन्तन से जागृति की व परिवार में एकता की कमाई करने का सुन्दर अवसर सबको प्रदान किया है। यह बात तो तय है कि जीवन के अन्त में कमाया हुआ या तो व्यक्ति देकर जाता है या छोड़कर जाता है। लेकर तो इस शरीर को भी नहीं जाता। पर सुन्दर जीवन जीने वाला देते हुए खुशी से, शांति से जाता है और पीछे एक सुन्दर परिवार व समाज का निर्माण करने में अग्रणी माना जाता है।

जिस धन को एकत्रित किया, संभाल कर रखा, खर्च करने पर चिंता, चोरी की चिंता, नींद न आने की चिंता, इतनी मेहनत के इस पैसे का उपयोग तो करके देखो। कहीं ऐसा न हो कि लापरवाही के कारण, लोभ के कारण अस्वस्थ होकर संसार से ही विदा होना पड़े। कई साल तो पैसा कमाया, अब जीवन को भी जीने का सही सलीका आ जाए तो कितना परिपूर्ण लगे यह मनुष्य जन्म। चारों ओर दु:ख का वातावरण छाया है। इस समय पर द्रपा और क्षमा की भावना से जीव-जीव के प्रति शुभ तरंगों की कमाई का मौका ढूंढ़ो। आज तक जो मिला उसके प्रति अहोभाव और जिनके पास नहीं है, जिनको नहीं मिला उन पर अनुकम्पा की दृष्टि रखना सीखें।

निरोगी मन एक निरोगी शरीर का निर्माण करता है और एक निरोगी शरीर से मन निरोगी बनता है। जो समय का सदुपयोग करता है वह बाजी को जीत जाता है। इसलिए आज के समय में शरीर व मन की ऊर्जा को सकारात्मक बनाने का सुन्दर अवसर मिला है। इसे खोएं नहीं। ''जान है तो जहान है'' इस कथन को समझें और कमाने के बजाय जीवन जीना सीखें। रिश्तों में प्रेम बांटें और टूटे रिश्तों को जोड़ें। जीवन निर्वाह की आवश्यकताओं को सीमित करें और भीतर के किवाड़ों पर दस्तक देना प्रारंभ करें। जब पैसे कमाने की दौड़ कम होगी तो जीवन में रंग भरने की गति में तेजी होगी। तो चलिये हमें कमाना तो आ गया, अब जीना भी सीख लें।

-बैंगलोर (कर्ना.)

●●●

गुरु राम


सत्ता प्राप्ति के बाद अपनी सात्त्विकता को गुम नहीं होने देना चाहिये।

# सेवा, परम धन है

-पारसमल चण्डालिया

जैन धर्म में 12 प्रकार के तपों का वर्णन है। उनमें 6 प्रकार के तप बाकृ तप हैं तो 6 प्रकार के तप आभ्यंतर तप हैं। 6 प्रकार के आभ्यंतर तपों में एक तप है- वैयावृत्य (सेवा)। नि:स्वार्थ भाव से दूसरों को साता पहुँचाने की भावना से की गई सेवा कर्म निर्जरा का कारण है। उत्तराध्ययन सूत्र अ. 29 में वैयावृत्य करने से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है? इसके उत्तर में प्रभु फरमाते हैं कि ''वेयावच्चेणं तित्थयर नामगोयं कम्मं णिबंधइ'' वैयावृत्य करने से जीव तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बंध करता है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेवजी के पूर्व भवों में जीवानंद वैद्य के भव में जीवों को अभयदान देते हुए मासखमण तपस्वी मुनि के रोग को दूर करने का प्रबल पुरुषार्थ किया और उन्हें साता पहुँचाई तथा तीर्थंकर गोत्र बांधा। शुभ अध्यवसाय और शुभ भावों से सिद्धार्थ श्रेष्ठी एवं खरक वैद्य ने भगवान महावीर के कानों से कीलें निकाल कर उन्हें साता पहुँचाई तो देव गति का शुभ आयुष्य बांधा। इस प्रकार इतिहास साक्षी है कि नि:स्वार्थ भाव से की गई सेवा महाफलदायिनी होती है। इसीलिए सेवा को परम धन कहा गया है।

तुलसीदासजी ने कहा- ''परहित सरस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई'' दूसरों का हित-भलाई करना, परोपकार करना, सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है तो दूसरों को पीड़ा पहुँचाना सबसे बड़ा पाप यानी अधर्म है। हम अपनी सोच को परोपकारी बनाएं।

कोरोना महामारी के कारण न केवल भारत अपितु विश्व के अधिकांश देश संकट के दौर से गुजर रहे हैं। सबको अपने जीवन की ही चिंता है। भारत में लॉकडाउन के दौर चले। अधिकांश लोग घरों में हैं, पर स्वास्थ्यकर्मी, सेनाकर्मी, पुलिसकर्मी, प्रशासनकर्मी एवं आवश्यक सेवाओं में जुटे ऐसे सेवाभावी लोग हैं जो ईमानदारी एवं नि:स्वार्थ भाव से अपनी जान जोखिम में डालकर कर्तव्य भावों से दिन-रात सेवा करने में जुटे हैं। उन्हें न अपने घर-परिवार वालों की चिंता है, न खाने, पीने, सोने की चिंता। ऐसे सेवाभावी लोग न केवल धन्यवाद के अपितु अभिनंदन के पात्र हैं। जरूरतमंदों की मदद करने वाले अपने फर्ज को अंजाम देने वाले इन देवदूतों के जज्बे को सलाम!

जीवन के असली हीरे तो ये ही कर्मवीर हैं, जो तन, मन, धन से सेवा में समर्पित हैं। फिल्मी नायक, नायिकाएँ, क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन आदि खेलों में पदक जीतने वाले क्षणिक उपलब्धियों के धारक अपना नाम रोशन कर वाहवाही भले ही लूट लें, पर वे असली हीरो नहीं हैं। जो ''जान है तो जहान हैं'' ऐसा सोचकर अन्य जीवों को जीवनदान देने में जुटे हैं, अपनी जान जोखिम में डाल कोरोनो पॉजीटिव जैसे रोगियों की सेवा करने में 24 घंटे लगे हैं। लॉकडाउन के दौरान भूखे को भोजन, निराश्रितों को आश्रय और रोगियों को तन, मन, धन से सहयोग देकर साता पहुँचाने वाले नि:स्वार्थ सेवाभावी कोटि-कोटि धन्यवाद के पात्र हैं। उनका जितना अभिनंदन किया जाये, इनके शुभ कार्यों की जितनी प्रशंसा की जाये, कम है।

संकट की इस घड़ी में भी कुछ लोग ऐसे असहयोगी भाव एवं नकारात्मक विचार वाले हैं, जिन्हें दूसरों को दु:खी देखने में आनंद आता है। ऐसे विघ्न संतोषी लोग स्वयं तो दु:खी हैं ही दूसरों को भी दु:खी बनाने में लगे हैं। सरकारी आदेशों की धज्जियाँ उड़ाकर पुलिसकर्मियों के साथ मारपीट कर रहे हैं, स्वास्थ्यकर्मियों- डॉक्टर, महिला नर्सिंगकर्मियों के साथ अभद्र व्यवहार कर रहे हैं, उन्हें दु:ख पहुँचा रहे हैं। उनके ये कृत्य राष्ट्र-विरोधी एवं निंदनीय हैं। उनकी जितना भर्त्सना की जाये, उतनी ही कम है।

गुरु राम

हम अपना जीवन सुखी और समृद्ध बनाना चाहते हैं तो दूसरे जीवों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझकर उन्हें सुख और साता पहुँचाएं। कहा भी है–

सुख दिया सुख होत है, दु:ख दिया दु:ख होत।

''अहो दुक्खो हु संसारो'' संसार में दु:खी प्राणियों की कमी नहीं है। दु:खी प्राणियों के दु:खों को देखकर उन पर करुणा भाव लाना जरूरी है। दु:खी प्राणियों के प्रति करुणा भाव रखने से हमारा स्वयं का दु:ख कम हो जाता है। दूसरों के दु:खों को देखकर अनुकम्पित होना करुणा है। जब दु:खी प्राणियों के प्रति हम संवेदनशील बनते हैं तब ही सेवा भाव जगते हैं। उनके दु:खों को दूर करने, उन्हें साता पहुँचाने की भावना जगती है।

यदि समाज में कोई अभावों में जी रहा है तो उसकी मदद करना, किसी को भोजन, वस्त्र, आसन, शय्या आदि की आवश्यकता है तो उसे वे वस्तुएँ उपलब्ध करवाना, किसी को चिकित्सा की आवश्यकता है तो उसे चिकित्सा उपलब्ध कराना यानी जिसको जिस समय जो आवश्यकता हो, उसकी पूर्ति करना। करुणा का क्रियात्मक रूप है सेवा। करुणा एवं अनुकम्पा होने पर ही दान देने की भावना होती है। देने में आनंद का अनुभव होता है और पुण्य संचय होता है। यदि हम दूसरों को खुशी देते हैं, दु:खी जीवों को दु:खों से उबारने का प्रयत्न करते हैं तो हमारा जीवन सुखी और समृद्ध बनता है।

–ब्यावर

●●●

# वर्ग पहेली

आचार्य श्री रामेश के प्रवचन ''रक्षाबंधन पर्व का संदेश'' के आधार पर 25-26 जुलाई, 2020

## विजेताओं की सूची

1. प्रमिला जावरिया, सूरत, गुजरात
2. गुलाबदेवी बोथरा, हरियाणा
3. अंजु कोचर, महाराष्ट्र
4. दिव्या बैद, नागपुर, महाराष्ट्र
5. सरिता कोठारी, बीकानेर, राजस्थान
6. जयश्री पुगलिया, कोलकात्ता, प.बंगाल

सत्ता का उपयोग सम्पत्ति बटोरने के लिए नहीं होना चाहिये, उसका सही उपयोग सेवा है।

## आदर्श श्रावक

# श्रेष्ठ स्वाध्यायी श्री माणकलालजी डागा, छोटीसादड़ी

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा अनेक बार सम्मानित, श्रेष्ठ स्वाध्यायी एवं समता प्रचार संघ के संस्थापक सदस्य, नेत्रदानी सुश्रावक श्री माणकलालजी डागा का जन्म 2 अप्रैल 1934 को धर्मनगरी छोटीसादड़ी में धर्मनिष्ठ सरलहृदयी सुश्रावक श्री चांदमलजी व श्रीमती चांदीबाई डागा के घर-आँगन में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटीसादड़ी में हुई, जहाँ से हाई स्कूल के अध्ययन के साथ आपने धार्मिक शिक्षण एवं संस्कार प्राप्त किये।

आचार्य श्री नानेश एवं रामेश के प्रति दृढ़ श्रद्धा एवं अनुशासन आपके जीवन के मुख्य आधार थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मांगीबाई डागा संघ समर्पित सुश्राविका हैं एवं सदैव धर्म-ध्यान, त्याग-तप में अग्रणी रहती हैं। श्री माणकलालजी के तीन पुत्र सर्वश्री महेन्द्रजी, अचलजी व राजेन्द्रजी एवं पौत्र सर्वश्री मीतेन्द्र, अतुल, अंकुर एवं दिव्यांशु सहित भरा-पूरा संस्कारवान, समाजसेवी परिवार है। आपके छोटे भ्राता श्री पारसजी डागा वर्तमान में श्री गणेश जैन छात्रावास एवं नानेश ध्यान केन्द्र, उदयपुर के सह-संयोजक हैं तथा बहिन श्रीमती प्रेमबाई (पत्नी सागरमलजी सहलोत) निम्बाहेड़ा संघ की अग्रणी श्राविका हैं।

### श्री माणकलालजी डागा के गरिमामय जीवन की झलकियाँ-

1. ज्योतिर्धर श्री जवाहराचार्य, पूज्य श्री गणेशाचार्य, पूज्य श्री नानेशाचार्य एवं वर्तमान शासन नायक श्री रामेशाचार्य के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन का आपके जीवन पर सदैव प्रभाव रहा।
2. आपने एक अनुशासित शिक्षक एवं संयोजक के रूप में अनेक स्वाध्यायी शिविरों, महिला एवं बाल संस्कार शिविरों में अध्यापन कराकर अनेक लोगों को धर्म से जोड़ने में अग्रणी भूमिका निभाई। आपके द्वारा शिक्षित एवं प्रेरित कई भव्य आत्माओं ने दीक्षा भी ग्रहण की।
3. आगमों का नियमित स्वाध्याय, शास्त्रों व थोकड़ों के अच्छे जानकार एवं विद्वान् श्री माणकलालजी के पास बत्तीस आगमों सहित प्रचुर साहित्य का संकलन था।
4. बारह व्रतधारी सुश्रावक श्री माणकलालजी के लगभग 25 वर्षों से शीलव्रत, सचित्त का त्याग, उभयकाल प्रतिक्रमण, प्रतिदिन न्यूनतम 5 सामायिक, रात्रि चौविहार, पाँचों तिथियों पर हरी का त्याग के साथ-साथ चार वर्षीतप, चौदह बार नवपद ओली, अठाई, पाँच उपवास, अनेक तेला, बेला, पौषध, उपवास, आयम्बिल, एकासन आदि छोटी-बड़ी तपस्याएँ निरन्तर करते रहते थे।
5. 35 वर्षों से स्वाध्यायी सेवा में आप देश के सुदूर दुर्गम्य स्थानों सहित विराटनगर (नेपाल) में पर्युषण पर्व पर सेवाएँ देने गये।
6. आप साधु-संतों के साथ मीलों तक विहार सेवा में साथ रहते थे तथा साधारणतया छोटीसादड़ी में विराजित साधु-संतों की गोचरी कराने के उपरान्त ही भोजन करते थे।
7. आपने संघ संचालित विभिन्न प्रवृत्तियों के संयोजक के रूप में कई वर्षों तक सराहनीय कार्य किया।
8. छोटीसादड़ी संघ के साथ अन्य कई संघों एवं संघ प्रवर्तित प्रवृत्तियों यथा समता भवन निर्माण, आयंबिल खाता, जीवदया, छात्रवृत्ति, चिकित्सा सेवा आदि में सदैव सहयोग प्रदान करते थे।
9. आपकी पुत्रवधू श्रीमती इन्द्रा-राजेन्द्र डागा द्वारा जैन समाज के प्रबुद्ध प्रमुख श्रावक-श्राविकाओं का जीवन परिचय ''भारत के चमकते सितारे'' तथा प्रबुद्ध साधु-साध्वियों का जीवन परिचय ''जैन जगत् के दिव्य सितारे'' पुस्तकों में संकलित कर प्रकाशित किया गया, जिसकी समाज व साहित्य जगत् में बहुत सराहना हुई। अब इनके अगले भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित कर रहे हैं।
10. आपके पौत्र श्री दिव्यांशु डागा जैन समाज के प्रतिष्ठित साप्ताहिक समाचार-पत्र ''जैन समाचार मंच'' का संपादन-प्रकाशन कर रहे हैं।

गुरु राम

प्रेषक- पारस डागा

# युगनिर्माता, निर्लिप्त आध्यात्म योगी, जिनशासन प्रद्योतक, रत्नत्रय के महान आराधक, सामाजिक उत्क्रांति, गुणशील प्रेरक, आगमज्ञाता, जन-जन के भाग्य विधाता, उत्कृष्ट क्रिया के धारी, संयम साधना के सजग प्रहरी, नानेश पट्टधर, आराध्यदेव आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बेले-बेले के तपस्वी, बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय-प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में अनन्य चातुर्मास में धर्म-ध्यान के ठाठ

## ज्ञान और क्रिया के संगम जिनशासन का तेज सितारा, कलयुग में भी रामचरण में सत्युग का है सदा नजारा

**चोरड़िया भवन, पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर।**

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश, बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणाजी म.सा. आदि ठाणा के अनन्य चार्तुमास में धर्मप्रेमी जनता परम आत्मीय अलौकिक शांति का अनुभव कर रही है। सभी संप्रदाय के लोग दिव्य महापुरुषों के पावन दर्शन सेवा कर जीवन धन्य बना रहे हैं।

कोरोना महामारी के कारण सरकारी नियमों का पालन करते हुए धर्म आराधना निरन्तर चल रही है। प्रतिदिन आचार्य भगवन् दशा श्रुतस्कन्ध के माध्यम से जिनवाणी का रसपान करा रहे हैं। वहीं उपाध्याय-प्रवर दोपहर में ठाणांग सूत्र का मार्मिक विवेचन फरमा रहे हैं। श्री गगनमुनिजी म.सा. लघुदंडक, गति आगति, तत्त्वज्ञान का बोध करा रहे हैं। श्री सौरभमुनिजी म.सा. श्रावक के बारह व्रत की समझाइश देकर आदर्श श्रावक बना रहे हैं।

महान तपोपूत आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय भगवन् की असीम कृपा से श्री विदेहमुनिजी म.सा. के 31 उपवास, श्री गगनमुनिजी म.सा. के 18 उपवास, श्री किशोर मुनिजी म.सा. के 8 उपवास, श्री मुदितमुनिजी म.सा. के 8 उपवास, साध्वी श्री सुरक्तिश्रीजी म.सा. के 30 उपवास, साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा. के 9 उपवास, साध्वी श्री सुपरश्रीजी म.सा. के 9 उपवास, साध्वी श्री त्रियता श्रीजी म.सा. के 9 उपवास, साध्वी श्री पूर्णिमा श्रीजी म.सा. के 8 उपवास, साध्वी श्री सुसमृद्धि श्रीजी म.सा. के 8 उपवास, साध्वी श्री सुनवनिधि म.सा. के 8 उपवास, साध्वी श्री जयामिश्रीजी म.सा. के 31 आयंबिल तप सानन्द संपन्न हो चुके हैं। श्री रत्नेशमुनिजी म.सा. के 12 उपवास, साध्वी श्री चिरागश्रीजी म.सा. के 17 उपवास, साध्वी श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. के निरन्तर 51 नीवीं, साध्वी श्री जयामि जी म.सा. के आठ उपवास के साथ आगे बढ़ रहे हैं। कई चारित्रात्माओं के एकान्तर, उपवास निरन्तर चल रहे हैं। सावन-भादो एकांतर उपवास रीनाजी पटवा, उर्मिलाजी कवाड़, किरणजी दुग्गड़ आदि कई लोगों ने किया। चार्तुमास प्रारम्भ से ही एकासना, आयम्बिल, उपवास, तेले का क्रम निरन्तर जारी है। कई भाई-बहन लगातार एकासना, बियासना, सामायिक, संवर निरन्तर कर रहे हैं। आचार्य भगवन् के मुखारबिन्द से आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान श्री पुष्पेन्द्र-प्रतिभादेवी, निम्बाहेड़ा ने ग्रहण किये। महान् तपोपूत आचार्य भगवन् की कृपा से श्रीमती लता अभयजी लोढ़ा, मदुरान्तकम् के 71 उपवास, श्री आशीष दीपचन्द लोढ़ा के 31 उपवास, कुमारी गुड़िया छाजेड़, कुमारी श्रद्धा छाजेड़ के मासखमण तप, कान्तादेवी प्रदीपजी सिंगी, अजमेर के मासखमण तप, श्री किशनमल लोढ़ा के 32 उपवास, श्रीमती शालिनी शैलेन्द्रजी लोढ़ा, चाड़ी के 15 उपवास सम्पन्न हो चुके हैं। कई गुप्त तपस्याएँ जारी हैं।

साप्ताहिक शनिवार-रविवार शिविर के अन्तर्गत श्रावक वर्ग को महासती श्री जागृतिश्रीजी म.सा. ने अपने दिव्य प्रेरणा में फरमाया कि सुख हमारे

गुरु राम

विचारों में रहा हुआ है। किसी भी वस्तु या वातावरण के प्रभाव से व्यक्ति सुखी-दुःखी नहीं होता है। सुख विचारों व तृष्ति में रहती है। सोच हमेशा ऊँची रखें। मैं अनन्त शक्ति सम्पन्न हूँ। मैं सब कुछ कर सकता हूँ। साध्वीश्रीजी ने प्रशंसा व निन्दा में समभाव रखने की प्रेरणा दी। महिलाओं, बालिकाओं को धर्म क्रिया को शुद्ध विधि का सुन्दर विवेचन करते हुए महासती श्री मंजुलाश्री म.सा., साध्वी श्री सुसारिकाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि शुद्ध विधि नहीं करेंगे तो हमारा मन धर्म क्रिया में नहीं लगेगा। शुद्ध विधि मोक्ष की ओर ले जाने वाली है। 'लोच में क्या सोच' कार्यक्रम निरंतर चल रहा है। दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी है। अनन्य चार्तुमास को सफल बनाने में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय महामंत्रीजी, श्री अ.भा.सा. समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय महामंत्रीजी सहित विभिन्न अंचलों के धर्मप्रेमी श्रद्धालु व युवा वर्ग अपनी निष्काम सेवा प्रदान कर रहे हैं। धर्म ज्ञान का सुन्दर वातावरण यहां बना हुआ है। आध्यात्म आनन्द का अखुट खजाना प्राप्त कर जनता आत्मविभोर हो रही है।

प्रेषक-महेश नाहटा

## आत्मार्थी अद्भुत साधिका श्री कंचनश्रीजी म.सा. को भावांजली

**चौरड़िया भवन, पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर।**

युगनिर्माता निर्लिप्त आध्यात्म योगी, विश्ववंदनीय आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री कचंनश्रीजी म.सा. का दुर्ग में संथारापूर्वक देवलोकगमन होने पर उन्हें श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की गयी। इस अवसर पर परमप्रतापी आराध्यदेव आचार्य भगवन् ने शांत-प्रशांत मुद्रा में चतुर्विध संघ के मध्य फरमाया कि साध्वीश्रीजी ने पिछली अवस्था में संयम लेकर अपनी भावनाओं को साकार किया और जीवन का मकरन्द हासिल कर लिया वे सरल स्वभावी व विनय, सेवा की साक्षात् मूर्ति थी। गौरव की बात यह है कि पूर्व सजगता के साथ अंतिम समय में संथारा ग्रहण कर अपने तीनों मनोरथ को पूर्ण किया। वे अप्रमत्तता की अद्भुत साधिका थी। अंतिम क्षणों में भी उनके विचार थे कि कोई मेरे साथ जाने वाला नहीं है। सिर्फ धर्म का ही मुझे सहारा है, संथारा लेकर जाना है। धन्य वो साधिका जो पूर्व में एक पुत्री और पुत्रवधु के रूप में देशलहरा व बैद परिवार को अपने उत्तम गुणों से सुरभित किया। इतने बड़े परिवार को छोड़कर स्वयं दीक्षित होकर वीरता का परिचय देकर वीर के मार्ग पर वीरता पूर्वक चलकर पार किया इतने बड़े परिवार में देरानी, जेठानी सब साथ में रहते थे पर कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं हुआ। जीजीबाई के नाम से वे प्रसिद्ध हुई।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने भाव उद्गार में कहा कि भरे-पूरे बैद परिवार के ममत्व को, सुख-सुविधा को छोड़कर संयम ग्रहण करना एवं जीवन का निचोड़ संथारा ग्रहण करना और अपने लक्ष्य को पाकर महान् आत्मार्थी साधिका कंचनश्रीजी म.सा. ने उदाहरण प्रस्तुत किया है। वे कर्म और धर्म में शूरवीर थी। साध्वीश्रीजी ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण किये और सबके लिए प्रेरणास्रोत बन गयी। पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीजी, समता युवा संघ, जोधपुर के अध्यक्षजी ने दीक्षार्थी लक्ष्मण गुलेछा का आत्मीय स्वागत किया। युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश के पावन सानिन्ध्य में **19 नवम्बर** को दीक्षा लेने वाले मुमुक्षु भाई लक्ष्मण गौतमचन्दजी गुलेछा कनोड़िया बेलवा का बालेसर, दुर्गावता, सेतरावा, चाड़ी, पांचू आदि स्थानों में श्रीसंघों ने आत्मीय स्वागत-बहुमान किया। चारित्रात्माओं के पावन दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। जैन-जैनेतर सभी मुमुक्षु के स्वागत के लिए उमड़ पड़े। मुमुक्षु लक्ष्मण गुलेछा ने दीक्षा के अवसर पर प्रत्यक्ष आशीर्वाद प्रदान करने की अपील की।

प्रेषक-महेश नाहटा

गुरु राम

## अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री रामेश के मुखारबिन्द से मुमुक्षु अनिता कुम्मट की जैन भागवती दीक्षा 5 दिसम्बर को

**समता की ओर बढ़ रहे हैं चरण, धन्य-धन्य कह रहा है सबका मन।**

**चौरड़िया भवन, पावटा 'बी' रोड़, जोधुपर।**

''संयम उसी को मिले, पुण्य जिसके खिले''

युगनिर्माता, युगपुरुष, अनुपम दीक्षा प्रदाता, जिनशासन प्रद्योतक, रत्नत्रय के महान् आराधक, नानेश पट्टधर, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक आत्माएँ श्रीचरणों में समर्पित हो रही हैं। इसी कड़ी में 5 दिसम्बर 2020 को आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से 31 वर्षीय मुमुक्षु कुमारी अनिता कुम्मट सुपुत्री श्री शांतिलालजी विजयदेवी कुम्मट, संबलपुर (छत्तीसगढ़) की जैन भागवती दीक्षा होनी संभावित है। परिजनों ने सहर्ष स्वीकृति पत्र श्रीचरणों में समर्पित किया है। जोधपुर एवं छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में खुशी की लहर व्याप्त हो गई है। मुमुक्षु बहन नोखा निवासी स्मृतिशेष श्री रावतमलजी हस्तीदेवी कुम्मट की पौत्री है। लगभग 6 वर्ष से वैराग्यकाल है। आरुग्गबोहिलाभं में महापुरुषों व चारित्रात्माओं के पावन सानिन्ध्य में रहकर अपने जीवन व प्रतिभा को आपने आगे बढ़ाया है। आपकी संसारपक्षीय बहिन साध्वी श्री सुप्रियाश्रीजी म.सा. रामेश शासन की शोभा बढ़ा रही हैं।

प्रेषक-महेश नाहटा

## अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री रामेश के मुखारविन्द से नवदीक्षिता साध्वी श्री शीलसुगन्धाजी म.सा. की बड़ी दीक्षा सम्पन्न

**चौरड़िया भवन, पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर।**

संयम जीवन ही तेरा शृंगार हो,
गुरु आज्ञा ही प्राणों का आधार हो।

युगनिर्माता, अनुपम दीक्षा प्रदाता, जन-जन के भाग्य विधाता, वचन सिद्धी के दाता, सामाजिक उत्क्रांति के प्रदाता, रत्नत्रय के महान् आराधक, नानेश पट्टधर, पतित पावन आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से नवदीक्षिता साध्वी श्री शीलसुगन्धाजी म.सा. की बड़ी दीक्षा धर्मोल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। प्रारंभ में बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय-प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने चौदह पूर्वों का सार महामंत्र नवकार का सामूहिक जाप कराया। तत्पश्चात् परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि दो तरह के मार्ग दृश्य-अदृश्य, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष होता है। साधना में अप्रत्यक्ष की ओर गति करना होता है। जो प्रत्यक्ष नहीं है उसे प्रत्यक्ष करना होता है। अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष करना दुरुह है, पर जो ठान ले उसके लिए कठिन नहीं है। वीरता का यह पथ जिसमें साधक अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष करने के लिए प्रयत्नशील होता है, वहाँ अप्रत्यक्ष मार्ग पर चलना बहुत दुर्गम मार्ग है। खजूर के पेड़ पर चढ़ना आसान नहीं, पर जो चढ़ जाता है वह सुखानुभव करता है। वैसे ही साधना में स्वयं से ही स्वयं का संघर्ष होता है। कभी हमारी वृतियों को हम मुट्ठी में बंद कर लेते हैं। यह मार्ग बड़ी सावधानी से चलने का है। साधना के मार्ग में हर कदम पर कठिनाई और चुनौती है। कठिनाई से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते रहें। मन को कमजोर न होने दें। जय-पराजय हमारे भीतर है। अपने मन से हिम्मत बनाये रखें। हमें कोई परेशान करने वाला नहीं है। हमारा मन ही हमें परेशान करता है। हमारी ऐसी कोई भी प्रवृत्ति होनी ही नहीं चाहिए, जिससे किसी को कष्ट पहुँचे। संयम जीवन में धैर्य, सहनशीलता, स्थिरता हमारे भीतर कितनी बढ़ी है, चिन्तन करें। आज आचार्य भगवन् ने आगे फरमाया कि सामायिक चारित्र के बाद आज छेदोपस्थापनीय चारित्र का प्रसंग है। पांच महाव्रतों में प्रविष्ट होने का पावन प्रसंग है। पहले अहिंसा महाव्रत में किसी जीव की न हिंसा करना, न करवाना, न अनुमोदना करना। प्रत्येक आत्मा के साथ मैत्रीभाव बढ़े। मैत्रीभाव का जितना विकास होगा अहिंसा उतनी ही पल्लवित होगी, फिर शत्रुता

गुरु राम

का भाव किसी के साथ नहीं रहेगा। **दूसरा सत्य महाव्रत में अस्तित्व का बोझ मैं हूँ'' बहुत बड़ी शक्ति है।** तीर्थंकर व हमारी आत्मा में कोई अंतर नहीं है। बाहर के जितने भी संयोग है। वह वियोग में बदलते हैं। एक मात्र आत्मा शाश्वत है। आत्मविश्वास साधना से होता है। तीसरे अचौर्य महाव्रत में बिना आज्ञा के कोई चीज ग्रहण नहीं करना। चौथे ब्रह्मचर्य महाव्रत में सदैव आत्मरमण करना। पाँचवें अपरिग्रह महाव्रत में ''छद्म न मम्'' मेरा कुछ भी नहीं है। किसी से कोई अपेक्षा नहीं करना।

साधु जीवन में निर्लिप्त भाव से साधना करना होता है। सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। सेवा के लिए प्यारी जिन्दगी भी खप जाये तो कम है। अपने समय को साधने वाला वीतरागता को प्राप्त कर लेता है।

आचार्य भगवन् ने बड़ी दीक्षा विधि दोपहर 2 बजकर 5 मिनट पर प्रारंभ की और दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षिता साध्वीश्रीजी को पाँच महाव्रतों व छठा रात्रिभोजन त्याग में आरूढ कराया। केसरिया-केसरिया गीतों से माहौल गूंज उठा। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणाजी म.सा. ने अपने भाव उद्गार में फरमाया कि इन्द्रीय शक्ति की बजाय आत्मशक्ति में अपूर्व आनंद है। किसी भी जीव को कष्ट देने की भावना नहीं होनी चाहिए। आचार्य श्री रामेश दया व करूणा के सागर हैं, जो निरंतर भव्य आत्माओं को भवपार लगा रहे हैं। इस शासन में छोटी-छोटी सतियाँ भी सेवा की मिशाल है। आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने एक सुन्दर गीत **''आ चलके तुझे गुरु ले के चलें एक ऐसे गगन के तले, जहाँ जन्म ना हो, मृत्यु भी ना हो, बस ज्योत में ज्योत मिले।** प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् को अतिशयधारी बताया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। साध्वी मंडल ने बधाई गीत, गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किये। प्रेषक-महेश नाहटा

**चौरड़िया भवन, पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर।**

## 19 नवम्बर को जोधपुर में जैन भागवती दीक्षा

**संसार में मगजमारी है, संयम में समझदारी है।**

युगनिर्माता, महान् आध्यात्म योगी, जिनशासन प्रद्योतक, संयम साधना के सजग प्रहरी, विश्ववंदनीय, आराध्यदेव, आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से 19 नवम्बर 2020 ज्ञान पंचमी को मुमुक्षु बहन सुश्री दीप्ति धाड़ीवाल (उम्र 24 वर्ष) सुपुत्री श्री अशोकजी सुवर्णाजी धाड़ीवाल सुपौत्री श्री मोहनलालजी लीलाबाई धाड़ीवाल लासन गांव (महाराष्ट्र) की जैन भागवती दीक्षा जोधपुर में होनी संभावित है। दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में सहर्ष स्वीकृति प्रस्तुत किया। पूर्व में 19 नवम्बर को ही दीक्षा हेतु मुमुक्षु भाई श्री लक्ष्मणजी गुलेछा, कनोड़िया व मुमुक्षु बहन सलोनी कटारिया, रतलाम की दीक्षा हेतु स्वीकृति हो चुकी है। सूर्यनगरी में दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है। प्रेषक-महेश नाहटा

●●●

## सूचना

समस्त सुधी पाठकों से निवेदन है कि यदि आपके पास वर्ष 2018 से पूर्व की श्रमणोपासक संरक्षित हो और आपके लिए अनुपयोगी हो तो कृपया उन्हें संघ के केन्द्रीय कार्यालय श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर (राज.) को भिजवाने का कष्ट करें। इस संबंध में किसी भी प्रकार की असुविधा हेतु मो. 9799061990 पर सम्पर्क करने का कष्ट करें।

गुरु राम

## संक्षिप्त सांसारिक परिचय

# मुमुक्षु लक्ष्मण गुलेच्छा, कनोड़िया (जोधपुर)

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | लक्ष्मण गुलेच्छा |
| उम्र | : | 34 वर्ष (1.08.1986) |
| व्यवहारिक शिक्षा | : | 10वीं |
| धार्मिक अध्ययन | : | श्रमण प्रतिक्रमण, दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, 25 बोल का थोकड़ा आदि कंठस्थ |

## पारिवारिक पृष्ठभूमि

श्रीमती बिदामीदेवी-स्व. श्री जसराजी गुलेच्छा (दादीजी-दादाजी), श्रीमती शांतिदेवी-श्री गौतमचंदजी गुलेच्छा (माताजी-पिताजी), श्रीमती मूलीदेवी-स्व. श्री शेषमलजी, श्रीमती धापूदेवी-श्री मेघराजजी, श्रीमती अंसादेवी-श्री किस्तूरचंदजी, श्रीमती मोनादेवी-श्री पुखराजजी, श्रीमती पूजादेवी-श्री अशोककुमारजी, श्रीमती पुष्पादेवी- श्री धनराजी गुलेच्छा (चाचीजी-चाचाजी), श्रीमती सुधादेवी-श्री मोतीलालजी, श्रीमती ज्योतिदेवी-श्री महावीरचंदजी (भाभी-भाई), श्री मगराजजी, प्रकाशचंदजी, खींवराजजी गुलेच्छा (भाई), श्रीमती स्व. भंवरीदेवी-स्व. श्री भंवरलालजी कोचर, श्रीमती मीमोदेवी-श्री पारसमलजी सा. ढेलड़िया, श्रीमती मांगीदेवी-श्री सोनराजी सा. ढेलड़िया, श्रीमती सिरूदेवी- श्री कंवरलालजी सा. नाहटा, श्रीमती संतोषदेवी-श्री रावलचंदजी रतन बोथरा (बूआजी-फूफाजी), ममता, पूजा, जेठी, वर्षा, अदिति, निकिता (बहिन), ऋषभ, दक्ष (भतीजा), मोक्षा (भतीजी), नीलम, विकास, सिद्धार्थ, रौनक, सूर्या, हिमांशु, नैतिक (चचेरे भाई)।

**ननिहाल पक्ष:** श्रीमती स्व. रूकमादेवी-स्व. श्री सूरजमलजी ढेलड़िया, श्रीमती मुन्नीदेवी-श्री रेखचंदजी ढेलड़िया, श्रीमती धापूदेवी-श्री अगरचंदजी ढेलड़िया (नानीजी-नानाजी), श्रीमती हरियोदेवी-श्री भगवानचंदजी ढेलड़िया, श्रीमती संतोषदेवी-श्री जोगराजजी ढेलड़िया, श्रीमती वालीदेवी-श्री गौतमचंदजी, श्रीमती पदमादेवी-श्री मगराजजी, श्रीमती बेबीदेवी-श्री जेठमलजी दुग्गड़, श्रीमती शांतिदेवी-श्री कांतिलालजी दुग्गड़, श्रीमती लीलादेवी-गौतमचंदजी दुग्गड़, श्रीमती पदमादेवी-श्री प्रकाशचंदजी दुग्गड़ (मामाजी-मामीजी)

### ननिहाल पक्ष से दीक्षित

श्री निश्चलमुनिजी म.सा.

श्री मदनमुनिजी म.सा. (संसारपक्षीय मामाजी), श्री सुबाहुमुनिजी म.सा. (संसारपक्षीय भाई),
साध्वी श्री मतिज्ञाश्री जी म.सा. (संसारपक्षीय मासीजी), साध्वी श्री चंद्रिकाश्री जी म.सा.,
साध्वी श्री सुहानीश्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहिन)



सत्ता प्राप्ति के बाद सावधानी की जरूरत है।

## संक्षिप्त सांसारिक परिचय

# मुमुक्षु सुश्री दिप्ती धाड़ीवाल, लासगांव (महाराष्ट्र)

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | सुश्री दिप्ती धाड़ीवाल |
| उम्र | : | 24 वर्ष |
| व्य. शिक्षण | : | बी.बी.ए. डिप्लोमा इन आई.टी. |
| वैराग्यकाल | : | लगभग डेढ़ साल |
| पदयात्रा | : | लगभग 470 कि.मी. |
| धार्मिक अध्ययन | : | पुच्छिसुणं, श्री दशवैकालिक सूत्र, के 1-4 अध्ययन, श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1, 11, 31वां अध्ययन, श्री आवश्यक सूत्र, **थोकड़े-** 25 बोल, 67 बोल, लघुदण्डक, गति-अगति, 102 बोल का बासठिया, जीवधड़ा, भिक्षा के 110 बोल, 5 समिति, 3 गुप्ति, 33 बोल का थोकड़ा, आत्मरंभी, परारंभी आदि 50 थोकड़े, भूषण का कोर्स, प्रज्ञापना के कुछ थोकड़े, भगवती सूत्र के कुछ थोकड़े। |
| अन्य अध्ययन | : | भक्तामर स्तोत्र, मेरी भावना, 18000 सिला अनुव्रत |
| धार्मिक परीक्षा | : | न्यू कर्मग्रंथ भाग-1, 50 थोकड़े |
| धार्मिक अध्ययन | : | आरुग्गबोहिलाभं में लगभग 1 महीना अध्ययन, चिंतन व मनन |

## पारिवारिक पृष्ठभूमि

श्रीमती लीलाबाई-श्री मोहनलालजी धाड़ीवाल, श्रीमती कलाबाई-स्व. श्री गणेशमलजी धाड़ीवाल, श्रीमती प्यारीबाई-श्री चंदनमलजी धाड़ीवाल (दादीजी-दादाजी), श्रीमती सुनिताजी-श्री सुभाषचंदजी धाड़ीवाल, श्रीमती पुष्पाजी-श्री नरेन्द्रजी धाड़ीवाल (बड़े मम्मी-बड़े पापा), श्रीमती सुवर्णाजी-श्री अशोकजी धाड़ीवाल (माता-पिता), श्रीमती भारतीजी-श्री मनोजजी धाड़ीवाल (चाची-चाचा), श्रीमती विजयाजी-श्री अजीतजी चोरड़िया, श्रीमती शोभाजी-स्व. श्री सुनीलजी मूथा (भुआ-फूफाजी), श्रीमती पूजाजी-श्री भूषणजी चोरड़िया (बहन-जीजाजी), कु. ऋषभ अशोकजी धाड़ीवाल (भाई), स्वप्निल, कल्पेश, रूपेश, उत्सव, सोनल, शीतल, स्नेहलता, धनश्री, ऋतुजा, कोमल, भूमि, भाग्यश्री (भाई-बहनें), हर्ष, रूही (भांजा-भांजी), **ननिहाल पक्ष -** स्व. प्यारीबाई-स्व. माणकचंदजी दुग्गड़ (नानीजी-नानाजी), श्रीमती कमलाबाई-श्री कांतिलालजी दुग्गड़, स्व. निर्मलाबाई-श्री प्रकाशचंदजी दुग्गड़, श्रीमती मीनाबाई-श्री राजेन्द्रजी दुग्गड़, स्व. ताराबाई-श्री दिलीपजी दुग्गड़ (मामीजी-मामाजी), श्रीमती लताबाई-श्री ओंकारदासजी बोरा, श्रीमती पुष्पाबाई-स्व. श्री मोतीलालजी संचेती, श्रीमती मधुबाला-श्री पारसजी कोठारी (मौसीजी-मौसाजी), किरण, निर्मल, जितेन्द्र, राजेश, महेन्द्र, आनंद, तेजस, रोशन, महावीर, धीरज, कल्पना, जया, अर्चना, सीमा, स्विटी, वैशाली, शर्मिला, दीपाली, पुनम, हर्षाली, कोमल, सारिका (भाई-बहन)।



यदि कोई दुनिया में सुखी है तो वह आत्म-संयम के कारण ही है।

## संक्षिप्त सांसारिक परिचय

# मुमुक्षु सलोनी कटारिया, रतलाम (म.प्र.)

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | सुश्री सलोनी कटारिया |
| जन्म दिनांक | : | 7 जनवरी 1998 |
| जन्म स्थान | : | रतलाम (म.प्र.) |
| व्यावहारिक शिक्षा | : | बी.कॉम (प्रथम वर्ष) |
| धार्मिक अध्ययन | : | **आगम** – पुच्छिंसुण, श्रीमद्दशवैकालिक सूत्र. 1,4,9वां अध्ययन, श्रीमद्उत्तराध्ययन सूत्र–1–4, 6–11, 31वां अध्ययन<br>**थोकड़े** – तत्त्व का ताला भाग–1 लगभग, जम्बूद्वीप, संस्कृत प्रथम दिशा, दिसाणुवाय, 7 नय (संक्षेप में), जैन पंचाग (संक्षेप में), भक्तामरजी, श्रीमद्भगवतीसूत्र के लगभग 15 थोकड़े, शुक्ल का अधिकार, ध्यान का स्वरूप, समवशरण, श्लाघनीय पुरुषों का वर्णन, कर्म स्वरूप, विपाक, बंध–उदय–उदीरणा का थोकड़ा, पुद्गल परावर्तन |
| लाभं | : | 5 माह लगभग |
| धार्मिक परीक्षा | : | जैन सिद्धांत भूषण, कोविद (2,3,4), कर्म ग्रन्थ न्यू 1,2 |
| तपस्या | : | तेला, 8 उपवास, 9 उपवास, आयम्बिल की अठाई, एकासन का मासखमण |
| वैराग्यकाल | : | लगभग 3 वर्ष |
| पदयात्रा | : | लगभग 600 किमी. |

## पारिवारिक पृष्ठभूमि

स्व. श्रीमती मांगूबाई–स्व. श्री रतनलालजी कटारिया (पड़दादीजी–पड़दादाजी), श्रीमती सुशीलाबाई–स्व. श्री शांतिलालजी कटारिया (दादीजी–दादाजी), श्रीमती अनिता–श्री सुनीलजी कटायिा (माता–पिता), साक्षी, यश, (भाई–बहिन), श्रीमती सुनिता–श्री ललितजी मेहता (बूआजी–फूफाजी), हर्ष (बिट्टू), मेहता (भाई) **ननिहाल पक्ष :–** श्रीमती सुशीलाबाई–स्व. श्री राजमलजी सकलेचा (नानीजी–नानाजी), श्रीमती मंजू–स्व. श्री दिनेशजी सकलेचा (मामी–मामा), शासनम, खुशी (भाई–बहिन), श्रीमती पिंकी–श्री सुनीलजी पारलेचा, श्रीमती वर्षा–श्री अमितजी चौरड़िया, श्रीमती मोनिका–श्री अनिलजी मुणत, अवि, मयंक, जैनम, यश, अर्पिता (भाई–बहिन)

## संक्षिप्त सांसारिक परिचय

### मुमुक्षु सुश्री निधि जयप्रकाशजी कोटड़िया, नंदुरबार (महाराष्ट्र)

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | मुमुक्षु सुश्री निधि जयप्रकाशजी कोटड़िया |
| जन्म | : | 23 फरवरी, 2003 |
| जन्मस्थल | : | नंदुरबार |
| व्यावहारिक शिक्षा | : | 10वीं |
| वैराग्यकाल | : | लगभग 21 माह |
| धार्मिक शिक्षा | : | श्री पुच्छिसुणं, श्री दशवैकालिक सूत्र, श्री उत्तराध्ययन सूत्र (1,9,10,11,31 अध्ययन), थोकड़े- 25 बोल, लघुदण्डक, गति-अगति आदि। |
| पदयात्रा | : | लगभग 1000 कि.मी. |
| धार्मिक परीक्षा | : | जैन धार्मिक बोर्ड परीक्षा की भूषण |
| धार्मिक अनुभव | : | आरूग्ग बोहिलाभं में लगभग 9 महिने अध्ययन एवं चिंतन-मनन किया, आत्मस्वरूप एवं ज्ञान-क्रिया का। |
| वैराग्य का कारण | : | आचार्य भगवन् के रतलाम चातुर्मास के दौरान प्रवचन श्रवण एवं संत-सतियांजी म.सा. का समागम |

## पारिवारिक पृष्ठभूमि

स्व. श्री मीसरीलालजी-स्व. जतनबाईजी कोटड़िया (परदादाजी-परदादीजी), स्व. श्री देवीचंदजी-श्रीमती पुखीबाईजी कोटड़िया, श्री नथमलजी-सौ. विरदीबाईजी कोटड़िया, श्री खेतमलजी-सौ. श्रीबाईजी कोटड़िया (दादाजी-दादीजी), श्री रामसुंदरजी-स्व. पुष्पाबाईजी कोटड़िया, श्री श्यामसुंदरजी-सौ. आशाबाईजी कोटड़िया, श्री दिनेशजी-सौ. जयश्रीबाईजी कोटड़िया, श्री जयचंदजी-सौ. नयनाबाईजी कोटड़िया, श्री विजयकुमारजी-सौ. राखीबाईजी कोटड़िया (बड़े पिताजी-बड़े माताजी), श्री जयप्रकाशजी-सौ. संगीताबाईजी कोटड़िया (पिताजी-माताजी), श्री कमलजी-सौ. मंजुबाईजी कोटड़िया, श्री कैलाशजी-सौ. मोनाबाईजी कोटड़िया, श्री रमेशजी-सौ. भावनाबाईजी कोटड़िया (काकाजी-काकीजी), श्री जसराजजी-सौ. चंद्राबाईजी बोथरा, श्री मुरलीधरजी-सौ. कमलाबाईजी बोथरा, श्री पुनमचंदजी-स्व. गीताबाईजी (सौ. मंजुबाईजी) बोथरा, श्री रमेशचंद्रजी-सौ. निर्मलाबाईजी बोहरा, श्री नितिनकुमारजी-सौ. जयवंतीबाईजी बरड़िया, श्री प्रफुल्लकुमारजी-सौ. पन्नाजी वैद (फूफाजी-बुआजी), श्री अश्विनकुमारजी-सौ. खुशबुजी भंडारी, श्री रिषभकुमारजी-सौ. चंचलजी बरड़िया, श्री सागरकुमारजी-सौ. सेजलजी पारख (जीजाजी-जीजी), श्री महावीरजी-सौ. करिश्माजी कोटड़िया (भाई-भाभी), चंदन, दर्शना, पदम, पारस, नमन, यश, आदेश, नीरज, झलक, श्रीपाल, नयन, लोकेश, मोक्षा, केतन, झील (भाई-बहिन), सम्यक, दार्शिक, रूही (भानजा-भानजी) **ननिहाल पक्ष :-** श्री चंदनमलजी-स्व. मांगूबाईजी बोथरा (परनाना-परनानीजी), श्री मंगलचंदजी-सौ. चंचलबाईजी बोथरा, श्री पारसमलजी-स्व. आशाबाईजी बोथरा, श्री प्रकाशचंदजी-सौ. शोभाबाईजी बोथरा (नानाजी-नानीजी), श्री निलेशजी-सौ. वीणाजी बोथरा, श्री मुकेशजी-सौ. सोनलजी बोथरा, श्री अजयजी- सौ. स्नेहलजी बोथरा, श्री कल्पेशजी-सौ. वैशालीजी बोथरा, श्री अभिषेकजी-सौ. सुष्मिताजी बोथरा (मामाजी-मामीजी), श्री विनयजी-सौ. प्रीतिजी छाजेड़, श्री निखिलजी-सौ. मेघाजी भटेवरा, श्री नवीनजी-सौ. खुशबुजी कोटड़िया, श्री भावेशजी-सौ. शिल्पाजी कुम्मट (मासाजी-मासीजी), पुनीत, पूजा, समीर, पलक, मोक्षा, दिव्यम्, खुश, नीया, तक्षील, नीव (भाई-बहिन)

# संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां


**प्रकाशक**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

**प्रधान कार्यालय**

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग
नोखा रोड़, गंगाशहर (बीकानेर)-334001
फोन - 0151 2270261, 262, 359

**अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक**

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

**सह संपादिका**

श्रीमती काजल संजय जैन


**श्रमणोपासक सदस्यता**

| | | |
|---|---|---|
| आजीवन (अर्द्ध मूल्य) | (केवल भारत में) | 500/- |
| | (विदेश हेतु) | 10,000/- |
| वार्षिक | (केवल भारत में) | 60/- |
| | (विदेश हेतु) | 1,000/- |
| वाचनालय वार्षिक | (केवल भारत में) | 50/- |
| प्रस्तुत अंक मूल्य | | 10/- |

**संघ सदस्यता**

| | |
|---|---|
| साधारण सदस्यता | 500/- |
| आजीवन सदस्यता | 5,000/- |

**साहित्य सदस्यता**

| | | |
|---|---|---|
| आजीवन | (केवल भारत में) | 1,500/- |

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

## बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

SBI Bank - Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. - 7073311108
E-mail : absjsacc@gmail.com

## व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्रमणोपासक | : | 9799061990 | : news@sadhumargi.com |
| साहित्य | : | 8209090748 | : abslalitjain@gmail.com |
| श्रुत आराधक | : | 9269599909 | : absjskhushi28@gmail.com |
| धार्मिक परीक्षा | : | 7231933008 | : dili_4_u@yahoo.com |
| आगम भक्ति | : | 7976519363 | : aagambhakti07@gmail.com |
| समता युवा संघ | : | 7073238777 | : samtabhawan21@gmail.com |
| महिला समिति | : | 7231033008 | : ms@sadhumargi.com |
| परिवारांजलि | : | 7231033008 | : anjali@sadhumargi.com |
| विहार | : | 8505053113 | : sadhumargivihar@gmail.com |
| पाठशाला | : | 9982990507 | : pathshala@sadhumargi.com |
| शिविर | : | 7231833008 | : asndkudaipur2018@gmail.com |

**-: सूचना :-**

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

## आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

Regd. with RNI New Delhi Under No.7387/63
Regd. No. BIKANER/022/2018-20 Office at Post RMS, Bikaner.
वर्ष : 58 ■ अंक : 11-13 ■ 10-11 अक्टूबर, 2020 ■ मूल्य :10/-

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779, E-mail: mkt@shandgroup.com

Shri Shanti Lal Shand

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
M.R.O. Technology
LUCALOR FRANCE
FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,400

यदि आपको श्रमणोपासक पत्रिका बराबर नहीं मिल रही है या आपके पते में कोई परिवर्तन हुआ है तो शीघ्र ही कार्यालय को सूचित करें।

प्रेषक :**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ**
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर – 334401 (राज.)
फोन : 0151- 2270261, 2270262, 2270359
e-mail : news@sadhumargi.com Website : www.sadhumargi.com

सेवामें,